असतो मा सद्गमय .
तमसो मा ज्योतिर्गमय..
मृत्योर्मा अमृतं गमय...

प्रेरणा

"सरकारी स्कूल कैसे बने असर कारी"

संपादन एवं संकलन
भोजराम पटेल 'व्याख्याता' / प्रभारी प्राचार्य
शास. उच्च. माध्य. विद्यालय तारापुर, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

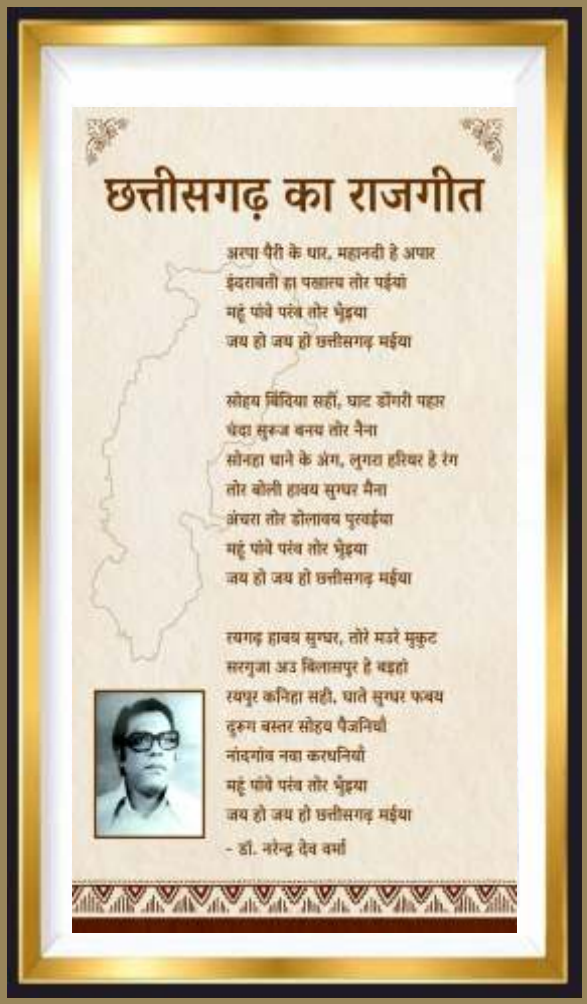

सम्पादक परिवार परिचय

भोजराम पटेल
व्याख्याता / प्र. प्राचार्य

श्रीमती धनमती पटेल
गृहलक्ष्मी

कृपासिंधु पटेल
लेफ्टीनेंट भारतीय नौसेना

मनीष पटेल
सब लेफ्टीनेंट भारतीय नौसेना

निवास : कोतरा रोड, सावित्री नगर, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)
मूल निवास : ग्राम खिचरी, वि.खं. बरमकेला, जिला-सारंगढ़ बिलाईगढ़ (छ.ग.)

प्रेरणा

"सरकारी स्कूल कैसे बने असर कारी"

शासकीय विद्यालयों में शिक्षकों के लिए
5 सितंबर 2023
शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रकाशित
प्रेरणा ग्रंथ

✿ मुख्य संपादक ✿
भोजराम पटेल
व्याख्याता / प्रभारी प्राचार्य
शा. उ. मा. वि. तारापुर,
जिला-रायगढ़ (छ.ग.)
मो. : 7000121613

✿ ग्राफिक्स ✿
अजय श्रीवास्तव

✿ मार्गदर्शन ✿
माननीय तारन प्रकाश सिन्हा
कलेक्टर-रायगढ़

माननीय बी.बाखला
जिला शिक्षा अधिकारी, रायगढ़

माननीय बी.के. राजपूत
सहायक आयुक्त आ.जा.क.

ग्रंथ में प्रकाशित सामग्री के तथ्यों की पुष्टी का दायित्व संबंधित आलेख प्रस्तुतकर्ता की है। संपादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय		पृष्ठ
01	शुभकामना संदेश		01 - 08
02	सम्पादकीय		09
03	मैं एक शिक्षक हूं -	भैरवदत्त उपाध्याय	11
04	शिक्षा समाज .... -	आर.पी. आदित्य	13
05	अपनी संस्था को....	भोजराम पटेल	16
06	परिवेश में शिक्षक...	मिनेश कुमार पटेल	19
07	शिक्षाविदों के विचार...	विविध	23
08	राज्य एवं राष्ट्रीय	सच्चिदानंद पटनायक	24
09	स्वयं से परे हटकर	राजीव गुप्ता	25
10	स्कूलों के संसाधन ...	श्रीमती पुष्पांजलि दासे	26
11	संस्था को प्रभावी बनाने	कृष्णा विश्वास	27
12	विद्यार्थियों से अपनत्व	श्रीमती प्रतीक्षा सिंह	29
13	ईश्वर की अनमोल	श्रीमती रश्मि वर्मा	31
14	लिंकन का पत्र	संकलित	32
	खण्ड 2 - हमारे आदर्श प्रेरक विद्यालय		
15	प्रा.शा. केंदवाही बार		33
20	प्रा.शा. खिचरी, बरमकेला		35
16	मा.शा. केराबहार प्रा.शा. लामीखार		37
17	शा.उ.मा.वि. तारापुर, रायगढ़		38
18	शा.उ.मा.वि. रायकेरा, घरघोड़ा		40
19	शा.उ.मा.वि. तरकेला, रायगढ़		42
21	शा.उ.मा.वि. हरदी सारंगढ़		44
	प्रेरक श्रमवीर शिक्षक		
22	परमानंद पटेल, पुसल्दा		45
23	आशीष रंगारी, हरदीझरिया		46
24	अमृतलाल साहू, चोरिया		48
24	श्रीमती लक्ष्मीन पटेल, कोसमनारा		49
25	श्रीमती स्मृति दुबे, अमलेश्वर		51
26	अनुराग तिवारी, कुटरा नवागढ़		53
27	राज्यशिक्षक पुरस्कार परिचय		54
28	हमारी गतिविधियां छायाचित्रों में		56
29	अखबारों में स्कूल शिक्षा		58

यह ग्रंथ शिक्षकों के स्वाभिमान को बढ़ाने वाले दर्शनशास्त्री शिक्षाविद् सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन जी की जन्म जयंती 5 सितंबर 2023 के अवसर पर हार्दिक श्रद्धा के साथ सादर ससम्मान उन शिक्षकों को समर्पित है जिन्होंने अपनी कर्तव्यनिष्ठा एवं श्रम साधना से विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य के निर्माण के लिए स्वयं को अर्पित कर दिया है....

हम गढ़ते हैं इतिहास

हम गढ़ते हैं इतिहास, हाथ में कलम किताब ले भाई।
विद्यादान है पुण्य महान, साथ में सबकी होये भलाई ।।

स्कूल अपनी कर्मभूमि, यहां ज्ञान आलोक फैलाते।
गणित विज्ञान, वाणिज्य कला, बच्चों को सिखलाते।।
प्रेम भाव सब रहें हिलमिल, नहीं करना हमें लड़ाई,
हम गढ़ते हैं इतिहास, हाथ में कलम किताब ले भाई...

स्कूल है विद्या का मंदिर, जहां ज्ञान की होती पूजा।
ज्ञान बिना नहीं मिले जी मुक्ति, और उपाय न दूजा।।
मन के भीतर जोत जले तो, जग उजियार हो जाई,
हम गढ़ते हैं इतिहास, हाथ में कलम किताब ले भाई...

भोजराम पटेल
रचना दिनांक 29.04.2010
आकाशवाणी साहित्य पत्रिका में प्रकाशित काव्यांश

✿ हमारे पथ प्रदर्शक सहयोगी ✿

के.के. स्वर्णकार उपसंचालक शिक्षा, नरेन्द्र चौधरी डी.एम.सी. समग्र शिक्षा रायगढ़, भुवनेश्वर पटेल ए.पी.ओ., आलोक स्वर्णकार ए.पी.ओ., जी.आर. जाटवर वि.ख. शिक्षा अधिकारी रायगढ़, डॉ. सुशील कुमार एक्का कार्यक्रम समन्वयक एन.एस.एस. शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय रायगढ़, प्रो. मनोहर पटेल शास.महा. कुसमुरा, प्रो. भूपेन्द्र कुमार पटेल शास.महा. नवागढ (जांजगीर चाम्पा), सुकदेव प्रसाद मेहर सेवानिवृत्त शिक्षक, विद्याचरण प्रसाद कालो से.नि. प्राचार्य, केतन प्रसाद पटेल से.नि. लेखापाल, सुरेन्द्र कुमार पटेल जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय रायगढ़, रामेश्वर डनसेना हा.से. तारापुर, भरतलाल साहू से.नि. राज्यपाल पुरस्कृत राष्ट्रपति पदक से सम्मानित शिक्षक, नेतराम साहू व्याख्याता तरकेला, समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं शाला परिवार शा.उ.मा.वि. तारापुर, जिला-रायगढ़

ग्रंथ प्रकाशन में पूरी सावधानी व सतर्कता के बावजूर लिपिकीय अथवा टंकण संबंधी त्रुटि के लिए हम पूर्व से ही क्षमाप्रार्थी हैं। सुधि पाठकों से निवेदन है कि लेख संबंधी किसी भी प्रकार के मानवीय त्रुटि को हमें सुझाव देते हुए सुधार की दिशा में प्रेरित करेंगे। हम आपके इस आत्मीयता हेतु कृतज्ञ रहेंगे।

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री

Bhupesh Baghel
CHIEF MINISTER

मंत्रालय, महानदी भवन
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ़
फोन: +91 (771) 2221000, 2221001
ई–मेल : cmcg@nic.in

Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
Atal Nagar, Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001
E-mail : cmcg@nic.in

Do.No. 709 Date 22/08/2023

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि छत्तीसगढ़ के शासकीय स्कूलों को छात्र–छात्राओं के लिए अधिक उपयोगी, लाभप्रद एवं अनुकूल बनाने के लिए 'प्रेरणा' पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में हमने स्कूलों की गुणवत्ता सुधारने हेतु अनेक कदम उठाए हैं। मेरा मानना है कि शाला प्रबंधन, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, छात्रोपयोगी वातावरण निर्माण आदि प्रयासों की सफलता पालकों व शिक्षकों की व्यक्तिगत अभिरूचि पर निर्भर करती है, अतः व्यापक समाज की पहल और एकजुटता की इसमें बड़ी भूमिका है।

प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिए मेरी शुभकामनाएं।

(भूपेश बघेल)

रविन्द्र चौबे
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
स्कूल शिक्षा, संसदीय कार्य
कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा
जैव प्रौद्योगिकी, पशुधन विकास, मछलीपालन,
जल संसाधन एवं आयाकट,
पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक : एम-3/1-5, महानदी भवन,
अटल नगर, नवा रायपुर 492002 (छ.ग.)
फोन : 0771-2510223, 2221223
निवास : सी-4, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)
फोन : 0771-2331020, 2331021
फैक्स : 0771-2445836
ई-मेल : ravindrachoubeycg@gmail.com

क्रमांक 6084 दिनांक 18/08/2023

-: शुभकामना संदेश :-

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि जिला रायगढ़ में शिक्षक, शिक्षा एवं शिक्षार्थी पर केन्द्रित प्रेरणा ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है, जिससे स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन एवं उत्कृष्ट परिणाम की दिशा में शिक्षकों को प्रेरणा मिलने के साथ-साथ स्कूलों की वर्तमान स्थिति का आंकलन कर और भी बेहतर बनाने की दिशा में कार्य करने का अवसर मिलेगा।

यह पुस्तिका स्कूल शिक्षा विभाग के लिए विश्लेषणात्मक ग्रंथ के रूप में पठनीय, संग्रहणीय एवं पथ प्रदर्शन करने वाला बहुउपयोगी साहित्य बने यही मेरी हार्दिक शुभकामनाएं है।

(रविन्द्र चौबे)

प्रति,
भोजराम पटेल
(व्याख्याता) सम्पादक - "प्रेरणा"
शास. उच्च. माध्य. विद्यालय तारापुर
जिला- रायगढ़ (छ.ग.)

दुनिया उसी पर भरोसा करती है जिन्हें खुद पर भरोसा होता है ।

उमेश पटेल
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक- M1-12
महानदी भवन, नवा रायपुर अटल नगर, रायपुर 492002 (छ.ग.)
फोन : 0771-2510316, 2221316
नि. : D-1/2, शास. आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन : 0771-2881030
ग्राम व पोस्ट नंदेली, जिला-रायगढ़ कार्यालय: 7000477747

क्रमांक 01168/MINISTER/CG/KHS/GOVT/2022 दिनांक 30/08/2022

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ है कि स्कूल शिक्षा पर केन्द्रीत "**प्रेरणा ग्रंथ**" के रूप में पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पुस्तिका स्कूल शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिये प्रेरित व प्रोत्साहित करने के साथ हमारे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में शिक्षकों के पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाये तथा अपने प्रकाशन उद्देश्य के अनुरूप पठनीय व संग्रहणीय बने।

इन्हीं भावनाओं के साथ प्रेरणा ग्रंथ प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं.....

(उमेश पटेल)

प्रति,

संपादक
प्रेरणा ग्रंथ
श्री भोजराम पटेल व्याख्याता
शा.उ.मा.वि. तारापुर
जिला रायगढ़ (छ.ग.)

प्रकाश नायक
विधायक
16, रायगढ़ (छत्तीसगढ़)
उपाध्यक्ष
छ.ग. राज्य ग्रामीण एवं
अन्य पिछड़ा वर्ग विकास प्राधिकरण
(राज्यमंत्री दर्जा)

रायगढ़ निवास एवं कार्यालय : 3-4, गजानंदपुरम,
रायगढ़ (छ.ग.) 496001
रायपुर निवास : ई 7, पंचशील, कटोरा तालाब,
रायपुर (छ.ग.) 492001
मोबाईल : 9406157294, 9300757294
ई-मेल : prakashnaikmlaraigarh@gmail.com

रायगढ़, दिनांक– 27.08.2022

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि सरकारी स्कूलों को असरकारी बनाने और शिक्षक व विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा विषयक तथ्यों को संग्रहित कर एक पुस्तकाकार रूप देने की संकल्पना को कार्यरूप में परिणित किया जा रहा है। इस विशेष प्रयास के लिए ग्रंथ के संपादक एवं सहयोगियों के साथ शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ठ प्रदर्शन करने वाले समस्त शिक्षको व अधिकारियों को मेरी हार्दिक शुभकामना।

"प्रेरणा" 'शासकीय स्कूल से कैसे बने असरकारी' पुस्तक हमारे शिक्षक विद्यार्थी व समाज के लिए बहुउपयोगी पठनीय एवं संग्रहणीय ग्रंथ बने यही मेरी सदभावना एवं शुभकामनाएं।

भवदीय

प्रकाश नायक
विधायक
16, रायगढ़ (छ.ग.)

प्रति,

श्री भोजराम पटेल (व्याख्याता)
संपादक
शा.उ.मा.वि.तारापुर
जिला–रायगढ़ (छ.ग.)

तारन प्रकाश सिन्हा
आई.ए.एस.
कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी

कार्यालय कलेक्टर, रायगढ़ (छ.ग.)
दूरभाष क्रमांक : 07762 222103 (का.)
: 222101 (नि.)
फैक्स : 07762 222291 (का.)
: 222101 (नि.)
ई-मेल : raigarh.cg@nic.in

अर्द्ध शा. पत्र क्र. :
रायगढ़, दिनांक : 27/6/2023

शुभकामना संदेश

प्रिय भोजराम जी,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि स्कूलों में अध्ययन–अध्यापन को प्रभावशाली बनाने की दिशा में आत्मअवलोकन के साथ सरकारी विद्यालयों को असरकारी बनाने शिक्षक–शिक्षार्थी और पालकों की भूमिका जैसे अहम विषयों का विश्लेषण करते हुए *"प्रेरणा"* पुस्तिका प्रकाशित किया जा रहा है।

यह *"प्रेरणा"* ग्रंथ शासकीय विद्यालयों को और भी प्रभावी बनाने की दिशा में हमारे शिक्षक व शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों का पथ प्रदर्शन करेगी।

इन्हीं पवित्र भावना के साथ ग्रंथ के प्रकाशक, सम्पादक व सहयोगियों को मेरी हार्दिक शुभकामना।

शुभेच्छु,

भवदीय,
Taran
(तारन प्रकाश सिन्हा)

प्रति,

श्री भोजराम पटेल,
व्याख्याता,
"सम्पादक प्रेरणा ग्रंथ"
शास.उ.मा.विद्या., तारापुर,
जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

जो व्यक्ति खुद को तराशता है, दुनिया उसे एक दिन तलाशती है।

शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय, रायगढ़ (छत्तीसगढ़)
SHAHEED NANDKUMAR PATEL VISHWAVIDYALAYA, RAIGARH (CHHATTISGARH)

प्रो. (डॉ.) ललित प्रकाश पटैरिया
कुलपति

PROF. (DR.) LALIT PRAKASH PATERIYA
Vice Chancellor

क्रमांक / D.O. Letter / संदेश /

रायगढ़, दिनांक 25.08.2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि स्कूल शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक चिंतन एवं कर्तव्य निर्वहन तथा सेवा भावना को शिक्षकों में प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से प्रेरणा ग्रंथ पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। श्री भोजराम पटेल बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं तथा उनमें एक रचनात्मक सृजनशीलता का भी गुण है। उनके सम्पादन में यह पुस्तक अपने उद्देश्यों पर सफल होगी। वस्तुतः स्कूल शिक्षा की नींव पर ही विद्यार्थी का भविष्य और उच्चशिक्षा का भवन प्रतिष्ठित होता है। स्कूलों की स्थिति शिक्षकों के कर्तव्य निर्वहन, समाज के सकारात्मक सोच और विद्यार्थियों के जिज्ञासु प्रवृत्तियों पर निर्भर करती है। जिसे शिक्षक अपने श्रम से सींचता है।

प्रेरणा ग्रंथ अपने उद्देश्यों के अनुरुप शिक्षकों के लिए प्रेरक एवं सकारात्मक संदेश देने में सफल हो यही मेरी हार्दिक शुभकामना है।

प्रो. (डॉ.) ललित प्रकाश पटैरिया
कुलपति

पता : शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय, गढ़उमरिया, ओड़िशा रोड, रायगढ़ (छत्तीसगढ़) 496001
दूरभाष : +91 9425227163
ईमेल : vcsnpv@gmail.com
वेबसाइट : www.snpv.ac.in

Address : Shaheed Nandkumar Patel Vishwavidyalaya, Garhumaria, Odisha Road, Raigarh (Chhattisgarh) 496001
Phone : +91 9425227163
E-mail : vcsnpv@gmail.com
Website : www.snpv.ac.in

कार्यालय संयुक्त संचालक शिक्षा संभाग, बिलासपुर छत्तीसगढ़
email:-bsp.jd18@gmail.com. Phone No.07752-493695

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय हैं कि स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालय संसाधनों का कुशल प्रबंधन, बेहतर शिक्षण एवं शिक्षकों की गुणवत्ता का स्तर सुधारने एवं आत्म अवलोकन करते हुए शासकीय विद्यालयों को प्रभावकारी बनाने की दिशा में एक प्रेरणा ग्रंथ "सरकारी स्कूल कैसे बने असरकारी" का प्रकाशन किया जा रहा है जो हम सब के लिए गर्व का विषय है। यह प्रेरणा पुस्तिका हमें आत्म चिंतन का अवसर देने के साथ–साथ शिक्षा क्षेत्र में सुधार के लिए पथ प्रदर्शन भी करेगा। मुझे विश्वास है इस प्रेरणा ग्रंथ की उपयोगिता प्राथमिक से लेकर हाई एवं हायर सेकेंडरी स्तर तक प्रत्सेक विद्यालय के लिए होगी।

यह पुस्तक पठनीय,संग्रहणीय एवं बहु उपयोगी बने मेरी यही हार्दिक शुभकामना है।

प्रति,

भोजराम पटेल(व्याख्याता)
पुस्तिका संपादक / प्रकाशक
शास.उ.मा.वि.तारापुर
जिला–रायगढ(छ.ग.)

आर.पी.आदित्य 18-8-23
संयुक्त संचालक
बिलासपुर (छ.ग.)

कार्यालय, जिला शिक्षा अधिकारी, रायगढ़ (छ.ग.)

(जिला पंचायत के पीछे, रायगढ़)

Fax/Phone - 07762-296940 e-mail : deo123.raigarh@gmail.com

क्रमांक : 5015 रायगढ़, दिनांक : 26/07/23

शुभकामना संदेश

हमारे लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि स्कूली बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षकों की भूमिका एवं शासकीय स्कूलों की विश्वसनियता को जनमानस में प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से विद्यालयीन गतिविधियों व कार्यक्रमों तथा उपलब्धियों को समाहित करते हुए ''प्रेरणा'' ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

छ.ग.शासन द्वारा स्कूल शिक्षा विभाग में बहुत से योजना एवं कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है जिनके क्रियान्वयन के माध्यम से हम शासकीय विद्यालयों को शिक्षा गुणवत्ता की दिशा में बेहतर बनाने हेतु क्रियाशील रहते हैं। विद्यालयों में शिक्षक अपने छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को विकसित करने एवं उनके भीतर नैतिक व चारित्रिक गुणों को स्थापित करने की दिशा में अपना कर्तव्य निर्वहन ईमानदारी के साथ समर्पित भाव से करें तो शासकीय विद्यालय एवं विद्यार्थी दोनों का भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रकाशित प्रेरणा ग्रंथ बहुउपयोगी मार्गदर्शक पुस्तिका के रुप में हमारे शिक्षकों के लिए पठनीय, संग्रहणीय एवं प्रेरक बने इन्ही शुभकामनाओं के साथ ..!

बी. बारवला
जिला शिक्षा अधिकारी
जिला रायगढ़ (छ.ग)

प्रति,
भोजराम पटेल, व्याख्याता
संपादक - प्रेरणा
शा.उ.मा.वि. तारापुर
जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

सम्पादकीय

सरकारी स्कूल कैसे हो असर कारी

शासकीय स्कूल नाम सुनते ही लोगों के मन में एक हीनभावना और हेय दृष्टिकोण का भाव सा आ जाता है। आखिर क्यों ? इन सरकारी स्कूलों में चुने हुए शिक्षक हैं, शासन की तमाम सुविधाएं हैं, साधनों की कमी नहीं है निःशुल्क किताबें, बच्चों के लिए गणवेश, मध्यान्ह भोजन और बहुत कुछ सहुलियत बच्चों को स्कूल तक लाने के लिए सरकार के द्वारा उपलब्ध कराएं जाते हैं। फिर भी लोगों का विश्वास जीत पाने में स्कूल और यहां के शिक्षक विफल क्यों हैं ? इस विषय पर चिंतन और चिंता जरूरी है चिंतन इसलिए कि आखिर हमसे कहां चूक हो रही है हम अपनी त्रुटियों को कैसे सुधारें ! सरकार द्वारा शिक्षा गुणवत्ता में सुधार के लिए खर्च की जा रही मोटी और उँची रकम का बेहतर परिणाम नहीं मिलने का कारण क्या है ? चिंता इसलिए कि यदि आज हम अपने सरकारी स्कूलों की अवस्था सुधारने की दिशा में गंभीर नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं जब सभी शासकीय विद्यालयों को ठेका पर बड़े-बड़े कारपोरेट कंपनियां शिक्षा व्यवसाय से जुड़े लोग अपने नियंत्रण में लेकर हम से बेहतर शिक्षा और सरकार से बेहतर बजट प्राप्त करने में सफल होंगे फिर वेतन और सुविधा भी इन्हीं व्यवसायिक लोगों के हाथों तय किया जाएगा।

जरुरी है कि आज मोटी रकम लेकर आरामतलब जिंदगी के आदी बने सुविधा भोगी कतिपय शिक्षक और सरकारी स्कूल के जुड़े अधिकारी कर्मचारी जाग जाएं सतर्क हो जाएं अपने कर्तव्य को समझ कर इसे ईमानदारीपूर्वक निभाने में समर्पित हो जाएं अन्यथा वह दिन दूर नहीं कि वे स्वयं इस कार्य से मुक्त कर दिए जाएंगे। माना कि सरकारी स्कूलों के पास पढ़ाई - लिखाई और स्कूली कर्तव्य निर्वहन करने के साथ-साथ बहुत से शासकीय दायित्वों का निर्वहन करने की जिम्मेदारी समय-समय पर सरकार द्वारा सौंप दी जाती है, जिससे पढ़ाई लिखाई अर्थात अध्यापन व्यवस्था पर विपरीत असर पड़ता है परंतु मात्र यह कारण स्कूलों में पढ़ाई से मुंह मोड़ने के लिए ठोस और पर्याप्त नहीं माना जा सकता हम अगर ईमानदारी से सोचेंगे सरकारी कर्तव्य निर्वहन के साथ अपना घरेलू और व्यक्तिगत काम या कह सकते हैं इसके बाद का अपना पारिवारिक काम कितनी गंभीरता और ईमानदारी से निर्वहन करते हैं ? इसका पचास प्रतिशत भी ईमानदारी या मनोयोग से हम अपने शासकीय दायित्व निभाते हैं ! यदि हां तो हम पर कभी भी पालक, समुदाय, विद्यार्थी आक्षेप नहीं लगा सकते ।

एक शिक्षक को भगवान का दर्जा समाज के सभी वर्ग के लोगों का सम्मान उसके कर्तव्य निर्वहन एवं विद्यार्थियों के भविष्य निर्माता होने के कारण ही प्राप्त होता है। इसलिए सभी शिक्षक वृंद से एक निवेदन है कि वह समय पर स्कूल पहुंचने से लेकर अपना कर्तव्य निर्वहन करने समाज के समक्ष एक स्वच्छ छवि स्थापित करने और बच्चों के भविष्य को लेकर गंभीर बनने की भूमिका निभाएं तो समुदाय का मान सम्मान और विश्वास अर्जित करने और स्वयं के आत्म गौरव से अभिभूत होने का यह अवसर उन्हें आत्म संतुष्टि के साथ समाज में विशेष सम्मान के रुप मे पुरस्कार का भागीदार बनाएगा ।

यदि हम सरकारी स्कूलों की दशा और दिशा पर मंथन करना चाहे तो बहुत से बिंदु सामने आएंगे हम आंकड़े और तथ्यों के बजाय जो प्रत्यक्ष दिख रहा है उसी विषय पर चिंतन करें ! क्या हमारे शिक्षक समय पर स्कूल पहुंचते हैं? क्या हमारे शिक्षक स्कूल के सामग्री व संसाधनों का संरक्षण करने इनके साज सम्हाल की जिम्मेदारी निभाते हैं ? क्या शिक्षक स्कूल के छात्र छात्राओं को उसी जिम्मेदारी और भावना के साथ अध्यापन कराते हैं जैसे वे

अपने बच्चों के साथ करते ? क्या शासकीय स्कूल के शिक्षक अपने विद्यार्थियों का हक उन्हें न्याय दिलाने के लिए उनके पालक के रुप में उच्चाधिकारियों से संपर्क करते हैं ? क्या शिक्षक अपने विद्यार्थियों व पालकों से सतत संपर्क और चर्चा के लिए समय देते हैं ? इन सवालों का जवाब हम स्वयं से पूछें क्योंकि हम अपने हक की बात वेतनमान की बात भत्ता और सुविधा बढ़ाने की बात तो जोर-शोर से उठाते हैं । उठाना भी चाहिए क्योंकि यह हमारा संवैधानिक अधिकार जो है लेकिन क्या अधिकार के साथ कर्तव्य और उत्तरदायित्व का निर्वहन करना भी जरुरी नहीं है ? क्यों एक निजी स्कूल का शिक्षक कम वेतन और सुविधा पाकर हम से अधिक मेहनत अधिक श्रम के घंटे कार्य करता है क्योंकि उसकी मजबूरी है और हम मजबूरी में नहीं हैं इसलिए जरुरी कर्तव्य भी भूल जाते हैं ? यह चिंतन का विषय है । सरकारी स्कूल के शिक्षकों के प्रति ना तो हमारे मन में कोई दुर्भावना है और ना ही हम उन्हें हतोत्साहित करना चाहते हैं उनके सेवा और कर्तव्य निर्वहन में सवाल उठाकर खोट या कमी दिखाना चाहते हैं बहुत सारे शिक्षक आज भी मिशाल के तौर पर समाज में बहुत ही प्रतिष्ठित और सम्माननीय हैं। लोगों के दिलों में उनके प्रति विशेष श्रद्धा व सम्मान का भाव है। यह सभी शिक्षकों में हो तो और भी बेहतर है ।

आइए चिंतन और चिंता कर सरकारी स्कूलों की दशा व दिशा को सुधारें जनमानस में खो रही प्रतिष्ठा व सम्मान को पुनःस्थापित करें सरकार से अपेक्षा करें और सरकार के साथ विद्यार्थियों की अपेक्षा पर हम भी खरा उतरे तभी सरकारी स्कूल असर कारी हो सकते हैं।

इन्हीं विषय बिंदुओं को केन्द्र में रखकर सरकारी स्कूलों को असरकारी यानि प्रभावशाली बनाने दिशा में हमारे सम्मानीय शिक्षकों को आत्ममंथन करते हुए अपने कर्तव्य निर्वहन के प्रति सजगता, विद्यार्थी, पालक और समुदाय में गुरु अथवा शिक्षक की गरिमा को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से प्रेरणा पुस्तक का प्रकाशन एक छोटा सा प्रयास है। इस पुस्तक के प्रकाशन में हमारे प्रदेश शासन के मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी, स्कूल शिक्षा मंत्री श्री रविन्द्र चौबे जी, माननीय उच्चशिक्षा मंत्री मान. श्री उमेश पटेल जी, माननीय विधायक प्रकाश नायक, श्रीमान कलेक्टर तारन प्रकाश सिन्हा, संयुक्त संचालक लोक शिक्षण बिलासपुर श्री आर.पी. आदित्य, जिला शिक्षा अधिकारी श्री बी. बाखला जी के बहुमूल्य शुभकामना के साथ विद्वान शिक्षकों, बुद्धिजीवियों, विभिन्न क्षेत्र में सफल व्यक्तियों का सुझाव एवं बहुमूल्य मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है ।

हमारे इस प्रयास को गति देने में अजय श्रीवास्तव जी का विशेष योगदान हम नहीं भूल सकते। जिन्होंने सम्पूर्ण पुस्तिका को लिपिबद्ध करने में दिनरात एक कर हमारे सपने और सोच को आकार दिया। इस छोटे से ग्रंथ में हमने उत्कृष्ट शिक्षकों का परिचय देने उत्कृष्ट विद्यालयों को चित्रांकित करने सहित एक शासकीय स्कूल को प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक संसाधनों को रेखांकित करने का प्रयास किया है। ज्ञान और शिक्षा का आलोक अनंत है इसलिए उसे प्राप्त करने की लालसा समुद्र से बूंद प्राप्त करने की तरह है । हमारे इस प्रयास में अपनी सीमाएं और मर्यादाएं रही हैं। इसलिए बहुत सी आवश्यक विषय वस्तु एवं कई उत्कृष्ट विद्यालयों प्रेरक शिक्षकों तक पहुंचने में सफल नहीं हो पाए हैं। परंतु हमारी यह यात्रा जारी रहेगी और भविष्य में इससे भी बेहतर कुछ करने की चाह, मन में ललक बनी रहेगी। सुधि पाठकों, प्रबुद्ध विचारकों से उनके बहुमूल्य सुझाव, मार्गदर्शन की अपेक्षा सदैव बनी रहेगी। वहीं नीर-क्षीर विवेकी पाठकों से यह उम्मीद है कि वे हमारी लिपिकीय अथवा भाषा साहित्य संबंधी किसी भी प्रकार की मानवीय त्रुटि को सुझाव के रुप में हमें आशीष देकर हमारा हौसला बढ़ाते हुए संबल प्रदान करेंगे। हमारे इस प्रयास को आप आलोचना या समालोचना का पात्र नकारात्मक या सकारात्मक मानते हैं यह आप पर निर्भर है। आपके बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रिया की अपेक्षा के साथ ग्रंथ आपके हाथों में सादर समर्पित है ।

भोजराम पटेल

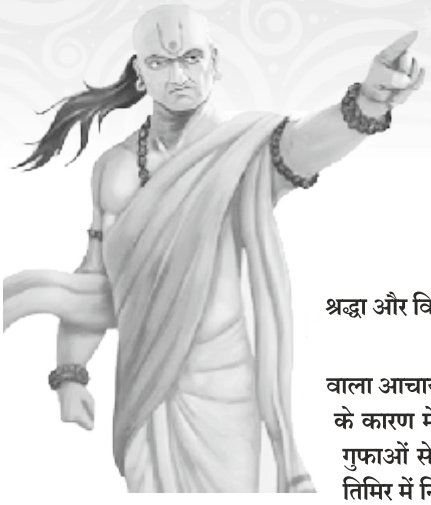

शिक्षकों के व्यक्तित्व व कृतित्व पर केन्द्रित विचारोत्तेजक आलेख...

मैं एक शिक्षक हूं

मैं एक शिक्षक हूँ ज्ञान का पुंज, अविजेय हिमालय, विद्या का अगाध सागर, श्रद्धा और विश्वास की अखण्ड मूर्ति।

मैं आचार्य हूँ, सत् - असत्, कर्तव्य - अकर्तव्य के विचारों का चुनाव करने वाला आचार्य - आचिनोति विवेच्य आचारान् इति आचार्यः, नैतिक आचरणों की प्रतिमा होने के कारण मेरी पूजा होती है । मैं पूज्य हूँ । मैंने ही इस मानव - जगत् को इतिहास की अंधेरी गुफाओं से निकाल कर प्रकाश के राजपथ पर अग्रसर किया है । जब मानव अज्ञान के घोर तिमिर में निमग्न था, अबोध शिशु - सा, ज्ञान दीप के प्रकाश की एक किरण पाने को भटक रहा था, तब मैंने ही साधना के बल पर उस महान् अखण्ड और अनन्त ज्ञान - अरूण का प्रथम दर्शन किया था । क्रियाओं की कठिन भूमि से अनुभूतियों की फूटती ज्वालामुखी के स्फुल्लिंगों से हृदय - गह्वर को आलोकित किया था। सारस्वत उषा सुन्दरी के धरा पर अवतरित होने पर उसके स्वागत में वैदिक ऋचाओं का गायन और आत्मा की देहली पर ज्ञानवर्तिका को प्रज्वलित किया था। तब उस अज्ञान - तिमिरान्ध व्यक्ति के बन्द चक्षुओं का उन्मीलन कर उसे कण - कण में व्याप्त असीम सत्ता की दिव्यानुभूति कराई थी। असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय के साथ विद्याऽमृतमश्नुते का प्रथम पाठ मैंने ही दिया था।

मैं कभी भौतिक सुखों की ओर आकृष्ट नहीं हुआ, सांसारिक दुःखों से हार नहीं मानी, ज्ञान के स्थान पर कंचन के टुकड़ों को महत्त्व नहीं दिया। काम के शरों से वेधित और क्रोध की ज्वाला से दग्ध नहीं हुआ। मोह - निशा की गोद में कभी नहीं सोया ज्ञान यज्ञ की अग्नि को जो एक बार प्रज्वलित किया था, आदिम युग से निरन्तर आज तक उसे भस्मशेष नहीं होने दिया। मैंने कभी विश्राम नहीं किया ज्ञान के पन्थ कृपाण के धारा - पर चलने में कातरता प्रदर्शित नहीं की । इस कठिन कर्म के सम्पादन में शिथिलता नहीं आने दी, पलकें नहीं झपकी, ज्ञान सूर्य को मोह के श्याम मेघों से क्षण भर को भी आच्छादित नहीं होने दिया । यदि एक घड़ी का प्रमाद हो जाय, असावधानी करने लगूं, तो विश्व को अज्ञान का अन्धसागर निगल जाय। जड़ता आच्छादित कर ले। दुष्ट वृत्तियाँ अपनी विजय पर अट्टहास करने लगे। संस्कृति का उपवन सूखकर वीरान हो जाय । मानवीय मूल्य हमेशा - हमेशा के लिये दफन हो जायें, प्रगति के गतिमान चरण गतिहीन हो जायें, पर मैंने अब तक ऐसा नहीं किया और न कभी करूंगा। राजसत्ता की प्राप्ति मेरे जीवन लक्ष्यों में नहीं है, जबकि लक्ष्मी मेरे ही संकेतों पर चली है। राजाओं - महाराजाओं और सम्राटों ने मेरे चरणों को पलोटा है, आदेशों को सिर माथे लिया है और भृकुटि भंगिमा से पीपर पात के समान विचलित हुये हैं । एक अदना से बालक चन्द्रगुप्त को राज्य लक्ष्मी के ऐश्वर्य से अभिषिक्त कर सम्राट् के मूर्धन्य पद पर प्रतिष्ठित करने वाला चाणक्य कौन है ? विश्वविजेता अलक्ष्येन्द्र का महान मार्गदर्शक अरस्तू कौन है ? राजकुमार चन्द्रापीड का अनुशास्ता आचार्य शुकनाश कौन है ? मैं हूँ । मुझमें क्षात्र और ब्राम्ह तेज मूर्तिमान् होकर रहे हैं । शाप और शास्त्र की विध्वंसक शक्तियों मेरी अनुचरी रही हैं, पर मैंने कभी उनका उपयोग नहीं किया अपने ऊपर इनका स्वामित्व स्थापित नहीं होने दिया । विश्व कल्याण की भावना से सदैव आन्दोलित रहा। सबको मित्र की आँखों से देखा और सबके अभ्युदय की कामना की।

मैंने कभी विद्या का विक्रय नहीं किया। अपनी आत्मा को किसी के हाथों गिरवी नहीं रखा। मैं स्वाधीनचेता, निर्भीक, स्पष्टवक्ता, सत्याग्रही रहा हूँ। बड़े - बड़े राजतन्त्र तथा अर्थपति मुझे सोने की तुला से नहीं तौल सके। अहिंसा और न्याय के मार्ग से रंचमात्र भी हटा नहीं सके सत्ता का भय मुझे विकम्पित नहीं कर सका और सत्ताधीशों के संकेतों पर नाचने की कठपुलती की भूमिका मैंने कभी नहीं निभाई। मैंने राजतंत्र को धर्मतंत्र से सम्बद्ध किया, भ्रष्टतंत्र की आलोचना की और जनचेतना के जागरण का अलख जगाया।

मेरी सत्ता सार्वदेशिक है, वह समुदाय, वर्ण, जाति, वर्ग और लिंग के कृत्रिम विशेषणों से परे है। अखण्ड और अविभाजित है। फिर भी मैंने विभिन्न नाम - रूपों और विशिष्ट दिक्कालों में अपने आपको अभिव्यक्त कर अनब्याही मिट्टी के दियों को आलोकित

किया है । दीप- से -दीप जलाकर हजारों निर्वात और निष्कम्प ज्ञान दीपों की आकल्प परम्परा रची है। मैंने व्यक्ति की गरिमा को जाना है । उसके विकास की अनन्त सम्भावनाओं को पहचाना है और अन्तर्निहित दैवीय गुणों को उद्घाटित कर सर्वांगीण विकास से उसके व्यक्तित्व को समृद्ध किया है। मैं ही वशिष्ठ और विश्वामित्र बनकर राम जैसे व्यक्तित्व को सँवारने वाला हूँ । कृष्ण की बहुमुखी प्रतिभा को निखारने वाला सन्दीपनि मैं हूँ। वेदों को विस्तार देकर पंचम वेद 'महाभारत' और ज्ञान के विश्वकोष अठारह पुराणों का प्रणेता 'व्यास' मैं हूँ राजा राम के कुश और लव नामक पुत्रों को पढ़ाने के लिये मैंने ही रामायण की रचना की थी । राजा अमरशक्ति के मूर्ख पुत्रों को छह माह के भीतर नीतिनिपुण बनाने के लिये पंचतंत्र का रचयिता विष्णु शर्मा मैं ही हूँ । गुरू द्रोण , कृपाचार्य आदि के रूप में मैंने ही जन्म लिया था । भारतमाता की वेदना से पीड़ित होकर मेरी ही कुक्षि से महात्मा गाँधी का अवतरण हुआ था। विश्वगुरू रवीन्द्रनाथ और राष्ट्र के पुरोधा सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, जिन्होंने अपने जीवन को राष्ट्र के लिये समर्पित किया था, भारत माता के श्रीचरणों की विभूति को शिरोधार्य कर शिक्षक की आत्मा को गौरवान्वित किया था।

शंकराचार्य को अद्वैत की शिक्षा देने वाला गोविन्दपाद, जन - जन में भक्ति की भागीरथी को प्रवाहित करने वाले तुलसीदास का गुरू नरहरि और सामाजिक रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों को झकझोरने वाले मस्तमौला कबीर का गुरू रामानन्द भी मैं हूँ । मैंने ही तो उस जुलाहे को निर्गुण राम की उपासना का महामंत्र देकर हिन्दू और तुर्कों की सच्ची उपासना से समाज को अवगत कराने के लिये निर्भीक व्यक्तित्व प्रदान किया था । मुगलों को लोहे के चने चबाने के लिये शिवाजी को जिस रामदास जी ने सामर्थ्य दिया था, अन्धे होकर भी जिस प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द ने दयानन्द नामक जिज्ञासु संकल्पचेता शिष्य को उसकी अन्तश्चेतना को जागृत कर वैदिक धर्म की स्थापना की दीक्षा दी थी, माँ काली के प्रसाद से जिन श्रीरामकृष्ण ने नरेन्द्रनाथ को विवेक का आनन्द प्रदान कर वधिर विदेशियों के भी कर्णविवरों में भारतीय संस्कृति का उद्घोष करने की प्रेरणा दी थी, वे सब मेरी ही संज्ञायें हैं । तक्षशिला, नालन्दा और वल्लभी के प्राचीन विद्यापीठों में मेरी ही ज्ञानगरिमा की कीर्ति - पताकायें फहरी थीं। समाज ने अद्भुत सम्मान दिया था।

ज्ञान और छात्र मेरी निष्ठा के ऐसे दो बिन्दु हैं , जो श्रेय और प्रेय के जनक हैं । निराकार और साकार उपासना के सोपान हैं और जीवन - साधना की सिद्धि और साधन हैं। छात्र मेरे जीवन का वह मार्मिक पक्ष है, जिसके बिना मेरी कल्पना अधूरी और अधकचरी है । विनीत, प्रपन्न और स्निग्ध शिष्य मेरी आत्मा का सम्बल है, उसे मैं गुह्य से गुह्य ज्ञान भी देने में संकोच नहीं करता। मैंने समग्र जीवन विद्यार्थियों के लिये ही समर्पित करने का जो कभी संकल्प लिया था, उस पर मैं आज भी अडिग हूँ और कल्प - कल्पान्त तक स्थिर रहूँगा । जिज्ञासु छात्र को देखकर मेरे हृदय की चट्टानों से वात्सल्य के अजस्त्र स्त्रोत, स्नेह की अविरल धारायें और ममता के अटूट निर्झर फूट पड़ते हैं । आसक्ति का अमर्यादित सिन्धु मर्यादा - तटों के बन्धनों को अस्वीकार कर मुझ जैसे कर्मयोगी को भी आसक्तिमय बना देता है। वह मेरे जीवन की धुरी है। उसका सर्वांगीण विकास मेरा परम लक्ष्य है । मैंने उसे अपने से भी महत्तर बनाने की चेष्टा की है । सदैव अपराजेय रहकर भी उससे बार - बार पराजित होता रहा हूँ । मैं परकाया प्रवेशी हूँ। शिष्य के अन्तस् में पैठकर, उसे अपने नाम और रूप दोनों से अलंकृत कर निजी आसन्दी भी प्रदान करता हूँ। छात्र मेरी मानसी सन्तति है। जिसकी अनवच्छिन्न परम्परा से मेरी कभी पिण्डोदक क्रिया लुप्त नहीं होती और प्रदोष्ण जल नहीं पीता। हम दोनों ही आध्यात्मिक सम्बन्धों के पवित्र बन्धनों में बँधे हैं और बँधे रहेंगे।

मेरा सम्पूर्ण जीवन त्याग और तपस्या से पूर्ण है। मैं स्वतंत्रचेता और क्रान्तिदर्शी हूँ। मैंने समाज का नेतृत्व और सामाजिक परिवर्तनों का संचालन किया है। आज मेरे कर्तव्यों में अभिवृद्धि हुई है। व्यक्ति और समाज के निर्माण के साथ राष्ट्र निर्माण का गुरूतर भार मेरे कन्धों पर आ पड़ा है। जनतंत्रीय मूल्यों के विकास के साथ प्रजातंत्र की जड़ों को मजबूत करने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर ही तो आयी हुई है। मैं कभी कर्तव्यों से विमुख नहीं होता। अतीत की भाँति ही मैं इन दायित्वों को निभाऊंगा । मुझे प्रत्युपकार की अभिलाषा नहीं है । समाज सम्मान देता है तो दे , निरादर करता है तो करे । मैं तो वह दीपक हूँ , जिसका काम अंधेरे में ही जलना है और तिल - तिल जलकर ही दूसरों को रोशनी देना है । संसार में जब तक अंधियारी रातें रहेंगी , एक भी दीपक दीवट से सूनी होगी , सूर्य की एक भी किरण शेष रहेगी , तब तक मैं उन काली रातों से लड़ूंगा और लड़ता रहूँगा ।

(रामकृष्ण मिशन विवेकानंद आश्रम रायपुर से प्रकाशित विवेक ज्योति दिसंबर 2009, अंक 12 से साभार)

भैरवदत्त उपाध्याय

शिक्षा समाज व देश की प्रगति का प्रतिबिंब

- आर.पी. आदित्य

वर्तमान में लोक शिक्षण संचालनालय बिलासपुर संभाग में संयुक्त संचालक के पद पर पदस्थ रायगढ़ के पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी आर.पी. आदित्य से प्रेरणा ग्रंथ के लिए विशेष मार्गदर्शन एवं उनके विचारों को जानने के उद्देश्य से शिक्षा क्षेत्र में जन अपेक्षा एवं शिक्षकों एवं विभागीय अधिकारियों के उत्तरदायित्व को लेकर चर्चा किया गया। उन्होंने इस चर्चा के माध्यम से अपनी सोच और भावनाओं से हमें अवगत कराया। प्रस्तुत है आर.पी. आदित्य जी के साथ शिक्षा व्यवस्था पर हुई चर्चा के अंश ....

वर्तमान परिवेश में छत्तीसगढ़ में शिक्षा का स्वरूप किस रूप में है इस विषय में श्री आदित्य जी का कहना है विद्यालयीन शिक्षा व विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रतिबद्ध अपने उत्कृष्ट विद्यालयों, बेहतरीन शैक्षणिक वातावरण, आदर्श सुविधाओं, योग्य, शिक्षित व अनुभवी शिक्षकों के उत्कृष्ट अध्यापन व प्रतिभाशाली बच्चों से समृद्ध छत्तीसगढ़ में शिक्षा का स्वरूप आदर्श रूप से व्यवस्थित है। फिर भी और बेहतर बनाने की दिशा में सुधार और प्रयास भी आवश्यक है।

रायगढ़ जिले में जिला शिक्षा अधिकारी के रूप में दायित्व निर्वहन कर चुके आर.पी.आदित्य रायगढ़ जिला में शिक्षा व्यवस्था की अवधारणा पर अपना मंतव्य व्यक्त करते हुए कहते हैं कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान में राज्य व देश में अग्रणी रहे रायगढ़ जिले की बेटियों ने छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल की कक्षा दसवीं और बारहवीं की मुख्य परीक्षा में पूरे प्रदेश में अपना परचम लहराया है । पिछले वर्षों के परीक्षा परिणामों में दसवीं और बारहवीं दोनों कक्षाओं की प्रावीण्य सूची में पहला स्थान रायगढ़ जिले की छात्राओं ने हासिल किया है। वर्ष 2021-22 में कक्षा दसवीं की मेरिट सूची में पहला स्थान रायगढ़ जिले की कु.सुमन पटेल ने हासिल किया। वे 98.67 प्रतिशत अंक अर्जित कर स्टेट टॉपर बनी । इसी प्रकार आदर्श ग्राम्य भारती हायर सेकेंडरी स्कूल पुसौर रायगढ़ की छात्रा कु. कुंती साव ने 98.20% अंक हासिल कर पूरे राज्य में अपना पहला स्थान बनाया वहीं वर्ष 2022-23 में 10 वीं एवं 12 वीं की बोर्ड परीक्षा में रायगढ़ जिले की छः बेटियों ने प्रावीण्य सूची में स्थान बनाते हुए रायगढ़ जिले को गौरवान्वित किया है । जिसमें कक्षा 12 वीं में पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा विधि भोसले, नौवां स्थान प्राप्त करने वाली दीपिका पटेल एवं रानी महाणा तथा दसवीं मेरिट लिट में चौथे स्थान पर अदिति भगत, सातवें स्थान पर श्रद्धांशी अग्रवाल एवं आठवें स्थान पर खुशी पटेल ने प्रावीण्य सूची में अपना स्थान बनाया। जबकि पुनर्मूल्यांकन के पश्चात भी कुछ बेटियों के अंक बढ़ने से प्रावीण्य सूची में स्थान बना है। मेडिकल प्रवेश प्रतियोगी परीक्षा की बात करें तो एनआईआईटी (NIIT) परीक्षा में रायगढ़ जिले का प्रदर्शन बेहतर रहा है।

शिक्षा गुणवत्ता विकास के लिए विभाग द्वारा किये गये प्रयास/कार्यक्रम/ योजनाओं के संदर्भ में आर.पी. आदित्य जी कहते हैं शिक्षा गुणवत्ता विकास के लिए विभाग द्वारा कई योजनाएं व कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं जिनके क्रियान्वयन में रायगढ़ जिला हमेशा अग्रणी रहा है । वैश्विक महामारी कोरोना के भीषण दौर में जहां पूरे देश मे स्कूल बंद रहे वहीं छत्तीसगढ़ में स्कूली बच्चों की पढ़ाई को निरंतर जारी रखने के लिए नवाचार के साथ ''पढ़ई तुंहर दुआर'' कार्यक्रम को नीति आयोग समेत देशभर के विभिन्न हिस्सों से सराहना मिली। कोरोना काल के दौरान छत्तीसगढ़ राज्य सरकार द्वारा निर्मित विभिन्न शैक्षणिक मॉडलों के क्रियान्वयन में रायगढ़ जिला पूरे प्रदेश में अग्रणी रहा। पढई तुंहर दुआर योजनांतर्गत विभिन्न नवाचारी शैक्षणिक मॉडलों जैसे गांव के पारों-मोहल्लों में ग्रामीणों के सहयोग से पढ़ई हमर पारा ऑफलाइन क्लासेस मोहल्ला क्लास, लाउडस्पीकर गुरूजी, साइकिल गुरूजी, बुलटू के बोल, सहित जिले में ऑनलाइन कक्षाएं प्रदेश में

सर्वाधिक रहीं। कोरोना काल के पश्चात वातावरण बदली है। स्कूलों की स्थिति में सुधार हुआ है और शिक्षा व्यवस्था पुनः पटरी पर आ चुकी है।

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का आंकलन जिले से राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है। जिसमें नेशनल अचीवमेंट सर्वे के अनुसार रायगढ़ जिले का कक्षा तीसरी में स्थान अष्टम, कक्षा पांचवी में तृतीय,कक्षा आठवीं में चतुर्थ एवं कक्षा दसवीं में पंचम रहा है। वहीं असर सर्वे रिपोर्ट-2021 जो राज्य सरकार द्वारा डाइट एवं शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत बच्चों के माध्यम से सभी विकास खंडों में कुछ स्कूलों का चयन कर सर्वे किया जाता है, जिससे प्राप्त आंकडों के माध्यम से शिक्षा गुणवत्ता की परीक्षण किया जाता है,तदनुसार पढ़ई तुंहर दुआर पोर्टल की जानकारी व पढ़ई तुंहर दुआर पोर्टल एक्टिवीटी तथा भाषा पठन स्तर में रायगढ़ जिले का स्थान प्रथम रहा एवं गणित संक्रियाओं में जिले का स्थान द्वितीय रहा।

रायगढ़ जिले के कुछ विद्यालयों को उनके कार्य एवं अध्यापन व्यवस्था के लिए सराहना करते हुए श्री आदित्य ने बताया कि रायगढ़ जिले में विभिन्न स्तरों पर कई शिक्षक व विद्यालय ऐसे हैं जो नवाचार, शिक्षा गुणवत्ता,शाला स्वच्छता एवं रखरखाव, भौतिक संसाधनों की उत्कृष्ट व्यवस्था, प्रतियोगी परीक्षाओं में छात्रों को निशुल्क कोचिंग व मार्गदर्शन के जरिए लगातार उल्लेखनीय कार्य व प्रयास कर रहे हैं।

शिक्षकों की बात करें तो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पुसल्दा में पदस्थ व्याख्याता श्री परमानंद पटेल जी द्वारा ग्राम औरानारा गुरूकुल तमनार में विद्यार्थियों को जवाहर नवोदय विद्यालय, जवाहर उत्कर्ष राष्ट्रीय प्रतिभा खोज, एकलव्य विद्यालय तथा सैनिक स्कूल में प्रवेश हेतु 3 से 4 घंटे निशुल्क कोचिंग और तैयारी कराई जाती है। उनके औरानारा गुरूकुल से जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रवेश हेतु 75, एकलव्य विद्यालय में 120, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज में 21, सैनिक स्कूल में 2 सहित अब तक कुल 221 बच्चों का चयन हो चुका है। शासकीय प्राथमिक शाला लाखीमार धर्मजयगढ़ के सहायक शिक्षक श्री निरंजन पटेल अध्यापन प्रक्रिया को सरल सहज रूचिकर बनाने कक्षा कक्ष में शिक्षण सामग्री के प्रयोग, किचन गार्डन, बागवानी, स्कूल में प्रिंट रिच निर्माण, मुस्कान पुस्तकालय, स्कूल प्रांगण में भारत व छत्तीसगढ़ के नक्शा सहित विभिन्न नवाचारी गतिविधियों द्वारा उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं।

शासकीय प्राथमिक शाला केंदवाही डीपा बार विकासखंड बरमकेला में पदस्थ प्रधान पाठक व शिक्षक द्वय श्री सुरेंद्र मिश्रा व अनुराज वर्मा द्वारा अपने विद्यालय में जवाहर नवोदय विद्यालय, जवाहर उत्कर्ष, एकलव्य विद्यालय तथा सैनिक स्कूलों में प्रवेश हेतु निशुल्क कोचिंग दी जाती है। यहां विभिन्न विद्यालयों की प्रवेश परीक्षाओं हेतु 101 विद्यार्थियों का चयन हो चुका है। विकास खंड घरघोड़ा के प्राथमिक शाला चारमार के सहायक शिक्षक टिकेश्वर पटेल नवोदय विद्यालय में प्रवेश की निशुल्क कोचिंग के लिए पहचाने जाते हैं जिनके विद्यालय से नवोदय विद्यालय हेतु कई छात्र चयनित हुए हैं।वहीं जिले के रायगढ़ विकासखंड के प्रधान पाठक श्री आशीष रंगारी व भुनेश्वर पटेल ने अपने-अपने विद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन सहित शाला स्वच्छता,रख रखाव,व विद्यालय में नौनिहालों के लिए भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता के सम्बंध में जो उल्लेखनीय कार्य किया है,वह शिक्षकों की वर्तमान व भावी पीढ़ी के लिए अनुकरणीय व प्रेरणादायी है।

आत्मानंद विद्यालय प्रारंभ होने से शिक्षा गुणवत्ता में हो रहा सुधार

स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय के प्रारंभ किए जाने से अन्य सरकारी स्कूलों पर इसके प्रभाव के संदर्भ में श्री आदित्य जी का कहना है कि छत्तीसगढ़ शासन के कुशल निर्देशन व जिला प्रशासन के मार्गदर्शन में उत्कृष्ट शिक्षा का संकल्प लिए वर्तमान में प्रदेश के लगभग सभी विकास खंडों में स्वामी आत्मानंद शासकीय अंग्रेजी उत्कृष्ट माध्यमिक विद्यालय संचालित हो रहे हैं। स्कूल शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन का यह एक अभिनव प्रयास है जिसके माध्यम से गरीब

परिवारों के बच्चों के सपनों को नए पंख व नई उड़ान मिल रही है। जिले के स्वामी आत्मानंद शासकीय उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक वातावरण, उपलब्ध आदर्श शैक्षणिक सुविधाओं एवं उत्कृष्ट अध्ययन-अध्यापन द्वारा बच्चों का भविष्य स्वर्णिम हो रहा है। खास बात यह है कि जिले के ऐसे पालक जो कमजोर आर्थिक स्थिति की वजह से अपने बच्चों को महंगे अंग्रेजी निजी स्कूलों में शिक्षा दिलाने में समर्थ नहीं थे,रायगढ़ जिले के सभी नौ विकास खंडों में संचालित इन उत्कृष्ट शासकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों ने गरीब परिवारों के प्रतिभाशाली बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए एक सुनहरा अवसर दिया है एवं छात्र की प्रतिभा को निखारने एवं उन्हें राष्ट्रीय स्तर की सभी प्रकार की प्रतियोगिताओं के लिए काबिल बनाने का पुनित उद्देश्य लिए संचालित हो रहे इन सेजस विद्यालयों में पालकों एवं बच्चों का रूझान दिनों दिन बढ़ता जा रहा है ।

सरकारी व निजी स्कूलों के बीच पालक व समाज में स्थापित नजरिए के संदर्भ में श्री आदित्य कहते हैं सरकारी व निजी स्कूलों के विषय में पालकों के बीच अपने अलग अलग नजरिए स्थापित हैं, जिसे बदलने के लिए शायद किसी प्रत्यक्ष अनुभव की दरकार होगी। वस्तुतः ऐसा अनुभव जो आपको आपकी बहुत सारी पुरानी मान्यताओं पर फिर से सोचने के लिए मजबूर कर दे। सरकारी विद्यालयों में जहां हर तबके के पालकों व बालकों पर भारी भरकम स्कूली फीस का आर्थिक बोझ डाले बिना बेहतरीन शैक्षणिक वातावरण, आदर्श सुविधाएं, योग्य शिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकों के द्वारा उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण में खेल एवं अन्य पाठ सहगामी व कलात्मक गतिविधियों के माध्यम से नौनिहालों की रचनात्मकता को नया आयाम देते हुए उन्हें राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए काबिल बनाने व उनके सर्वांगीण विकास का उद्देश्य लिए उन्हें एक बेहतर नागरिक बनाने का सतत प्रयास किया जा रहा है

शासकीय विद्यालयों की स्थिति में सुधार की संभावना या खामियों को दूर करने की दिशा में प्रयास की आवश्यकता के संदर्भ में श्री आदित्य का कहना है - शिक्षा हर समाज व देश की प्रगति का प्रतिबिंब है। वास्तविक शिक्षा मानवीय गरिमा और व्यक्ति के सम्मान में वृद्धि करती है। उत्कृष्ट शिक्षा के द्वारा ही बच्चों में जन्मजात शक्तियों का विकास कर उनके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन कर उन्हें सभ्य, सुसंस्कृत, एवं योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। हर मनुष्य के जीवन एवं विकास में प्रारंभिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यही कारण है कि, प्राथमिक शिक्षा की नींव को मजबूत करना आवश्यक है। इस हेतु शिक्षा की गुणवत्ता की सही सही स्थिति का ज्ञान, नियमित अंतराल पर नौनिहालों व विद्यालय की प्रगति पर ध्यान रहे। बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता हो। समाज को संवेदित करना, बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों हेतु और अधिक सुधार हेतु प्रयासरत रहते हुए कार्यक्रम व रणनीति निर्धारित करना, अपेक्षित दक्षता हासिल न कर पाने वाले बच्चों के लिए उपचारात्मक निदानात्मक कदम, बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों के प्रति शिक्षकों, शिक्षा प्रशासन जनप्रतिनिधि व समाज को उत्तरदायी बनाया जाना व अपेक्षित आवश्यक सुधार की संभावनाओं को लिए विद्यालयीन शिक्षा को पालक व समुदाय के साथ जोड़ना, पालक-बालक-शिक्षक संपर्क हमारी प्राथमिकता में होना चाहिए। शिक्षक विद्यालय के प्रति स्वामित्व का भाव लिए स्वप्रेरित होकर, विद्यालय और नौनिहालों के सर्वांगीण विकास हेतु सतत प्रयासरत रहे यह सर्वथा अपेक्षित है। रायगढ़ जिले में शासन की विभिन्न योजनाओं जैसे सरस्वती सायकल योजना, निःशुल्क गणवेश पाठ्य पुस्तक, छात्र सुरक्षा बीमा, छात्रवृत्ति, महतारी दुलार योजना, स्वामी आत्मानंद स्कूल, आरटीई, समावेशी शिक्षा, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, बालवाड़ी कार्यक्रम,सीख कार्यक्रम ईजीएल कार्यक्रम, मॉडल शौचालय,शाला बस्ता विहीन विद्यालय,रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा शिक्षण आदि योजनाओं द्वारा जिले के हजारों बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं।

अपनी संस्था को बनाएं एक आदर्श विद्यालय

भोजराम पटेल
प्र. प्राचार्य
शा.उ.मा.वि. तारापुर

प्रत्येक शिक्षक, पालक और विद्यार्थी चाहता है कि उनका विद्यालय एक आदर्श स्वरुप में हो जहाँ अध्ययन अध्यापन के साथ - साथ बेहतर शैक्षिक व गैर शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता, अधोसंरचना बच्चों के लिए पेयजल की व्यवस्था छात्र छात्राओं व शिक्षकों के लिए समुचित प्रशाधन सुविधा, पुस्तकालय और प्रयोगशाला का रख रखाव इनका सदुपयोग, विद्यालय परिसर में स्वच्छता और पर्यावरणीय परिस्थिति, जल संरक्षण व कचरा उन्मुलन के लिए आवश्यक उपाय जैसे बिंदु किसी विद्यालय के लिए एक आदर्श स्वरुप के आधार हो सकते है । इन साधन सुविधाओं की उपलब्धता और संधारण विद्यालय के शिक्षक व संस्था प्रमुख के साथ - साथ प्रत्येक विद्याथ का दायित्व होता है । एक आदर्श संस्था के लिए यह लोगों की अपेक्षा भी होती है ।

विद्यालय को आदर्श रुप देने में शिक्षक की भूमिका

किसी भी विद्यालय को एक आदर्श स्वरूप देने के लिए शिक्षकों में समर्पण का भाव होना आवश्यक होता है। यह समर्पण भाव अपने शैक्षणिक कर्तव्य निर्वहन से लेकर गैर शैक्षणिक दायित्वों निर्वहन में भी अग्रणी भूमिका निभाने तक शामिल है। बच्चों के सर्वांगीण विकास में मैं क्या कर सकता हूँ ? यह चिंतन एक शिक्षक के मन मस्तिष्क को सदैव आंदोलित करते रहना चाहिए। एक शिक्षक से समाज, विद्यार्थी व अपने सहकर्मियों के साथ उच्चाधिकारियों की जो अपेक्षाएँ है उस पर खरा उतरने का प्रयास शिक्षक की अहम भूमिका को पुष्ट करते हैं । शिक्षक पूजनीय एवं सम्माननीय होगा यदि-

- वह समय पर विद्यालय पहुंचे, समय पर कक्षा में उपस्थिति भी दे !
- वह अपने विषय का गहन अध्ययन कर अध्यापन कार्य करें।
- वह समय व परिस्थिति के साथ खुद को अद्यतन (अपडेट) करें।
- वह छात्र - छात्राओं से मधुर संबंध बना कर कर्तव्य निर्वहन करे ।
- वह अपने पहनावा तथा आचरण से सकारात्मक संदेश दे ।
- वह अध्यापन कार्य में नवाचार का प्रयोग कर विषय वस्तु को सुगम बनाने का प्रयास करे ।
- अपने सहकर्मियों से सकारात्मक चर्चा व चिंतन कर विद्यालय में स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाये ।
- विद्यालय को स्वच्छ सुंदर आकर्षक बनाने की दिशा में कार्य करे विद्यालय के प्रतिविधियों एवं आयोजित कार्यक्रमों में अपनी भूमिका निभाये।
- वह शिकायत निंदा व चुगली से दूर रहकर स्वाध्याय व विषय अध्ययन अध्यापन के प्रति चिंतन करें।

'एक आदर्श शिक्षक के रूप में, जो लोगों कीअपेक्षाएं है उसे पूरा करें ।

शिक्षा हमें अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाती है।

शाला प्रबंध समिति की जागरुकता :

विद्यालय में बेहतर व्यवस्था के लिए प्रत्येक संस्था में शाला प्रबंध समिति के गठन का प्रावधान है सभी विद्यालयों में इसकी कार्यकारिणी भी है जिसमें जनप्रतिनिधियों के साथ विद्यालय के प्रधान व शिक्षकों की सहभागिता है। यह बात अलग है कि यह समिति कहीं महज कागजी है तो कहीं राजनीतिक प्रपंच में उलझी हुई है। यदि हमारे शिक्षकों के साथ जनप्रतिनिधि स्कूल की स्थिति बेहतर बनाने का संकल्प ले लें तो स्कूलों का काया कल्प हो सकता है। संकल्प के साथ ईमानदार प्रयास का भी होना आवश्यक है। अधिकतर विद्यालयों में शाला प्रबंध समिति की भूमिक महज राष्ट्रीय पर्व एवं किन्ही आयोजनों के अवसर पर चर्चा परिचर्चा के बाद स्वल्याहार और इति श्री ...! शाला प्रबंध समिति एक निगरानी समिति के रूप में विद्यालय में अध्ययन अध्यापन के निरीक्षण, विद्यालयों में संसाधनों के संरक्षण, स्कूल के साधन सुविधाओं के विकास विस्तार की दिशा में भी अपनी भूमिका निभाये स्कूल के शिक्षकों के साथ मधुर संबंध बनाकर उन्हें कर्तव्य निर्वहन के लिए प्रेरित करें तो यह सोने पे सुहागा वाली बात होगी।

विद्यालय में भौतिक संसाधनों का हो संरक्षण

प्रायः देखा जाता है शिक्षक व जिम्मेदार लोग विद्यालय के भौतिक संसाधन जिसमें खेल सामग्री से लेकर सुविधा व आराम प्रदान करने वाली भौतिक वस्तुएँ कुर्सी टेबल, पंखा कूलर के साथ पेयजल के लिए लगाए गए नलों की टोटी से लेकर कम्प्युटर, प्रिंटर आलमिरा जैसे चीजों को जिस प्रकार सुरक्षित और व्यवस्थित रख रखाव किया जाना चाहिए उसमें हम विफल होते है । इसके पीछे कारण यह हो सकता है कि हम इन साधनों व सुविधाओं के स्वयं को भोक्ता तो समझते है पर अपनत्व भाव नहीं रखते । मेरा क्या जाता है ? मुझे क्या करना है ? कौन से मेरे घर का है ? जैसे भाव इन भौतिक संसाधनों के असुरक्षित रखने के लिए जिम्मेदार होते है ? इस तरह की परिस्थिति से बचने का प्रयास किया जाना चाहिए ? शासन से हमें जो भी सुविधा व सामग्री प्राप्त होती है उसके संरक्षण व व्यवस्थित रख - रखाव हमारी नैतिक व सामूहिक जिम्मेदारी है । इस जिम्मेदारी का निर्वाह करके ही हम अपने संस्था को आदर्श रूप दे सकते हैं।

छात्र–छात्राओं में नैतिक गुणों का विकास

पुस्तकीय ज्ञान और दक्षता में विकास कर देना ही एक विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास नहीं माना जा सकता विद्यार्थियों में नैतिक व व्यवहारिक गुणों का विकास भी आवश्यक है । इसलिए कक्षा में विषय शिक्षण के साथ साथ हमारे उच्च आदर्श व नैतिक गुणों तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना भी विद्यार्थी के मन - मस्तिष्क में होना जरूरी है इसके लिए हमें महापुरूषों के जीवन चरित्र, आदर्श व्यक्तित्व तथा व्यवहारिक ज्ञान के माध्यम से छात्र-छात्राओं में नैतिक गुणों को विकसित करने का अभ्यास और प्रयास करना तथा उन्हें गौरवशाली परंपरा व सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने वाले मानवीय मूल्यों से संबंधित व्यवहारिक ज्ञान को आत्मसात करने की शिक्षा देना हमारे संस्था का अभिन्न अंग होना चाहिए। अपने गौरवशाली इतिहास, मार्गदर्शक सिद्धांतों के द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक व्यवहारिक व चारित्रिक गुणों के स्थापना की दिशा में सार्थक पहल करें विद्यार्थियों को भी संकल्प दिलाये कि वे अपने भीतर मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करें तभी हम आदर्श बन सकते हैं।

शिक्षा स्वतंत्रता के स्वर्णद्वार खोलने की कुंजी है।

संस्था में पुस्तकालय व प्रयोगशाला हो सुव्यवस्थित

हमारी संस्था चाहे प्राथमिक, माध्यमिक हो या हाई अथवा हायर सेकेण्डरी पुस्तकालय अनिवार्य रूप से होना ही चाहिए। पुस्तकालय को सच्चा देवालय कहा जाता है और यह सच भी है । विद्यालयों में पठन - पाठन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से शासन द्वारा समय समय पर ज्ञानवर्धक पठनीय संग्रहणीय पुस्तकें पुस्तकालय हेतु उपलब्ध कराये गए है । पुस्तकालयों का उचित संधारण व नियमित संचालन नहीं होने के कारण बहुत से विद्यालयों में पुस्तकें शिक्षक स्टॉफ व विद्यार्थीयों के लिए उपयोग न होकर दीमक व अन्य किटाणुओं के काम आ रहे है जो अत्यंत दुर्भाग्य का विषय है । प्रयोगशाला प्रायः उच्च एवं उच्चत्तर स्तर में पाये जाते है किन्तु देखा गया है ज्यादातर स्कूलों में प्रयोगशालाओं का समुचित संधारण न हो पाने के कारण न तो प्रयोगशालाओं के उपकरण सुरक्षित है और इन प्रयोग शालाओं में प्रेक्टिकल भी सही ढंग से नहीं हो पा रहे जिससे विज्ञान विषय से सम्बद्ध विद्यार्थी प्रयोगशाला के लाभ से बंचित हैं। जो प्रयोगशाला हमारे विद्यार्थियों के अनुसंधान प्रतिभा के पोषक और शोध वृति के अंकुरण का प्रथम केन्द्र हैं, वहीं सुव्यवस्थित प्रयोगशाला के अभाव में हमारे भावी वैज्ञानिक न अनुसंधान कर्ता अंकुरित होने के पहले ही संकुचित हो जाते है ।

एक आदर्श विद्यालय के लिए वैसे तो कुछ अपेक्षाएं हैं जिनमें से हम कुछ चुने हुए एवं अहम तथ्यों को रेखांकित किये है हो सकता है आपके मन मस्तिष्क में भी कुछ और महत्वपूर्ण बातें हो जो हमारे सोच की परिधि में न आ पाये हो हम उन तथ्यों को भी स्वीकार करते हैं अपनी संस्था को आप आदर्श स्वरूप देने के लिए स्वतंत्र है अपनी दक्षता और क्षमता के अनुरूप ... शिक्षक - शिक्षार्थी - शिक्षालय और पालकों के चतुष्कोण के भीतर ... विद्यालय का रेखांकन आपके हाथों की कला पर निर्भर है

एनएसएस, एनसीसी तथा रेडक्रास जैसी इकाईयाँ हो संचालित

विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास हो इसके लिए किताबी ज्ञान के साथ सहपाठयेत्तर गतिविधियां जैसे खेल कूद, साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन आवश्यक होता है वहीं छात्रों में सेवा अनुशासन एकता राष्ट्रप्रेम जैसी भावना को स्थापित करने के लिए एनसीसी एवं एनएसएस जैसे व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देने वाली ईकाइयां विद्यालयों में अनिवार्य रुप से स्थापित होनी चाहिए इनका कुशल संचालन अहम होता है। जिस विद्यालय में एनसीसी, एनएसएस की ईकाइयां सक्रिय रुप से कार्यरत रहती हैं वहां के विद्यार्थी प्रायः अन्य संस्थाओं की तुलना में प्रतियोगी परीक्षा एवं प्रदर्शनों में अपना बेहतर सिद्ध करने में सफल देखे गए हैं। इस प्रकार एक संस्था को असरकारी बनाने में एनसीसी, एनएसएस एवं रेडक्रास जैसे संगठनों का संचालन बहुत आवश्यक है।

शिक्षा का सही उद्देश्य तथ्यों का नहीं बल्कि मूल्यों का सही ज्ञान होता है।

परिवेश में कैसे हो शिक्षक का कार्य व्यवहार?

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक की भूमिका

मिनेश कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)
किरोड़ीमल शास. कला एवं
विज्ञान महाविद्यालय रायगढ़ (छ.ग.)

समाज में एक शिक्षक की भूमिका जागरुक तथा आदर्श नागरिक की होती है जिनके आचरण व्यवहार, भाषा शैली का अन्य लोग भी अनुसरण करते हैं। शिक्षक की पहचान व ख्याति उसके विद्यार्थियों से होती है। प्रारंभ से ही भारत में अर्जुन तथा गुरू द्रोण, चन्द्रगुप्त मौर्य तथा चाणक्य जैसे महान गुरुओं तथा शिष्यों की परम्परा रही है। शिक्षक का जीवन अपने आप में सादगीपूर्ण तथा विचारशील कर्तव्य निष्ठा के कारण एक जीवंत संदेश होता है।

विद्यार्थी किसी भी समाज के आने वाले भविष्य की उज्जवल आभा के द्योतक होते हैं। किसी भी समयकाल के विद्यार्थियों की मेधा के स्तर सक्रियता तथा संलग्न गतिविधियों तथा प्राप्त परिणाम को देखकर आप उस समय की परस्थितियों की थाह पा सकते हैं

विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास से आशय उनके मानसिक शारीरिक तार्किक, वैज्ञानिक, रचनात्मक तथा नवोन्मेषी विकास से है। शिक्षक की हर गतिविधि का विद्यार्थी अनुसरण करते हैं। इस अर्थ में शिक्षक की भूमिका बहुआयामी हो जाती है। शासकीय विद्यालयों में प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से चयनित उत्कृष्ट व्यक्तित्व शिक्षक के रुप मे नियुक्त हो पाते हैं। विद्यार्थियों के सर्वागीण तथा समावेशी विकास के लिए उनसे इन गतिविधियों को संपादीत करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहीत किया जाना चाहिए -

- **पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न क्षेत्रों से संबद्ध पत्र-पत्रिका एवं पुस्तकों का दैनिक पठन-पाठन शारीरिक गतिविधियां जिनमें खेलकूद, योग अनिवार्य रुप से शामिल हों।**
- **सामाजिक विकास के लिए उन्हें एन.एस.एस, एन.सी.सी. स्काउट-गाइड, इको क्लब, रेडक्रास जैसे स्वयं सेवी विद्यार्थी संगठनों से जुड़ने हेतु अपील करें।**
- **विज्ञान के प्रयोगों को प्रयोगशालाओं से परे दैनिक जीवन के क्रियाकलापों से जोड़ा जाना चाहिए जिनसे उनकी जिज्ञासा का स्तर बढ़े।**
- **सामाजिक विज्ञान के प्रयोगों के लिए उन्हें समाज को एक प्रयोगशाला मानकर समाज के बेहतरी के लिए समाजोपयोगी शैक्षणिक गतिविधियां कराएँ।**
- **विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाना चाहिए जिससे नेतृत्व व सामाजिक सद्भाव का गुण विकसित किया जा सके।**
- **परिसर के स्वच्छता को स्वतःस्फूर्त तरीके से एक विद्यार्थी मुहिम में परिणित किया जाना चाहिए ।**
- **स्कूल में सामूहिक पठन पाठन हेतु प्रेरित किया जाए ।**

ज्ञान, कर्म एवं भक्ति इन तीनों का संगम ही जीवन का तीर्थराज है।

- विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों (गायन, नर्तन, अभिनय) के माध्यम से प्रतिभा पोषण का कार्यक्रम होना चाहिए।
- कक्षा के अंतिम विद्यार्थी को भी सारी गतिविधियों में से जिनमें वह रुचि रखता हो शामिल किया जाए ।
- परिसर में हरियाली का प्रसार किया जाए जिससे विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़े ।
- विभिन्न प्रतियोगिताओं (भाषण, वाद-विवाद, निबंध, प्रश्न मंच) का विशेष दिवसों पर सतत् आयोजन कराना चाहिए जिससे उनके मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माहौल तैयार हो।
- स्थानीय स्तर पर प्रचलित कलाओं के प्रति उनमें रुचि के स्तर को बढ़ाने हेतु उन्हें नियमित रुप से प्रशिक्षण दिलाया जाए जिससे उनमें कोशल विकास को सुनिश्चित किया जा सके।
- उस स्कूल के ऐसे पूर्व छात्र जो वर्तमान में समाज में विशिष्ट व उल्लेखनीय भूमिकाओं को निर्वहन कर रहे हों, उनके साथ मिलन समारोह आयोजित किया जाए जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़े व मनोबल ऊँचा हो सके ।
- कैरियर गाइडेंस, कौशल विकास कार्यशाला, प्रेरक शैक्षणिक गतिविधियों तथा प्रोजेक्टर्स के माध्यम से उनमें नवोन्मेषी सोच तथा उत्कृष्ठ दक्षता का विकास किया जाना चाहिए जिससे उनका बहुआयामी तथा सर्वांगीण विकास संभव बन सके।

उपरोक्त सुझाए गए बिन्दुओं के सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यकता इस बात कि शिक्षक स्वयं पठन-पाठन में रुचि रखें कार्यशालाओं व गोष्ठियों में भाग ले, नए पुस्तकों को पढ़े समाचार पत्र-पत्रिकाओं का नियमित पठन करें तथा सामाजिक गतिविधियों में भाग लें। एक अच्छा शिक्षक विभिन्न नवाचारी माध्यमों तथा शिक्षण सामग्रियों के निर्माण के द्वारा विद्यार्थी के चिंतन, लेखन तथा अन्य क्षमताओं का विकास कर सकता है तथा विद्यार्थी निरंतर अभ्यास के माध्यम से सीखे गए ज्ञान व कौशल में प्रवीणता के स्तर को प्राप्त कर सकता है।

शिक्षक एक अच्छा विद्यार्थी स्वयं हो, जिज्ञासु हो, नवोन्मेषी हो, नवाचारी हो तभी वह विद्यार्थी के भीतर छुपी हुई प्रतिभा के विकास को संभव बना कर उसे रचित क्षेत्र में आगे बढ़ने में एक सच्चे पथ प्रदर्शक, प्रेरक व्यक्तित्व की भूमिका का निर्वहन कर देश के लिए एक सफल, सशक्त, चरित्रवान नैतिक व्यक्तित्व का निर्माण कर सकेगा। भारतीय गुरु शिष्य की अमूल्य परंपरा जिसमे शिष्य की सफलता की खुशी उसके गुरु को सर्वाधिक होती है, वह सदैव अक्षुण्ण बनी रहे तथा समय के साथ और भी मजबूती से स्थापित हो सके।

"किसी भी प्रकार का भय
और अधूरी इच्छा ही
हमारी दुखों का कारण है।"

स्वामी विवेकानन्द

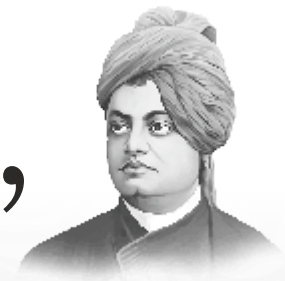

यदि आप दृढ़ संकल्प और पूर्णता के साथ काम करेंगे तो सफलता निश्चित है।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक की है अहम् भूमिका

सत्य की खोज का केन्द्र में होता है अध्यापक

विद्यार्थी किसी भी देश के भविष्य होते हैं और इस भविष्य का निर्माण करने वाला शिक्षक होता है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा शिक्षक ही देता है। छात्रों को नैतिक सामाजिक और आध्यात्मिक रुप से गढ़ने में शिक्षक का योगदान एक शिल्पकार की भांति होता है। एक शिक्षक ही बच्चों को अपनी क्षमताओं के अनुरुप एक बेहतर नागरिक बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास करता है। शिक्षक ही बच्चों की योग्यता, क्षमता, अभिरुचि, आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। वह विद्यार्थियों को ज्ञान व क्रिया का अधिगम तथा अवबोध कराने के लिए उचित वातावरण तैयार करता है ताकि विद्यार्थी अपना सुनहरा भविष्य गढ़ सके।

वर्तमान शिक्षा मनोविज्ञान के प्रभाव ने शिक्षा को बाल केन्द्रित बना दिया है। ऐसे में आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक, शिक्षक होने के साथ-साथ अभिभावक, नेता, निर्देशक सहयोगी, सलाहकार तथा निष्पक्ष निर्वाचक जैसे अनेक भूमिकाओं का निर्वहन एक साथ करता है । शिक्षक का कर्तव्य केवल छात्रों को शिक्षित करना ही नहीं है अपितु उन्हें संस्कारी भी बनाना है। विद्यार्थी को शब्द ज्ञान के अतिरिक्त उसे नैतिकता, कर्तव्य परायणता सजगता का पाठ पढ़ाना भी अत्यंत आवश्यक हो गया है। शिक्षक का कार्य केवल पाठ पढ़ाना ही नहीं होता है, अपितु पाठ को पढ़कर या पढ़ाकर उसमें आयी उद्देश्यात्मकता, नैतिकता, आदि को समझाना - सिखाना भी उसी का ही कर्तव्य होता है। पाठ को पढ़कर समझने की सार्थकता तभी है जब उसे ज्ञान को व्यवहार में भी परिणित किया जा सके।

गाँधी जी ने 'सत्य के मेरे प्रयोग' पुस्तक में बताया है कि जो कार्य हम स्वयं करते हैं उस कार्य को बच्चों को करने से कैसे मना कर समते है। इसलिए गाँधी जी शिक्षक के चरित्र और उसके द्वारा विद्यार्थीयों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते थे। शिक्षक का जीवन उसके विद्यार्थियों के लिए एक जीवंत संदेश है। शिक्षक बच्चों को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित ना रखे बल्कि उन्हें अन्य विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से जोड़कर उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करे। उन्हें संवेदनशील, समाज दर्शक तथा बेहतर नागरिक बनाकर समाज की छोटी से छोटी चीज से जोड़ा जाए एवं उन्हें हर उस बात, घटना, विचार, भावना को समझाएँ जिससे उन्हें अपने परिवेश, समाज से जुड़ने व समाज को समझने में मदद मिले। नयी शिक्षा नीति विद्यालयों एवं शैक्षिक संस्थाओं में अधिकाधिक स्वायत्ता की वकालत करती है और पूरी शिक्षण प्रक्रिया में दायित्वबोध की बात करती है। शिक्षकों को शिक्षण विधि एवं पाठ्य-पुस्तकों के चयन एवं विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तो मिलनी ही चाहिए जिससे वे उन्मुक्त और स्वतंत्र वातावरण में शिक्षण एवं शोध कार्यो को प्रोत्साहन दे सकें।

शिक्षक की भूमिका एक नेता की है जो विद्यार्थियों का नेतृत्व करता है, उन्हें सही दिशा निर्देश देता है। समाज और समय की माँग के अनुरुप विद्यालय में अनेकानेक क्रियाओं का आयोजन करता है, विद्यार्थियों की विचार- शक्ति को उत्प्रेरित करता है, अनेक प्रकार के मार्गो का उल्लेख करता है और उन्हें सही मार्ग का चयन करने में सहायता करता है। बच्चे को समझना, उसकी वास्तविक योग्यता, क्षमता का पता लगाना, उसकी रुचि को जानना व्यक्तित्व को पहचानना, गुणों व कमियों को जानना और उसके आधार पर उसकी अध्ययन योग्यताओं का अनुमान करके सही दिशा निर्देश देना एक शिक्षक का आधारभूत कार्य है। शिक्षक की योग्यता, कार्य करने की क्षमता, शिक्षण कला विधियों की जानकारी, कौशलों की जानकारी तथा कम से कम प्रयत्न में सरलता से ज्ञान संप्रेषण कौशल यह सब शिक्षक की विशेषज्ञ भूमिकाएँ हैं। आज शिक्षक के लिए

केवल विषय ज्ञान पर्याप्त नहीं है, विद्यार्थियों की समझना, विषय की प्रकृति को समझना, समाज की वर्तमान व भावी आवश्यकताओं को समझना और उसके अनुरुप विद्यार्थी में अनुकूल शैक्षिक वातावरण व प्रौद्योगिकी एवं यांत्रिकी उपकरणों के प्रयोग द्वारा ज्ञान का विकास करना विशेषज्ञ की भूमिका कहलाएगी ।

एक शिक्षक में अपने भूमिका के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। शिक्षक को जीवन भर अध्ययन करते रहना चाहिए। उसे शिक्षण व बच्चों में रुचि होना चाहिए। उसे ना सिर्फ विषय की सैद्धांतिक बातें पढ़नी चाहिए बल्कि वैद्यार्थियों में हमारी महान सभ्यता की विरासत और सामाजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षक छात्रों का ऐसा विकास करे कि वे बिना किसी शिक्षक की सहायता लिए स्वयं सीखने में सक्षम हो सकें। ज्ञान प्राप्ति के लिए चिंतन एवं कल्पना की स्वतंत्रता आवश्यक है और इसके लिए शिक्षक को उपयुक्त माहौल का निर्माण करना चाहिए। ज्ञानार्जन की पूरी प्रक्रिया का परिणाम यह होना चाहिए कि व्यक्ति में पेशेवर क्षमता का विकास हो और उसमें इस आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति का उदय हो कि दृढ़तापूर्वक सारी बाधाओं को पार कर एक रुप रेखा का विकास कर सके व शिक्षक इस कार्य में सहायता करता है। शिक्षक के शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्र निर्माण की क्षमताएँ पैदा करना है। अंततः शिक्षा का उद्देश्य है- सत्य की खोज। इस खोज का केन्द्र अध्यायक होता है जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से जीवन में व्यवहार में सच्चाई की सीख देता है। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक विद्यार्थी शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थो में ग्रहण कर मानवीय गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है तो मौजूदा इक्कीसवीं सदी में दुनिया में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व तथा वसुधैव कुटुम्बकम की भावना अपना मूर्त रुप ले सकेंगी।

(विभिन्न शिक्षण शोध पत्रों पर आधारित संकलन)

संकलन : **श्री मीनेश कुमार पटेल**

शिक्षा, शिक्षक एवं समाज
नवचिंतन, एक नवीन दृष्टिकोण

जब तक जीवन है सीखते रहो, क्योंकि अनुभव ही श्रेष्ठ शिक्षक है।

शिक्षा संस्थानों की बेहतरी के लिए प्रबुद्ध शिक्षाविद्‌ों के विचार

सतीश कुमार पाण्डेय

स्कूल केवल सरकारी नहीं यह स्कूल हमारी भी है, का भाव जागृत हो

रायगढ़ के पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी एवं कार्यालय संयुक्त संचालक शिक्षा संभाग सरगुजा में उप संचालक सतीश कुमार पाण्डेय सरकारी स्कूलों को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों में अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण के साथ अपनत्व के भाव को आवश्यक मानते हैं। श्री पाण्डेय का कहना है जब शिक्षक, पालक एवं विद्यार्थी शासकीय स्कूलों को अपना समझकर इसकी गतिविधियों में भागीदारी, कार्यक्रमों का संचालन एवं अध्ययन, अध्यापन के साथ छात्र-छात्राओं के बेहतर भविष्य को लक्ष्य बनाकर अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करेंगे तभी सरकारी स्कूल बेहतर बन सकेंगे बस यह विश्वास स्थापित करने की आवश्यकता है कि - **यह स्कूल केवल सरकारी नहीं यह स्कूल हमारी भी है।**

राजेश डेनियल

अधोसंरचना विकास एवं उत्तरदायित्व की भावना बढ़े शिक्षकों में

शासकीय चक्रधरनगर हायर सेकेण्डरी स्कूल रायगढ़ के प्राचार्य राजेश डेनियल जी का कहना है कि शासकीय स्कूलों को बेहतर बनाने के लिए अधोसंचरना का विकास शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के साथ पुराने हो चुके पाठ्यक्रमों को बदलकर अद्यतन करने तथा स्कूलों को पर्याप्त वित्त उपलब्ध कराने एवं शिक्षकों एवं प्रशासकों के बीच उत्तरदायित्वों की भावना का विकास होना चाहिए तभी हम शासकीय विद्यालयों को प्रभावशाली अर्थात असरकारी बना सकते हैं ।

भरतलाल पटेल

शासकीय संस्थाओं में भी नहीं है प्रतिभाओं की कमी

शा.उ.मा.वि. कुसमुरा, जिला - रायगढ़ के प्राचार्य भरतलाल पटेल का मानना है कि कम पैसे में अगर अच्छी पढ़ाई मिलेगी तो गरीब घर के बच्चे जिन्हें पढ़ाई में रुचि है और आगे कुछ बड़ा करना चाहते हैं, वो सरकारी सुविधाओं का फायदा उठाकर अपनी मंजिल प्राप्त कर सकते हैं तथा राष्ट्र के विकास में अपनी भूमिका अदा कर सकते हैं। बहुत से अभिभावक जो अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना चाहते हैं, प्राइवेट स्कूलों की भारी फीस के कारण सरकारी स्कूलों का सहारा लेते हैं। सरकारी स्कूलों में इन बच्चों को बेहतर सुविधा देकर हम इन बच्चों को प्रेरित कर सकते हैं। सरकारी स्कूल में भी ऐसी प्रतिभाएं होती हैं कि उन्हें उचित मार्गदर्शन मिले तो कि उनका रिजल्ट प्राइवेट स्कूल के बच्चों से भी अच्छा होता है तो यही विद्यार्थी भविष्य में अंबेडकर और कलाम जैसे बनकर राष्ट्र का सिर गर्व से ऊंचा करेंगे।

पी.एस. खोडियार

स्थिति और परिस्थिति के अनुसार अपेक्षाएं भी अलग-अलग ..

विविध कला एवं प्रतिभा से संपन्न सेवा निवृत्त प्राचार्य पी.एस. खोडियार जी का कहना है कि शासकीय स्कूलों को हम असरकारी बनाने के लिए कोई एक पैमाना या निश्चित गाईडलाइन तय नहीं कर सकते क्योंकि हर जगह अलग अलग स्थिति और परिस्थितियां हैं वहीं प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चस्तर की कक्षाओं के लिए भी अलग अलग मापदंड हो सकते हैं । इसलिए शिक्षक अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य निर्वहन देशकाल व परिस्थिति के अनुरुप करे तो स्कूल एवं बच्चे दोनों का भला हो सकता है।

प्रभाव बेहतर होने से अच्छा है स्वभाव बेहतर होना।

विरेन्द्र दुबे

मंजिल तक वहीं पहुंचते हैं जो ठोकर नहीं गिनते

वरिष्ठ व्याख्याता एवं शिक्षक संगठन के प्रदेश स्तरीय नेता श्री विरेन्द्र दुबे शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए अपने कर्तव्य निर्वहन के प्रति सजक रहने का आह्वान करते हुए यह भी अगाज करते है कि शिक्षक स्वयं अपने अधिकारों के लिए भी संघर्ष के रास्ते पर अग्रणी रहें जिससे उनके हितों की रक्षा हो और वें पुरे समर्पित भाव से अपना दायित्व निर्वहन करते हुए बच्चों के बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें। किसी ने कहा है -

कभी वो राह पे फेंके हुए पत्थर नहीं गिनते, सफर का शौक हो जिनको किलोमीटर नहीं गिनते।
उन्हें भी दर्द देती है सफर की मुश्किलें, लेकिन वो मंजिल तक पहुंचते है जो ठोकर नहीं गिनतें।

एम.ए. सिद्धिकी

समर्पण एवं ईमानदारी के साथ कर्तव्य निर्वहन करें शिक्षक

रायगढ़ जिला के पूर्वांचल स्थित महापल्ली हायर सेकेण्डरी स्कूल के सेवा निवृत्त प्राचार्य एम.ए. सिद्धिकी कहते है शिक्षा के प्रसार अंतर्गत सर्वव्यापी शिक्षा के साथ अब हमें शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान केन्द्रीत करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों में ज्ञान अर्जन सुनिश्चित करने के लिए संस्था प्रमुखों, आध्यापकों, विद्यार्थियों एवं पालकों को धैर्य के साथ समर्पित होकर ईमानदारी पूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है। वर्तमान में सर्व शिक्षा अभियान एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान जैसे योजनाओं के द्वारा विद्यालय एवं आध्यापकों में जरुरी कार्यक्रम चलाकर उन्हें दक्ष बनाया जा रहा है।

राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने वाले प्रथम शिक्षक दम्पत्ति

सच्चिदानंद पटनायक एवं श्रीमती सुभाषिनी पटनायक

ऐसे बहुत कम सौभाग्यशाली व्यक्ति होते हैं जिन्हें राज्य एवं राष्ट्रीय दोनों पुरस्कार के लिए चयनित होने का अवसर मिलता है और उसमें भी यदि पति-पत्नी दोनों को राज्य (राज्यपाल) एवं राष्ट्रीय (राष्ट्रपति) पुरस्कार का सौभाग्य मिले तो यह अति गौरव का विषय होगा। यह सौभाग्य रायगढ़ जिला के घरघोड़ा तहसील अंतर्गत सेवारत रहे पटनायक दम्पत्ति को प्राप्त हुआ है। अप्रैल 2021 में सेवा निवृत्त हुए शिक्षक सच्चिदानंद पटनायक एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुभाषिनी पटनायक उच्च वर्ग शिक्षक शासकीय कन्या पूर्व माध्यमिक शाला घरघोड़ा दोनों को राज्य एवं राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

प्रेरणा सम्पादक से चर्चा करते हुए पटनायक दम्पत्ति ने बताया कि विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण बनाने हेतु विषय वस्तु से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियों को चित्र व लेखन के माध्यम से दीवार पर पिंट रिच वातावरण निर्मित करने के साथ सहायक शिक्षण सामग्री बनाकर कठिन अवधारणाओं को सरल सुगम रुप में अध्यापन पालकों से मधुर संबंध बनाकर विद्यालय के भौतिक विकास में योगदान, खेलकूद व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों को उत्साह के साथ सम्मिलित कराना साथ ही शासन के विभिन्न योजनाओं को सक्रियता के साथ विद्यालय में लागू कराने, पुस्तकालय का भरपूर उपयोग करने जैसे कार्यो के आधार पर हमें राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत होने का सौभाग्य सुअवसर प्राप्त हुआ।

सच्चिदानंद पटनायक को वर्ष 1997 में यूनिसेफ द्वारा महत्व पत्र, वर्ष 2004 में जनगणना 2001 के लिए महामहिम राष्ट्रपति से रजत पदक सम्मान पत्र, वर्ष 2011 में माननीय राज्यपाल द्वारा एवं 2013 में महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जा चुका है। वहीं श्रीमती सुभाषिनी पटनायक को 2014 में महामहिम राज्यपाल एवं वर्ष 2016 में महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्रशस्ति पत्र प्राप्त हो चुका है। यह रायगढ़ जिला और संभवतः प्रदेश के प्रथम दम्पत्ति हैं जिन्हें यह दोहरा सम्मान मिला है।

स्वयं से परे हटकर अपना आंकलन करने की आवश्यकता

अप्प दीपो भव सुक्तियों के भाव भी कितने गहरे होते हैं, इनकी गहराईयों में डूबने पर पता चलता है कि हमारे विचारों में परिवर्तन लाने की अकूत क्षमता इसमें समाई होती है। हम अपने अध्ययन अध्यापन काल में कितने ही सुक्तियों को पढ़कर, पढ़ाकर अर्थ जानकर, बताकर आगे बढ़ते चले जा रहे हैं किन्तु इनके भावों को आत्मसात की बारी आती है तब हम सिफर हो जाते हैं । खैर .....भूमिकाओं को समेटते हुए विषय की ओर प्रवेश करते हैं ।

आज के परिपेक्ष्य में हम शैक्षणिक वातावरण को देखते हैं तो लगता है हम शिक्षकों को स्वयं से परे हटकर अपना आंकलन करने की आवश्यकता है, चिंतन करने की आवश्यकता है। यह बात तब और भी प्रासंगिक हो जाता है जब हम बहुत से शिक्षक साथी अपने उपलब्धियों के पारितोषिक स्वरूप एक सम्मान समारोह में सिरकत थे जहां हम सभी के भीतर नई उर्जा के श्रोत का संचार हो रहा था तब हमारा मुखिया सार्वजनिक रूप से हमारा आंकलन करते हुए कहता है कि हम बहुत अच्छा कर रहे हैं किन्तु हमें और भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है और यह बहुत कुछ का अभिप्राय ..... जब हम शैक्षणिक वातावरण के इस दौर में पदार्पण करते हैं तो शासकीय विद्यालयों की स्थिति, शिक्षकों की गुणवत्ता, विद्यार्थियों की दक्षता पर दृष्टि डालते हैं तो हमारे अंदर संतुष्टि का भाव दृष्टिगोचर नहीं होता। कमोबेश यह भी देखा जाता है कि शिक्षक-शिक्षिकाएं विद्यार्थियों के अंदर अपने प्रति सम्मान का भाव, आदर का भाव नहीं भर पाते। आज विद्यार्थी शिक्षक के महत्व को नहीं समझते। उनकी शिकायत रहती है कि विद्यार्थी अभिवादन तक नहीं करते। इसे भी बताना पड़ता है और बोलना भी पड़ता है। जहां हमारे पास उपलब्धियों के अंबार हो सकते है वहीं इन नैतिकता के क्षरण रूपी अनुपलब्धियों का श्रेय भी तो हमें लेना पड़ेगा। जब व्यक्ति अपने चरित्र से व्यक्तित्व को उंचा उठा लेता है तो सम्मान मांगने की आवश्यकता नहीं पड़ती, सम्मान खुद ब खुद मिलने लगता है।

आज शिक्षक अपने महान दायित्व को भूलकर शिक्षकीय कार्य को जीवनोपार्जन का साधन मात्र समझता है। जीवनोपार्जन का जरिया समझना अच्छी बात है किन्तु अपना मूल लक्ष्य जो शिक्षा देना है उसे पहले महत्व देना चाहिए। अर्थ पीछे पीछे स्वयं आ जाएगा। आज शिक्षक बच्चों के पास पुस्तक में दिए हुए पाठों को पढ़कर सुनाने के बाद अपने कर्तव्यों का इत्योम् समझते हैं। उनकी यह शैली पुस्तक में दिए गये पाठ को पढ़कर दुहरा तो सकता है किन्तु विद्यार्थी के हृदय को स्पन्दित नहीं कर सकता। हम जानते हैं कि जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपक को जला सकता है उसी प्रकार चरित्रवान शिक्षक ही चरित्रवान विद्यार्थी का निर्माण कर सकता है। हम शिक्षक अपने शिष्यों को बहुत कुछ कहते रहते हैं किन्तु हमारा आचरण बहुधा हमारे कथन के विपरीत होता है। हम उन्हें कहते हैं- "Do what I say, dont do what I do" तुम वह करो जो मै कहता हूं तुम वह मत करो जो मै करता हूं ''। किन्तु मनोविज्ञान इसके विपरीत कहता है। बात को सुनकर, सुनने वाला पहले यह देखता है कि कहने वाला स्वयं उसके ऊपर आचरण करता है कि नहीं। यदि कहने वाले का आचरण उसके विपरीत है तो वह आचरण नहीं करेगा। विद्यार्थियों के उच्चश्रृंखलता का यह एक मुख्य कारण है। इन सब के बीच हम शासकीय शिक्षकों के पास विद्यालय व विद्यार्थियों की इस स्थिति के प्रश्नवाचक चिन्ह पर बहुत से तर्क मौजूद होते हैं। यह तर्क पहाड़ सी परिस्थिति के आगे महान योद्धा की भांति डटे रहने का भाव सा होता है जबकि वह परिस्थिति के आगे घुटने टेकने जैसा है। क्या हम इन परिस्थिति जन्य कारकां के आगे महात्मा बुद्ध के संदेश अप्प दीपो भव को शिरोधार्य कर राष्ट्र निर्माता के महान भूमिका के साथ न्याय करने को उद्यत नहीं हो सकते ?

राजीव गुप्ता
'व्याख्याता'
शा.उ.मा.वि.कटाईपाली (सी)
जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

मार्गदर्शन सही हो तो दिये का प्रकाश भी सूरज का काम कर जाता है।

स्कूल के सामग्रियों की सुरक्षा अपने घर की तरह करें

श्रीमती पुष्पांजलि दासे
व्या.हिन्दी / कार्यक्रम अधिकारी रासेयो
शा.उ.मा.वि. बड़े भण्डार (पुसौर)

प्रायः स्कूलों में संसाधन तो बहुत होते है परंतु इनका सही ढंग से संरक्षण व संधारण नहीं होने से या तो अनुपयोगी पड़े रहते हैं या कचरा अथवा अवशेष में बदलकर स्कूल का जगह घेरते हैं । हो सकता है इन साधनों में गुणवत्ता याने क्वालिटी का अभाव हो और समय से पूर्व इन साधनों को हमें कचरा मे तब्दील होते देखना पड़ा हो! परंतु हम इस विषय पर सकारात्मक सोच को अपने शिक्षकों में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं हमने इस संसाधनों के रख-रखाव एवं उपयोग में कितनी सावधानी बरती, इनके सुरक्षा के प्रति कितनी गंभीरता दिखाई यह भी सोच सकते हैं ।

बहुत से विद्यालय ऐसे है जो अपने स्तर पर स्कूल के लिए कई प्रकार के संसाधन जुटाने में सफल होते है इनमें कुर्सी टेबल से लेकर पेयजल की व्यवस्था एवं पानी टंकी निर्माण, शौचालयों का निर्माण, कम्प्यूटर इत्यादि की व्यवस्था, बच्चों के लिए खेल सामग्री इत्यादि । इनमें से बहुत से साधन स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा भी उपलब्ध कराये जाते है और फण्ड की सीमा निश्चित होने के कारण कई बार शिक्षा संस्थानों को यह नसीब नहीं होता परंतु जहां के संस्था प्रमुख एवं शिक्षक जागरुक, सामाजिक स्तर से ये सामग्री व्यवस्था कर लेते है । यह बहत अच्छी बात है, परंतु हमें शासन से आबंटित सामग्री साधन सुविधाओं का सम्यक संरक्षण करने की जिम्मेदारी को समझना बहुत आवश्यक है जिस साधन सुविधा को नीजि शिक्षण संस्थान मोटी रकम लेकर विद्यार्थियों को उपलब्ध कराते है उन्ही साधन सुविधाओं को यदि हम सरकार के स्कूल शिक्षा विभाग को प्राप्त बजट से पाते है तो यह हमारा नैतिक दायित्व बनता है कि हम इन साधन सुविधाओं को सुरक्षित और उपयोगी बनाये रखें ।

एक शिक्षक के सर्वगुण सम्पन्न होने की अपेक्षा की जाती है और यह अपेक्षा गलत भी नहीं है यदि छात्र के विद्यमान गुण को उसकी प्रतिभा को शिक्षक संबल देकर प्रोत्साहित करता है तो यह विद्यार्थी के बेहतर भविष्य की दिशा में बहुत बड़ी पहल होती है और विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए उसे विद्यालय में स्वच्छ सुंदर परिवेश तथा आवश्यक साधन सुविधाओं की उपलब्धता आवश्यक होती है । इसमें शिक्षक का दायित्व भी अहम् होता है । विद्यालय के पुस्तकालय में स्थित पुस्तकें हो या प्रयोग शाला में आवश्यक सामग्री बच्चों के खेलने के लिए जरुरी खेल सामग्री हो अथवा उनके कम्प्यूटर ज्ञान के लिए आधुनिक तकनीकी शिक्षा के साथ कम्प्यूटर लैपटॉप की उपलब्धता ये सब जरुरी है । विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रुप से जहाँ शासन कई बार लेपटॉप तो कई बार विशेष तौर पर टेबलेट तो अधिकतर छात्राओं को सरस्वती सायकल योजना स्कूली गणवेश निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें, पुस्तकालयों के लिए महापुरुषों के जीवन से जुड़े एवं प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकें तथा पत्र पत्रिकाएँ उपलब्ध करायी जा रही है परंतु हमने देखा है इन संसाधनों का जो उपयोग होना चाहिए वह प्रायः नहीं देखा जाता । असल में हमारी मानसिकता ही इस प्रकार बन गई है कि हम सरकारी सम्पत्ति को अपने लाभ के लिए प्रयोग तो करते है परंतु इनके रख रखाव इनकी सुरक्षा में जिम्मेदारी के प्रति उदासीन हो जाते हैं क्या इनकी सुरक्षा करना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी नहीं है और यदि है तो अपने आप से पूछे कि हमने अपने भौतिक संसाधनों को सदुपयोग किया है या दुरुपयोग ।

आईये हम अपने विद्यालय को स्वच्छ सुंदर और बहुआयामी बनाने की दिशा में आज से सक्रिय हो जाएं और अपने भौतिक संसाधनों का संरक्षण व संधारण करने उन्हें सुरक्षित व्यवस्थित रखने का संकल्प लेकर कर्तव्य निर्वहन करें । चाहे वह प्रयोगशाला हो या लाईब्रेरी, चाहे हमारे स्कूल के टेबल कुर्सी हो या बिजली के पंखे हों या कूलर शासन से प्राप्त सामग्री व संसाधन का हम एक ट्रस्टी बनकर संरक्षण करें और इसे भावी पीढ़ी को सौंप सकें । जिससे आने वाली पीढ़ी हमें धन्यवाद दे ।

शिक्षा तथ्यों का अध्ययन नहीं है बल्कि सोचने के लिए मन का प्रशिक्षण है - अलबर्ट आइंस्टीन

संस्था को प्रभावी बनाने में विद्यालय प्रबंध समिति की भूमिका भी महत्वपूर्ण

कृष्णा विश्वास
एकादमिक सदस्य
डाईट धरमजयगढ़,
जिला रायगढ़ (छ.ग.)
मोबाईल 9406308211

वर्तमान परिदृश्य में यह तथ्य सर्वमान्य है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को अभिभावक, समाज, शिक्षक और शासन सम्मिलित रूप से प्रभावित करते है।यदि इन चारों को एक चतुर्भुज के चारों कोनो पर देखें तो इसके केन्द्र में हमें विद्यार्थी ही दिखाई देगा।

शिक्षार्थी के शारीरिक, मानसिक,संवेगात्मक,बौद्धिक,सामाजिक आदि गुणों के विकास में ये कारक प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभावित करते है। संविधान में विद्यालय को शिक्षा का केन्द्र मानते हुए इसे समवर्ती सूची में रखा गया है तथा 73 वां एवं 74 वां संशोधन के अनुसार स्थानीय समुदाय को अपने बच्चों की शिक्षा में निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए एक वैधानिक संस्थागत अवसर उपलब्ध कराता है। शाला समुदाय और शासन का अंर्तसंबंध कोई नवीन अवधारणा नहीं है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह कालान्तर से ही परिलक्षित है। वस्तुतः विद्यालय जहां बालक उपस्थित रहकर सीखता है वह बालक के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना शिक्षक, अभिभावक, समुदाय एवं शासन के लिए। राष्ट्रीय पाठ्य चर्चा 2005 में यह कहा गया है कि ''विद्यालय निर्देशित शिक्षा का संस्थान होता है लेकिन ज्ञान सृजन में तो निरंतरता होती है अतः यह विद्यालय के बाहर भी होता है।'' अर्थात बच्चे के सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक, अभिभावक, समुदाय आदि सभी सहायक होते हैं। विद्यालय एक गतिशील तंत्र है यह सुचारू ढंग से तभी क्रियान्वित होकर रह सकती है जब इनके घटकों- विद्यार्थी, शिक्षक, प्रधानाध्यापक, अभिभावक, समुदाय एवं शासन आदि में परस्पर समन्वय हो।

विद्यालय में 6 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु इनके शाला में प्रवेश से लेकर प्राथमिक शिक्षा कक्षा एक से आठ तक पूर्ण करने को सुनिश्चित करने की संपूर्ण जिम्मेदारी राज्य को है और राज्य सरकार को इस दायित्व को पूर्ण करने की जिम्मेदारी है। यह तो एक कानूनी बाध्यता है किन्तु इस महती जिम्मेदारी को शासन अथवा प्रशासन क्या केवल अपने आदेशों एवं अधिकारी तथा मातहतों के जरिए पूरा कर सकता है ? निःसंदेह ऐसा संभव नही है, इसके लिए समाज के अंतिम व्यक्ति तक जागरूकता लानी होगी। विद्यालय में बच्चों का नामांकन, उपस्थिति, अध्यापन, सतत् एवं समग्र मूल्यांकन, वित्तीय व्यवस्था, संचालन एवं प्रबंध, योजना निर्माण तथा मॉनिटरिंग हेतु इस अधिनियम की धारा 21 के खण्ड 1 एवं 2 में विद्यालय में प्रवेश प्राप्त बच्चों के माता-पिता या संरक्षक और शिक्षक के निर्वाचित प्रतिनिधियों से मिलकर बनने वाली एक''विद्यालय प्रबंध समिति''गठित करने का प्रावधान किया गया है।हमारे राज्य में''छत्तीसगढ़ निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम 2010 के धारा 3 में विद्यालय प्रबंध समिति की संचरना और कार्य को निम्नानुसार निर्दिष्ट किए है-

विद्यालय प्रबंध समिति की संरचना और उनके कार्य-

(1) गैर-सहायता प्राप्त विद्यालय से भिन्न प्रत्येक विद्यालय में नियत तारीख के छह मास के भीतर एक विद्यालय प्रबंध समिति(जो इस नियम में इसके पश्चात उक्त समिति के रूप में निर्दिष्ट है) का गठन किया जाएगा और प्रत्येक वर्ष में उसका पुनर्गठन किया जाएगा। विद्यालय शिक्षा समिति का गठन राज्य शासन या प्राधिकृत अधिकारी द्वारा किया जाएगा।

(2) विद्यालय प्रबंध समिति की सदस्य संख्या का 75 प्रतिशत बच्चों के माता-पिता या संरक्षकों में से होगा।

(3) उक्त समिति की सदस्य संख्या का शेष 25 प्रतिशत निम्नालिखित व्यक्तियों में से होगा-

(अ) स्थानीय प्राधिकारी के निर्वाचित सदस्यों में से एक तिहाई सदस्य जिनका विनिश्चय स्थानीय प्राधिकारी द्वारा किया जाएगा अर्थात 8 प्रतिशत।

(ब) विद्यालय के अध्यापकों में से एक-तिहाई सदस्य, जिनका विनिश्चय विद्यालय अध्यापकों द्वारा किया जाएगा अर्थात 8 प्रतिशत।

(स) स्थानीय शिक्षाविदों, विद्यालय के बालकों में से एक तिहाई जिनका विनिश्चय उक्त समिति में माता-पिताओं द्वारा किया जाएगा अर्थात 9 प्रतिशत।

(द) विद्यालय प्रबंध समिति में खण्ड एक, दो, तीन एवं चार को मिलाकर 50 प्रतिशत महिलाएं सदस्य होंगी।

(4) उक्त समिति अपने क्रियाकलापों का प्रबंध करने के लिए माता-पिता सदस्यों में से एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष को निर्वाचित करेगी। विद्यालय का प्रधानाध्यापक या जहां विद्यालय में प्रधान अध्यापक नहीं है वहां विद्यालय का वरिष्ठतम अध्यापक उक्त समिति का पदेन सदस्य- संयोजक होगा।

(5) उक्त समिति माह में कम से कम एक बार अपनी बैठक करेगी और बैठकों के कार्यवृत्त तथा विनिश्चय समुचित रूप से अभिलिखित किए जाएंगे और जनता के लिए उपलब्ध कराएं जाएंगे।

(6) उक्त समिति धारा 21 की उपधारा 2 के खण्ड क से घ में विनिर्दिष्ट कृत्यों के अतिरिक्त, निम्नलिखित कृत्यों का पालन करेगी अर्थात -

(क) अधिनियम में यथा प्रतिपादित बालक के अधिकारों के साथ ही समुचित सरकार,स्थानीय प्राधिकारी,विद्यालय,माता-पिता और संरक्षक के कर्त्तव्यों को भी विद्यालयके आसपास के जनसाधारण को सरल और सृजनात्मक रूप से संसूचित करना।

(ख) धारा 24 के खण्ड क और ड. तथा धारा 28 का कार्यन्वयन सुनिश्चित करना।

(ग) इस बात को मानिटर करना है कि अध्यापकों पर धारा 27 में विनिर्दिष्ट कर्त्तव्यों से भिन्न गैर शैक्षणिक कर्तव्यों का भार न डाला जाए।

(घ) विद्यालय में आसपास के सभी बालाकों के नामांकन और निरंतर उपस्थिति को सुनिश्चित करना।

(ड) अनुसूची में विनिर्दिष्ट सन्नियमों और मानकों के बनाए रखने को मानिटर करना।

(च) बालक के अधिकारों से किसी विचलन को, विशेष रूप से बालकों के मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न, प्रवेश से इंकार किए जाने और धारा 3 की उपधारा 2 के अनुसार निःशुल्क हकदारियों के समयबद्ध उपबंध को स्थानीय प्राधिकारी की जानकारी लेना।

(छ) आवश्यकताओं का पता लगाना, योजना तैयार करना और धारा3 के उपबंधों के कार्यान्वयन को मॉनिटर करना।

(ज) निःशक्तता ग्रस्त बालकों की पहचान और नामांकन तथा उनकी शिक्षा की सुविधाओं को सुनिश्चित करना।

(झ) विद्यालय में दोपहर के भोजन के कार्यान्वयन को मॉनिटर करना।

(ञ) विद्यालय की प्राप्तियों और व्यय का वार्षिक लेखा तैयार करना।

(7) इस अधिनियम के अधीन अपने कृत्यों का निर्वाहन करने के लिए उक्त समिति द्वारा प्राप्त किसी धनराशि को एक पृथक खाते में रखा जाएगा, जिसकी वार्षिक रूप सें संपरीक्षा की जाएगी।

(8) उप-नियम 6 के खड (ञ) में और उप-नियम 7 में निर्दिष्ट लेखाओं को उक्त समिति के अध्यक्ष या उपाध्यक्ष और संयोजक द्वारा हस्ताक्षरित किया जाना चाहिए और उनके तैयार किए जाने के एक मास के भीतर स्थानीय प्राधिकारी को उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

विद्यार्थियों से अपनत्व का भाव जगाना भी जरूरी है

व्याख्याता प्रतीक्षा सिंह के अनुभव की अभिव्यक्ति

जब हम एक बेहतर शिक्षक की बात करते हैं तो हमारे मस्तिष्क में एक बात अवश्य आती है कि हमारे जीवन में सबसे बेहतर शिक्षक कौन थे जिन्होंने हमें प्रभावित किया हमारे मन मस्तिष्क पर जिनकी छाप आज तक पड़ी है अगर कोई व्यक्ति अपने जीवन में सफल होता है तो उसकी इस सफलता में उसके माता-पिता के अतिरिक्त जो अन्य व्यक्ति होता है वह शिक्षक ही होता है जिनकी बातों का अनुसरण करके वह व्यक्ति जीवन में इतना आगे बढ़ता है और सफलता को प्राप्त करता है । हम सभी अपने बचपन में किसी न किसी शिक्षक से बहुत प्रभावित होते हैं और हमेशा उनका ही अनुसरण करते हैं। जो भविष्य में हमारा पथ प्रदर्शन करते हैं और हमें सही रास्ता दिखाते हैं ।

मैं आज जो हूं जैसी हूं उसमें मेरे शिक्षकों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है, सौभाग्य से मुझे भी शिक्षक बनने का मौका मिला और पिछले 15 वर्षो से मैं भी बच्चों का भविष्य गढ़ रही हूं। इन 15 वर्षो में मैंने बहुत कुछ सीखा जाना कि शिक्षक होना जितना आसान लगता है उतना आसान होता नहीं, लोगों की यह धारणा होती है कि शिक्षक का कार्य सिर्फ किताबी ज्ञान प्रदान करना है और बच्चों को अच्छे नंबरों से पास करने हेतु योग्य बनाना है पर मेरा मानना है कि सिर्फ किताबी ज्ञान देना ही शिक्षक का फर्ज नहीं होता शिक्षक को अपने देश के भविष्य का निर्माण भी करना होता है। उसके लिए सिर्फ किताबी ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है हमें उन बच्चों को जो हमारे देश के भविष्य हैं सबसे पहले उनको एक अच्छा नागरिक बनाना उनमें नैतिक गुणों को स्थापित करना और उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए और मुझे लगता है कि इसके लिए हमें बच्चों के मन तक पहुंचना बहुत जरुरी है और उनके मनोभाव को जानना, वह क्या चाहते हैं? उनकी रुचि किसमें है? उनकी झिझक को मिटाना डर को खत्म करना और उनमें आगे बढ़ने की ललक पैदा करना, आत्मविश्वास जगाना और यह सब एक विद्यार्थी को किताबी ज्ञान के साथ साथ ही शिक्षक द्वारा ही देना होता है।

अधिकतर शासकीय विद्यालय में अधिकांश गरीब परिवार के ग्रामीण परिवेश में पले बढ़े बच्चे ही पढ़ने आते हैं जिनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर रहती है और घरों में भी वह माहौल नहीं रहता जो उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए आवश्यक होती है। छोटे-छोटे घरों कच्चे मकानों पर यह बच्चे रहते हैं उनके माता-पिता रोजी मजदूरी करते हैं और

शिक्षा में सबसे ज्यादा ताकत होती है, जिससे पूरी दुनिया को बदला जा सकता है।

कुछ बच्चे तो ऐसे भी हैं जिनके माता-पिता भी नहीं है और घर के खर्च का बोझ भी उन्हें वहन करना पड़ता है कुछ बच्चे तो दूसरों के घर में भी काम करने जाते हैं ताकि अपने घर में कुछ आर्थिक सहयोग कर सके इन आर्थिक और मानसिक परेशानियों से जूझते हुए वह बच्चे हमारे पास शिक्षा ग्रहण करने आते हैं तब मुझे लगता है कि सबसे पहले मैं उनकी मनःस्थिति को समझुं उन्हें क्या चाहिए मैं किस तरह से उनकी आर्थिक और मानसिक रुप से सहायता कर सकती हूं ताकि उन बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने में कोई बाधा ना उत्पन्न हो और इसके लिए मैं पिछले 15 वर्षो से हर संभव प्रयास करती आ रही हूं। इस दिशा में सबसे पहले मैं बातों के माध्यम से उनके मन तक पहुंचने की कोशिश करती हूं स्थानीय भाषा बोली का प्रयोग करती हूं, ग्रामीण बच्चे छत्तीसगढ़ी भाषा ही बोलते हैं घरों में और स्कूल में भी मैं बीच-बीच में इसका प्रयोग करती हूं ताकि सभी बच्चे मेरे साथ सहज हो सके इसी तारतम्य में माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा 5 सितंबर 2022 को घोषणा करते ही अगले दिन मैंने कक्षा दसवीं के अंग्रेजी कविता को छत्तीसगढ़ी में अनुवाद कर कर पढ़ाया था जिसकी सराहना स्वयं माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा की गई और प्रदेश वासियों द्वारा भी सराहा गया मैं बच्चों को अनुशासन में रखने के साथ ही साथ उनसे मित्रवत व्यवहार करती हूं ताकि बच्चे अपनी भावनाओं को मेरे सामने प्रकट कर सकें और मैं जान सकूं कि उन्हें क्या परेशानी है और उसको मैं कैसे दूर कर सकती हूं।

अपने विद्यालय के सभी बच्चों को मैं अपने स्तर पर प्रत्येक वर्ष निःशुल्क कापी, पेन, स्टेशनरी, जूता मोजा, स्कूल बैग, पानी बोतल जो भी उनकी जरुरतें हैं वह मै अपने वेतन से पूर्ण करती हूं । बच्चों के घर में उनके परिवार में क्या चल रहा है वह सब भी मैं जानकारी रखने की कोशिश करती हूं साथ ही उनकी समस्याओं का निराकरण करती हूं।

इस विषय पर मैं एक वाक्या को यहां संस्मरण कराना चाहूंगी हमारे विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी ईश्वर पटेल जिसके पिता की मृत्यु हो गई और परिवार वालों ने साथ छोड़ दिया था, तीन वर्ष पहले उसके दिल में सुराख का ऑपरेशन मेरे द्वारा कराया गया जिससे अब वह बालक पूर्ण रुप से स्वस्थ है और कक्षा बारहवीं उत्तीर्ण कर चुका है। इस घटना से मुझे अत्यंत आत्मसंतुष्टी के साथ सुखद अनुभूति हुई है।

मैं स्कूल की गतिविधियों में बच्चों के साथ सम्मिलित होकर उन्हें गतिविधियों के बारे में अवगत कराती हूं जिससे बच्चों का मेरे प्रति लगाव बढ़ जाता है और वह निसंकोच अपनी सारी बातें मुझे बताते हैं जब बच्चे हमारे साथ घुल मिल जाते हैं और उसके बाद वह हमारी बातें मानने लगते हैं इससे हमें उन्हें पढ़ाने सिखाने में आसानी होती है हम उनका तनाव दूर करने में सफल हो पाते हैं इससे हमारा परीक्षा परिणाम भी अच्छा आने लगता है इस तरह मैं सदैव प्रयास करती रहूंगी कि मैं एक शिक्षक के तौर पर अपने राष्ट्र का निर्माण करने में अपना योगदान दे सकूं और अपने छात्र-छात्राओं को आर्थिक और मानसिक रुप से सशक्त बना सकूं । मेरे दृष्टि में एक शिक्षक छात्र-छात्राओं के साथ आत्मीयतापूर्ण मधुर संबंध बनाकर विषय शिक्षण के साथ साथ नैतिक व चारित्रिक गुणों का विकास करे तो हम देश के लिए सक्षम और काबिल नागरिक बनाने में सफल हो सकते हैं ।

श्रीमती प्रतीक्षा सिंह
(व्याख्याता)
शासकीय हाई स्कूल, मुलमुला
विकासखंड पामगढ़
जिला जांजगीर चांपा छत्तीसगढ़

धैर्य रखें, सही समय आने पर आपके पास वह सब कुछ आयेगा जिसके लिए आपने मेहनत किया है।

ईश्वर की बनाई सबसे अनमोल कृति है शिक्षक

राष्ट्र निर्माण और युग प्रवर्तक के रूप में होती है भूमिका

शिक्षक एक युग प्रवर्तक होता है, यह वाक्य अपने आप में एक गहरा अर्थ लिए हुए है, अपने शिक्षकों से मैंने इस वाक्य को कई बार सुना और यह बात जेहन में बैठ गयी थी लेकिन इसके सही मायने शिक्षक बनने के बाद ही समझ में आयी।

देश की सच्ची सेवा करने का ये अनुपम सुख देने वाला स्थान है । शिक्षक होने के नाते हम एक पीढ़ी को तैयार करते हैं अपने राष्ट्र को हम कैसा बनाना चाहते हैं, कैसा देखना चाहते हैं यह सब कर गुजर जाने की क्षमता ईश्वर ने हम शिक्षकों को अनुपम तोहफे के रूप में दी है । परिवार में मां एक गुरू के रूप में अपने बच्चे को उत्तम संस्कार देकर भविष्य की नींव रखती है, वहीं शिक्षक अपने शिष्य के चहुंमुखी विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे यही अपेक्षा समाज में की जाती है।

शासकीय विद्यालयों में अधिकांशतः आर्थिक रूप से कमजोर बच्चे ही प्रवेश लेते हैं, ऐसे में शिक्षकों को अपने कर्तव्यों को निभाने का सुनहरा मौका मिलता है। वहीं उनके सामने अनेक चुनौतियां भी होती हैं। इस परिस्थिति में अवसरों को अपना दास बना लेना पद की गरिमा को उच्चतम शिखर तक ले जाता है साथ ही समाज में शिक्षकों का मान सम्मान भी बढ़ता जाता है। शिष्य अपने अभिभावकों और गुरूओं के सानिध्य में सुनहरे अवसर प्राप्त कर पाते हैं। समाज की एक सुंदर सुदृढ़ पीढ़ी तैयार होती है तो वह शिक्षक के परिश्रम विद्यार्थियों के प्रति सेवा भाव और अपने कर्तव्य निर्वहन में लगन के बल पर ही संभव है।

इन्हीं अहम बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए मेरे द्वारा विद्यालय में निःशुल्क कैंप एवं निः शुल्क समर कैंप का संचालन किया जाता है जहां बच्चों को केवल अपना समय देना होता है । कई तरह की विधाएं सिखाई जाती हैं । इनसे बच्चों के व्यक्तित्व को निखारने में सहायता मिलती है। इसका लाभ फिर विद्यालय को भविष्य में विभिन्न विद्यालय, विभिन्न विभागीय और अंतर विद्यालयीन प्रतियोगिताओं में मिलता है, जिससे परिवार और विद्यालय गौरवान्वित होते हैं । इससे बड़ी बात एक शिक्षक के लिए हो ही नहीं सकती।

मुझे हमेशा ही लगता है कि यदि हमारे पास थोड़ा भी समय खाली हो तो उसे बच्चों को समर्पित करने में ही हमारी समझदारी है। क्योंकि बच्चों के जीवन का यह अनमोल क्षण उनके जीवन में फिर कभी नहीं आने वाला। हमारे कार्य उन क्षणों को बहुमूल्य बना सकें, जीवनोपयोगी बना सकें। हम उन्हें हरदम सिखाते रहें, भले ही इसके लिए कई बार हमें भी सीखने को तत्पर रहना पड़े । अपने शिक्षक साथियों से मेरा केवल यही अनुरोध है ..... वे अपना मूल्य समझें और विश्वास करें कि आप ईश्वर की बनाई सबसे अनमोल कृति हैं ।

श्रीमती रश्मि वर्मा
व्याख्याता (जीवविज्ञान)
शास. उच्च. माध्य. विद्यालय,
चक्रधर नगर रायगढ छत्तीसगढ
(राज्यशिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षिका)

शिक्षा वो परम पूंजी है जिसके चोरी होने का डर नहीं होता।

बेटे के शिक्षक को लिंकन का पत्र

अपने पुत्र के भविष्य को लेकर समुदाय में एक शिक्षक के प्रति अपेक्षा के साथ कितनी श्रद्धा और विश्वास होती है यह अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा अपने पुत्र के प्रथम प्रवेश के दौरान शिक्षक के नाम लिखे गये पत्र से ज्ञात हो जाता है। अब्राहम लिंकन के इस भावपूर्ण पत्र को पढ़कर शिक्षक स्वयं के प्रति पालकों की आस्था का अनुभव करते हुए अपने कर्तव्य निर्वहन के प्रति गंभीर हो सकते हैं - संपादक

प्रिय अध्यापक महोदय,

मेरा पुत्र आज पहली बार स्कूल जा रहा है. उसके लिए सबकुछ नया-नया होगा. कृपया उससे सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करें. यह नयी यात्रा उसे महाद्वीपों के पार तक ले जा सकती है. हर ऐसी यात्रा में शायद युद्ध भी होते हैं, त्रासदी भी, पीड़ा भी यह जीवन जीने के लिए उसे विश्वास, प्यार और साहस की आवश्यकता पड़ेगी.

मैं जानता हूं कि इस दुनिया में सारे लोग अच्छे और सच्चे नहीं हैं. यह बात मेरे बेटे को भी सीखनी होगी. पर मैं चाहता हूं कि आप उसे यह बतायें कि बुरे आदमी के पास भी अच्छा हृदय होता है. हर स्वार्थी नेता के अंदर अच्छा लीडर बनने की क्षमता होती है.

मैं चाहता हूं कि आप उसे सिखायें कि हर दुश्मन के अंदर एक दोस्त बनने की सम्भावना भी होती है. ये बातें सीखने में उसे समय लगेगा, मैं जानता हूं. पर आप उसे सिखाइए कि मेहनत से कमाया गया एक डॉलर, सड़क पर मिलने वाले पांच डॉलर के नोट से ज़्यादा कीमती होता है.

आप उसे बताइएगा कि दूसरों से जलन की भावना अपने मन में न लाये.

आप उसे किताबें पढ़ने के लिए तो कहिएगा ही, पर साथ ही उसे आकाश में उड़ते पक्षियों को, धूप में हरे-भरे मैदानों में खिले फूलों पर मंडराती तितलियों को निहारने की याद भी दिलाते रहिएगा. मैं समझता हूं कि ये बातें उसके लिए ज्यादा काम की हैं.

मैं मानता हूं कि किसी बात पर चाहे दूसरे उसे गलत कहें, पर अपनी सच्ची बात पर कायम रहने का हुनर उसमें होना चाहिए. दयालु लोगों के साथ नम्रता से पेश आना और बुरे लोगों के साथ सख्ती से पेश आना चाहिए. दूसरों की सारी बातें सुनने के बाद उसमें से काम की चीज़ों का चुनाव उसे इन्हीं दिनों में सीखना होगा.

आप उसे बताना मत भूलिएगा कि उदासी को किस तरह प्रसन्नता में बदला जा सकता है. और उसे यह भी बताइएगा कि जब कभी रोने का मन करे तो रोने में शर्म बिल्कुल ना करे. मेरा सोचना है कि उसे खुद पर विश्वास होना चाहिए और दूसरों पर भी. तभी तो वह एक अच्छा इनसान बन पायेगा.

ये बातें बड़ी हैं और लम्बी भी. पर आप इनमें से जितना भी उसे सिखा पाए उतना उसके लिए अच्छा होगा. फिर, अभी मेरा बेटा बहुत छोटा है और बहुत प्यारा भी.

एक अभिभावक
अब्राहम लिंकन

(जनवरी 2016)

यदि आप किसी का अपमान कर रहे हैं तो वास्तव में आप अपना सम्मान खो रहे हैं।

खण्ड 2

हमारे आदर्श प्रेरक विद्यालय

अन्य विद्यालयों के लिए है प्रेरणा

केंदवाही डीपा प्राथमिक शाला का शैक्षिक कीर्तिमान

अब तक 101 विद्यार्थियों का नवोदय, उत्कर्ष एवं सैनिक स्कूल इत्यादि में हो चुका है चयन

छत्तीसगढ़ के नवीन जिला सारंगढ़-बिलाईगढ़ अंतर्गत बरमकेला विकास खण्ड मुख्यालय से 9 किलोमीटर की दूरी पर बार गांव के एक मोहल्ला केंदवाही में स्थित प्राथमिक शाला में दर्ज संख्या 115 है। इस विद्यालय में 2 शिक्षक है। प्रधान पाठक श्री सुरेंद्र कुमार मिश्रा जो कि राज्यपाल, मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण पुरस्कार से सम्मानित हैं, वहीं श्री मनमोहन पटेल सहायक शिक्षक मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं। इसी विद्यालय से श्री अनुराज वर्मा सहायक शिक्षक भी राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त करने वाले वर्तमान में प्रधान पाठक के रुप में पदोन्नत होकर अन्य विद्यालय में पदस्थ हैं । पूर्ववर्ती रायगढ़ जिला एवं वर्तमान सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिला का यह एक आदर्श विद्यालय है जो शिक्षकों के अथक परिश्रम और कर्तव्य निर्वहन के साथ कुशल अध्यापन शैली से प्रदेश स्तर में अपनी पहचान बना चुका है।

♦ साधनों के अभाव में भी नहीं टूटा मनोबल :

शासकीय प्राथमिक शाला केंदवाही बार की स्थापना सत्र 2004 में हुआ था। इस विद्यालय में तीन कमरा के साथ एक बरामदा है। इस तीन कमरा में एक विद्यालय का ऑफिस है और एक कमरा में कक्षा पहली व दुसरी के विद्यार्थियों को, तो एक कमरा में तीसरी व चौथी कक्षा के विद्यार्थियों और पांचवीं कक्षा के विद्यार्थियों को बरामदा में अध्यापन कार्य कराया जाता है। सामूहिक कक्षा के लिए बरामदा का उपयोग किया जाता है। इस विद्यालय में खेल मैदान, हैण्डपम्प, डेस्क-बेंच का अभाव है। इस विद्यालय में एक ही गांव के विद्यार्थी नहीं बल्कि अन्य कई गांव के बच्चे भी पढ़ने आते हैं। इस विद्यालय के ज्यादातर बच्चे अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति से आते है। अब तक इस विद्यालय से कुल 101 विद्यार्थियों का चयन जवाहर उत्कर्ष, एकलव्य विद्यालय, सैनिक स्कूल, नवोदय विद्यालय में हो चुका है।

सरल सहज अध्यापन बच्चों को सीखाने के लिए अध्यापक सरल भाषा और सहज तकनीक का उपयोग करते है। जिससे बच्चो के सीखने का स्तर उच्च होता है। बच्चे तो अपने आप मे अद्भुत होते है बस उन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। अच्छे मार्गदर्शक के रुप में यहां के शिक्षक काम कर रहे।

♦ सर्वांगीण विकास होता है लक्ष्य :

बच्चों के शैक्षणिक विकास के साथ साथ विद्यालय में बच्चों के सर्वांगीण विकास का भी कार्य किया जाता है। सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय में योग, खेल-कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्षेत्र भ्रमण, व्यवसायिक प्रशिक्षण आदि कार्य कराया जाता है जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। बच्चो के सर्वांगीण विकास से पालक संतुष्ट होते हैं ।

♦ यदि शिक्षा में हो रहा है नवाचार - तो सीखने का स्तर बढ़ता है हर बार

यहां के शिक्षक सीखने-सिखाने के स्तर को सशक्त करने लिए शैक्षणिक कार्य में नवाचार का उपयोग करते हैं। इस विद्यालय के शिक्षकों द्वारा बच्चों के स्तर के अनुरुप अच्छे अच्छे नवाचार प्रयोग किया जाता है जिससे बच्चों के मन में खुशी से सीखने के भाव प्रकट होता है।

टी.एल.एम योग : बच्चों को सरल तरीके से समझाने के लिए कबाड़ से जुगाड़ करके विशेष TLM अर्थात शैक्षणिक सहायक सामग्री का निर्माण किया जाता है और उसके माध्यम से बच्चों को सिखाया जाता है जिससे बच्चों में सीखने के प्रति उत्साह देखने को मिलता है।

समूह अध्यापन : बच्चों को सीखने सिखाने के लिए समूह अध्यापन भी कराया जाता है जिससे बच्चे अपने साथी से सीखते है और अपने लक्ष्य तक पहुंचते हैं। समूह अध्यापन से बच्चों सीखने व बोलने की ललक बढ़ती है।

प्रतियोगी परीक्षा : बच्चों को प्रतियोगी परीक्षा में तैयार करने के लिए विभिन्न प्रकार से प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार के प्रयोग से बच्चों में प्रतियोगी परीक्षा का अनुभव होता है और निश्चित ही इसका लाभ उन्हें मिलता है।

♦ आप मेहनत से करते रहोगे अभ्यास - तो पहुंच जाओगे सफलता के निवास

उत्सव मनाना : इस विद्यालय में विभिन्न प्रकार के उत्सव परिवार के रुप में मनाया जाता है। जैसे विभिन्न प्रकार की जयंती, त्यौहार, उत्सव आदि मनाया जाता है। दीपावली, होली, आदि उत्सव को तो शिक्षक और बच्चे मिलकर विद्यालय में ही मनाया जाता है जिससे विद्यालय में सद्भावना एवं हर्ष का माहौल निर्मित होता है।

सतत् पालक सम्पर्क : इस विद्यालय में पालक सम्पर्क को मजूबत रखा गया है। प्रतिमाह पालक सम्मेलन, बालक सम्मेलन, घर पहुंच दौरा आदि कार्यो से पालक को विद्यालय से जोड़े रहते हैं। इस कार्य हेतु विद्यालय के प्रधान पाठक श्री मिश्रा सर जी का उल्लेखनीय योगदान रहता है। विद्यालय सभी पालकों को एक परिवार के रुप में मजबूती से बांधे रखा है।

आपसी सामंजस्य : इस विद्यालय में तो आपसी सामंजस्य दिखता ही है इसके अलावा यहां के शिक्षकों ने विभिन्न PLC से जुड़ कर कार्य करते है। इसी परिपेक्ष्य में इस विद्यालय से लगभग 100 किलोमीटर महासमुंद जिला के बसना विकासखण्ड के प्राथमिक शाला तिलाईदादर का अच्छा सांजस्य है और दोनों स्कूल मिलकर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा के लिए बच्चो को तैयारी कराते हैं।

शिक्षक कार्य : इस विद्यालय के प्रधान पाठक श्री सुरेंद्र कुमार मिश्रा सर जी अच्छे शिक्षक, अच्छे प्रधान पाठक के साथ-साथ अच्छे प्रशिक्षक भी हैं जो विद्यालय एवं संकुल से लेकर जिला स्तर में प्रशिक्षण भी देते है। इनके प्रशिक्षण की सराहना अन्य शिक्षक भी करते हैं ।

विद्यालय की महत्वपूर्ण उपलब्धि

- इस विद्यालय से 2 शिक्षक राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त कर चुके है और 3 शिक्षक मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण पुरस्कार से सम्मानित भी हो चुके हैं।
- इस विद्यालय से अब तक जवाहर उत्कर्ष, एकलव्य विद्यालय, सैनिक स्कूल, नवोदय विद्यालय में कुल 101 विद्यार्थियों का चयन हो चुका है।
- इस विद्यालय के भ्रमण हेतु अन्य राज्य, जिले, विकास खंड, संकुल के शिक्षक भी आते हैं।
- इस विद्यालय के भ्रमण हेतु उच्च अधिकारी जैसे कलेक्टर तथा शिक्षा विभाग के विकासखंड से लेकर जिला एवं राज्य स्तर के अधिकारी भी आ चुके हैं और विद्यालय की सराहना कर चुके हैं।
- हाल ही में सुघ्घर पढ़हया के अंर्तगत यह स्कूल प्लेटेनियम कार्ड भी प्राप्त कर चुका है।

शिक्षा ही इंसानियत का मूलमंत्र है।

शिक्षिकाओं ने गांव के स्कूल को अपने श्रम से संवारकर राज्यस्तर पर पहचान दिलायी

श्रीमती सुनीता यादव

पूर्ववर्ती रायगढ़ जिला एवं वर्तमान सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिलान्तर्गत बरमकेला विकासखंड मुख्यालय से 2 किलोमीटर दूर स्थित प्राथमिक विद्यालय खिचरी स्थित है जहां तीन शिक्षिकाएं अपने परिश्रम और कर्तव्य निर्वहन से गांव के गरीब, मजदूर व कामगार वर्ग से सम्बद्ध परिवार के बच्चों को अपने कुशल अध्यापन शैली से इस तरह पहचान दिलाई है कि यहां के बच्चे जिले से लेकर प्रदेश स्तर तक विभिन्न कौशल प्रतियोगिताओं में अपना नाम प्रतिष्ठित कराया है।

विद्यालय के उन्नयन में शिक्षकों की क्या भूमिका रही है इस विषय पर यहां पदस्थ शिक्षिका श्रीमती सुनीता यादव ने बताया कि पदस्थापना के पूर्व शाला की भौतिक स्थिति अच्छी नहीं थी शौचालय एक भी नहीं था। रैंप नहीं लगे हुए थे सौंदर्यीकरण वृक्षारोपण नहीं हुआ था एवं प्रिंट रिच वातावरण की कमी।

भौतिक संसाधन शौचालय का निर्माण, दिव्यांग बच्चों हेतु रैंप का निर्माण करवाना, स्मार्ट शाला हेतु प्रोजेक्टर की मांग, छोटे बच्चों के लिए झूले की व्यवस्था, शाला परिसर में सौंदर्यीकरण, वृक्षारोपण, प्रिंट रिच स्कूल, कोरोना काल में प्रिंट रिच गांव व इंग्लिश के लिए विशेष क्लास लगाना।

पठन-पाठन हेतु-पूर्व व्यवसायिक शिक्षा, अनुभव आधारित शिक्षा एवं बाजारों में ले जाकर के बच्चों को स्वयं करके सीखने की कला सिखाना। विकासखंड स्तरीय गणित मेले का आयोजन-इस मेले में बच्चे स्वयं दुकानदार के रूप में एवं ग्रामवासी ग्राहक के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित रहे। पंडाल में विभिन्न स्कूलों से आए हुए बच्चों की दुकानदारी एवं अधिकारियों की ग्राहक की भूमिका रही। ताकि उनका गणितीय अवधारणा स्पष्ट हो जैसी लाभ -हानि जोड़ना -घटाना मुद्रा आदि।

उपलब्धियां -14 नवंबर को पंडित जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शिक्षा समागम कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ की 10 प्रतिभावान बच्चों में से 2 प्रतिभावान छात्राओं का चयन शासकीय प्राथमिक शाला खिचरी से हुआ था।

♦ 50 तक का पहाड़ा ज्ञान। ♦ छत्तीसगढ़ की 200 सामान्य ज्ञान। ♦ इंग्लिश स्पीकिंग स्किल।

उच्च अधिकारियों से संबंध-रायगढ़ समग्र शिक्षा सहायक संचालक सुश्री दिप्ती अग्रवाल मैडम, सुश्री प्रतरशीला एक्का, जिला शिक्षा अधिकारी आर.पी.आदित्य, डीएमसी आर. देवांगन, एपीसी भुनेश्वर पटेल भूपेंद्र पटेल ,आलोक स्वर्णकार, जिला पंचायत अध्यक्ष एवं समस्त सदस्यगण, शिक्षा अधिकारी सहायक शिक्षा अधिकारी शासकीय प्राथमिक शाला खिचड़ी में शैक्षिक भ्रमण के लिए आना। शालेय उपलब्धि-छत्तीसगढ़ शिक्षा विभाग की वेबसाइट में शाला की प्रधान पाठक सुनीता यादव एवं सहायक शिक्षक कुसुम साहू का हमारे नायक बनना।

F I N के तहत शासकीय प्राथमिक शाला को हमारे नायक घोषित करना। शिक्षा विभाग की पत्रिका चर्चा पत्र में प्रधान पाठक सुनीता यादव को कई बार प्रमुखता से स्थान देना ।

शिक्षा उत्साह और परिश्रम से ही पाया जाता है ।

सुग्घर पढ़वईया आंकलन में प्लेटिनम ग्रेड मिल चुका है इस विद्यालय को

प्राथमिक विद्यालय खिचरी को छत्तीसगढ़ शासन द्वारा सुघ्घर पढ़वईया आंकलन के तहत प्लेटिनम ग्रेड मिल चका है। विदित हो कि यह योजना पूर्ण रुप से स्वैच्छिक एवं स्वप्रेरणा पर आधारित है, यह उन शिक्षकों व स्कूल के लिए है जो अपने विद्यार्थियों को ऊंची उड़ान भरने के लिए पंख देना चाहते हैं। सुग्घर पढ़वईया योजना टीमवर्क पर आधारित है व शाला के समस्त शिक्षकों की सहभागिता जरुरी है, इस योजना में शामिल होने पर क्षमता विकास के लिए शिक्षा विभाग द्वारा वेबसाइट पर ढेरों संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं। ऑनलाइन बेबीनार व ट्रेनिंग भी दी जाती है।

धाराप्रवाह हिंदी व अंग्रेजी को समझ के साथ पढ़ पाना, संख्या ज्ञान, घटनाओं को क्रम से बता पाना, गणित की सभी संक्रियाओं में दक्ष कर पाने के पश्चात् तैयार स्कूल द्वारा वेबसाइट में ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन किया जाता है व विभाग को चुनौती दी जाती है कि हमारे बच्चे निर्धारित मापदंड में दक्ष हैं,तथा थर्ड पार्टी को आकलन के लिए आमंत्रित किया जाता है।

थर्ड पार्टी आकलन के लिए विभाग के द्वारा टीम गठित की जाती है।गठित थर्ड पार्टी के द्वारा संबंधित स्कूलों का आंकलन किया जाता है व शत-प्रतिशत खरे उतरने पर प्लेटिनम ग्रेड दिया जाता है व स्तर के अनुरुप क्रमश गोल्ड व सिल्वर ग्रेड में प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार दिया जाता है।

सुग्घर पढ़वाईया आंकलन में प्लेटिनम ग्रेड में पूरे बिलासपुर संभाग में अव्वल रही ये शिक्षिकायें सुग्घर पढ़वाईया योजना में शामिल होने रणनीति बनाकर सुग्घर पढ़वाईया में बच्चों को सभी प्रकार से दक्ष करते हुए शा. प्राथमिक शाला खिचरी की शिक्षिकाओं ने टीम वर्क के साथ थर्ड पार्टी को आकलन हेतु चुनौती दी थी।

विगत 7 मार्च 2023 को डाईट धर्मजयगढ़ से आकलन हेतु श्री लखन झरिया जी के नेतृत्व में उनकी टीम के द्वारा आंकलन किया गया। शत-प्रतिशत बच्चों की उपस्थिति रही, व बच्चों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। गणित व भाषाई कौशल, तार्किक क्षमता, धारा प्रवाह समझ के साथ पढ़ना, संख्या ज्ञान, मूलभूत साक्षरता, घटनाओं को क्रम से बता पाना, आदि मापदंड पर खरे उतरते हुए बच्चों ने स्कूल को प्लेटिनम में अपना नाम दर्ज कराया।

पूरे बिलासपुर संभाग में मात्र 4 स्कूलों को प्लेटिनम ग्रेड में स्थान मिला है जिसमें से सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले से 2 स्कूल शासकीय प्राथमिक शाला खिचरी व भंवरपुर है। केंदवाही बार को गोल्ड ग्रेड मिला है। ज्ञात हो कि यहां तीन शिक्षिकायें कार्यरत हैं, तथा रणनीति बनाकर कार्य करती हैं। मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण से सम्मानित सुनीता यादव अंग्रेजी विषय पर, सरिता सिदार प्रधान पाठक सामान्य ज्ञान व शिक्षा विभाग के वेबसाइट पर हमारे नायक बन चुकी कुसुम साहू पहाड़ा, संख्या ज्ञान पर कार्य करती हैं।

आप अपने काम की जिम्मेदारी लेने को जितने तैयार रहते हैं उतने ही विश्वसनीय बनते हैं

वनांचल में जगा रहे शिक्षा की अलख

भेड़ बकरी चराने वाले बच्चे अब राज्यस्तर पर कर रहें भागीदारी

माध्यमिक शाला केराबहार विकासखंड लैलूंगा जिला रायगढ़ में 3 शिक्षक जिसमें प्र. प्रधान पाठक भानु लाल नायक, शिक्षक प्रमोद पैकरा एवं कान्हू राम गुप्ता पदस्थ हैं। आदिवासी बाहुल्य एवं वनांचल क्षेत्र में होने के कारण यहां के पालक शिक्षा के प्रति उतना जागरूक नहीं है बच्चों को विद्यालय में दाखिला करा कर भेड़-बकरी, बैल आदि चराने के लिए भेज देते हैं। विपरीत परिस्थिति के बावजूद भी यहां पदस्थ शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयास से यहां के बच्चों को शिक्षा के मुख्यधारा में जोड़ने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है ।

विद्यार्थियों के बीच अपनत्व भाव लेकर शिक्षकों द्वारा यहां के बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित किया जाता है। जिससे इस विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन राज्य स्तर पर इंस्पायर आवार्ड के लिए हुआ है। इसी प्रकार खेलों में भी यहां के विद्यार्थी राज्य स्तर तक पहुंचकर स्कूल एवं गांव का नाम रोशन किये हैं। शिक्षक कान्हू राम गुप्ता शाला में स्काउट दल संचालित करते हैं जिसमें बच्चे भाग लेकर जीवन जीने की कौशल सीखते हैं तथा कान्हूराम द्वारा ग्रीष्म अवकाश में आर्य समाज के साथ मिलकर आत्मरक्षा एवं युवा चरित्र निर्माण शिविर आयोजित किया जाता है। उक्त शिविर में इस विद्यालय के बच्चे प्रतिवर्ष भाग लेते हैं और आत्मरक्षा के साथ नैतिक शिक्षा का गुण भी सीखते हैं। शिक्षकों के प्रयास से पालकों का विद्यालय के साथ दिन प्रति दिन जुड़ाव अच्छा होते जा रहा है यहां अध्यापन के साथ-साथ नशा मुक्ति अभियान, अंधविश्वास निवारण अभियान, बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान, अस्पृश्यता निवारण अभियान, पालक बालक सम्मेलन, वृक्षारोपण अभी गतिविधियां चलाकर क्षेत्र को जागरूक किया जाता रहता है।

जहां चाह वहां राह को चरितार्थ करता प्रा.शा. लाखीमार

जहां चाह वहां राह शासकीय प्राथमिक शाला लामीखार में पालक समुदाय एवं शाला प्रबंध समिति के साथ मिलकर शिक्षक निरंजन पटेल ने स्कूल परिसर को शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए किचन गार्डन, बागवानी, हर्बल गार्डन, गुलाब गार्डन, मसाला बागान, आदि तैयार कर उसमें कार्य किया गया एवं दीवारों को प्रिंट रिच वातावरण बनाया गया तथा विभिन्न प्रकार के सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण कर बच्चों को सरलता से पाठ को समझाने में आसानी हो इसके लिए हर पाठ का वीडियो बनाकर एवं सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण किया गया। स्कूल भवन पुराना होने के कारण जर्जर स्थिति में था जिसे पालकों के सहयोग से जीर्णोद्धार किया गया जब वैश्विक महामारी कोरना काल में राज्य में सबसे पहले लाउडस्पीकर संचालन यहीं से किया गया तथा पढ़ाई तुंहर द्वार के तर्ज पर गृह कार्य आपके द्वार जिसमें प्रत्येक दीवाल पर ब्लैक बोर्ड का निर्माण कर उसमें गांव के पढ़े हुए बच्चों के सहयोग से बच्चों को गृह कार्य दिया जाने लगा। बच्चों के जन्म दिवस पर उनके नाम पर एक पेड़ लगाया गया। प्रतिदिन एक बच्चा आज का गुरु जी होता है जो इमला एवं होमवर्क को चेक करता है। इस तरह से कार्य से बच्चों में उत्साह एवं नेतृत्व क्षमता का विकास होता है।

शिक्षा पर किया गया निवेश आपको हमेशा लाभ ही देता है।

प्रतिभाओं की उर्वरा भूमि हायर सेकेण्डरी स्कूल तारापुर

रायगढ़ जिले के पश्चिमांचल में मांड नदी के किनारे प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण स्थल में स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तारापुर जो कि अंचल के लोकप्रिय जन नेता शहीद नंदकुमार पटेल के सपनों का का साकार रूप है । जिसे उन्होंने किसानों को उनके स्वामित्व की भूमि के बदले सरकारी जमीन उपलब्ध कराते हुए इस स्थल को विद्यालय के रूप में व्यक्तित्व निर्माण केंद्र की स्थापना कर विद्या के मंदिर के रूप में प्रतिष्ठित किया था और उनके सपनों के अनुरूप यह विद्यालय आज रायगढ़ जिला के पश्चिमांचल का गौरवशाली शिक्षा संस्थान बन चुका है।

इस विद्यालय से पढ़ कर निकलने वाले विद्यार्थी न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर के प्रतियोगी परीक्षा यूपीएससी में अपनी प्रतिभा के दम पर चयनित होकर आईपीएस अधिकारी भी बने हैं। इस संस्थान से पढ़कर निकलने वाले दर्जनों विद्यार्थी डॉक्टर सैकड़ों इंजीनियर और अनेकों विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में नियुक्त होकर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। विद्यालय से जहां ग्राम के प्रतिभावान छात्र भोजराम पटेल आईपीएस के रूप में चयनित होकर वर्तमान में पुलिस विभाग में शीर्ष अधिकारी के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं वहीं इस विद्यालय से छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग में चयनित होकर डिप्टी कलेक्टर बने रूपेंद्र पटेल भी विद्यालय को गौरवान्वित कर रहे हैं। इस विद्यालय में अध्ययनरत सरडामाल गांव के किसान की बेटी सविता पटेल ने 12 वीं बोर्ड की प्रावीण्य सूची में प्रदेश स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित कर चुकी है वर्तमान में वे पशु चिकित्सक के रूप में अपनी सेवा दे रही हैं । विद्यालय अपने अध्ययन अध्यापन के साथ साथ व्यक्तित्व विकास खेलकूद एवं साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त खेलकूद एवं साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी पहचान बना चुका है । विद्यालय को राज्य स्तर पर बेस्ट संस्था के रूप में स्कूल स्तर पर राज्यपाल पुरस्कार तथा कार्यक्रम अधिकारी के रूप में उत्कृष्टता का राज्य पुरूस्कार राष्ट्रीय सेवा योजना में प्राप्त हो चुका है एवं एक शिक्षक को राज्यस्तरीय शिक्षक पुरूस्कार के रूप में चयनित होने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस विद्यालय की खूबी है कि यहां की प्रतिभाओं से प्रभावित होकर प्रदेश की राज्यपाल महोदया अनुसूइया उईके वर्ष 2011 में विद्यालय पहुंचकर यहां के प्रतिभाओं को सम्मानित कर चुकी हैं। जो विद्यालय के लिए अत्यंत ही गौरव का विषय है।

संस्थान में पदस्थ व्याख्याता भोज राम पटेल को उत्कृष्ट कार्यक्रम अधिकारी के रूप में प्रदेश स्तर पर सम्मानित होने के बाद उनके कार्य शैली को देखते हुए उन्हें उच्चशिक्षा विभाग युवक कल्याण एवं खेल मंत्रालय के अधीन संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के जिला संगठक का दायित्व दिया गया है। जो प्रदेश में एकमात्र स्कूल शिक्षा विभाग से होकर भी उच्चशिक्षा विभाग में यह दायित्व निर्वहन कर रहे हैं। ।

दूसरों की सोच से अधिक कर दिखाना ही आपकी सफलता है।

तारापुर विद्यालय में वर्ष 2006 से रा.से.यो. एवं 2017 से एनसीसी की इकाई संचालित है। जिले का यह विद्यालय जहां एनसीसी एवं एनएसएस दोनों है तथा दोनों के माध्यम से विद्यार्थी उपलब्धियों के कीर्तिमान भी स्थापित कर रहे हैं । राष्ट्रीय सेवा योजना के इकाई को राज्य स्तर पर उत्कृष्ठ इकाई (स्कूल) एवं सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम अधिकारी का पुरस्कार प्राप्त हो चुका है वहीं विद्यालय के एनसीसी ऑफिसर किरण कुमार पटेल के मार्गदर्शन में यहां के विद्यार्थी भूपेन्द्र कुमार यादव को मुख्यमंत्री पुरस्कार से नवाजा जा चुका है

विद्यालय की प्रतिभाएं जिन्होंने संस्था को किया गौरवान्वित

क्रमांक	विद्यार्थी का नाम	चयनित विभाग/परीक्षा	पदनाम
1	भोजराम पटेल	सिविल सर्विस	पुलिस विभाग, आईपीएस
2	रूपेन्द्र पटेल	सिविल सर्विस	राजस्व विभाग, डिप्टी कलेक्टर
3	संजय पटेल	बैकिंग	मैनेजर, सेन्ट्रल बैंक
4	फणिन्द्र पटेल	बैंकिंग	मैनेजर, यूनियन बैंक
5	डॉ. डोलेश्वर पटेल	मेडिकल विभाग	चिकित्सक, अस्थि रोग विशेषज्ञ
6	डॉ. मुकेश पटेल	मेडिकल विभाग	रेडियोलॉजिस्ट
7	डॉ. लखन पटेल	मेडिकल विभाग	ब्लाक मेडिकल ऑफिसर लैलूंगा
8	डॉ. किशोर पटेल	चिकित्सा विभाग	सलाहकार चिकित्सक
9	डॉ. जितेन्द्र पटेल	चिकित्सा विभाग	सलाहकार चिकित्सक
10	डॉ. खोबराम पटेल	चिकित्सा विभाग	सलाहकार चिकित्सक
11	डॉ. सविता पटेल	पशु चिकि. विभाग	पशु चिकित्सक, 12 वीं बोर्ड टॉपर, गोल्ड मेडलिस्ट
12	डॉ. अनिता पटेल	पशु चिकि. विभाग	पशु चिकित्सक
13	नीरज पटेल	रक्षा विभाग	अधिकारी
14	बीरबल सिदार	रक्षा विभाग	अधिकारी
15	अनिल निषाद	रक्षा विभाग	अधिकारी
16	पुष्पेन्द्र पटेल	रक्षा विभाग	अग्निवीर (नेवी)

उपरोक्त प्रतिभाओं के अतिरिक्त इंजीनियर, शिक्षक तथा अन्यान्य सेवा क्षेत्र में भी यहां से विद्यार्थी चयनित होकर अपने विद्यालय को गौरवान्वित कर रहे हैं ।

तारापुर विद्यालय के शिक्षकगण

क्रमांक	शिक्षक का नाम	पदनाम	प्रभार एवं दायित्व
1	श्री भोजराम पटेल	प्र. प्राचार्य/व्याख्याता 'अर्थशास्त्र'	राष्ट्रीय सेवा योजना जिला संगठक
2	श्री किरण कुमार पटेल	व्याख्याता जीव विज्ञान	एनसीसी ऑफिसर, परीक्षा एवं PFMS प्रभारी
3	श्रीमती संगीता पाण्डेय	व्याख्याता वाणिज्य	वर्तमान में चक्रधरनगर हायर सेकेण्डरी रायगढ़ में संलग्न
4	श्रीमती मंजू पटेल	व्याख्याता राजनीति शास्त्र	शाला विकास/एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी
5	श्री चन्द्रशेखर पटेल	व्याख्याता वाणिज्य	रेडक्रॉस प्रभारी
6	श्री फणेन्द्र कुमार पटेल	व्याख्याता गणित	.....
7	श्रीमती चंद्रकांता सिदार	व्याख्याता अंग्रेजी	क्रिया कलाप प्रभारी
8	श्रीमती ज्योति देवांगन	व्याख्याता रसायन शास्त्र	विज्ञान प्रभारी
9	श्रीमती नीलम मालाकार	व्याख्याता भौतिक शास्त्र	तकनीकी प्रभारी
10	श्रीमती व्ही पाणी	पीटीआई (व्यायाम निदेशक)	वर्तमान में रायगढ़ स्टेडियम में संलग्न
11	श्री रामेश्वर डनसेना	सहायक शिक्षक विज्ञान	लेखन एवं दस्तावेज प्रभारी
12	श्रीमती रीता चौहान	सहायक शिक्षक विज्ञान	पुस्ताकलय प्रभारी
13	श्री कुमार साहू	प्रधान पाठक	माध्यमिक खंड
14	श्रीमती सुधा बाला नायक	उच्च वर्ग शिक्षक	स्काउट एंड गाईड प्रभारी
15	मनोज कुमार पटेल	उच्च वर्ग शिक्षक	एनएसएस कार्यक्रम सहायक
16	श्रीमती किरण पटेल	उच्च वर्ग शिक्षक	विविध क्रिया कलाप सहयोगी
16	श्रीमती सरिता पटेल	सहायक ग्रेड-3	कार्यालय प्रभार
17	श्री अलेखराम सिदार	सहायक ग्रेड-3	कार्यालय सहयोगी
18	श्री महेन्द्र कुमार सिदार	भृत्य	कार्यालय सहायक

वनांचल का एक आदर्श शिक्षण संस्थान
रायकेरा शासकीय विद्यालय

रामकुमार पटेल, व्याख्याता
कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो

छत्तीसगढ़ प्रदेश के रायगढ़ जिले के घरघोड़ा तहसील अंतर्गत जिला मुख्यालय रायगढ़ से 52 एवं घरघोड़ा विकास खंड से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक गांव है-रायकेरा जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1132.76 हेक्टेयर है। ग्रामीण क्षेत्र में पहाड़ के किनारे पर बसा रायकेरा गांव जोकि प्राकृतक सुंदरता स्वयं में समेटे हुए यहां ग्रामीण जनजीवन मुख्य रूप से कृषि पर आधाारित है इस क्षेत्र में निवास करने वाले ग्रामीणों एवं उनके बच्चों के जीवन में नई क्रांति और सुधार लाने के उद्देश्य से वर्ष 1997 में रायकेरा विद्यालय की स्थापना हुई। विद्यालय में निरंतर बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं ग्रामीण निवासियों की जीवन में सुधार लाने हेतु कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए। वर्ष 2013 में विद्यालय की कमान प्राचार्य श्री एस .के. करण ने संभाली तब से विद्यालय दिन प्रतिदिन प्रगतिशील रहा।

इस विद्यालय के उपलब्धियों की यात्रा में - वर्ष 2016 में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार एवं 1 लाख रुपये की नगद से विद्यालय को सम्मानित किया गया। वर्ष 2018 में विज्ञान के क्षेत्र में विद्यालय ने अनूठे प्रयास किए प्राचार्य के कुशल नेतृत्व में संकुल स्तर से लेकर राज्य स्तर तक नए नवाचारओं का प्रयोग कर विज्ञान के क्षेत्र में अपना परचम लहराया।

जब पूरा देश कोविड - 19 की महामारी से जूझ रहा था। तब विद्यालय के सभी कर्मचारी अपने कर्तव्यों से पीछे नहीं हटे चाहे शिक्षा के क्षेत्र में हो चाहे कोविड-19 जागरुकता अभियान के क्षेत्र में हो बढ़- चढ़कर हिस्सा लिया। कोविड-19 के समय जिले में सर्वप्रथम ऑनलाइन क्लास शुरु कर एवं सबसे अधिक क्लास लेकर एक नया कीर्तिमान हासिल किया गया। गांव गांव में घर घर जाकर पालकों से संपर्क कर उस महामारी के दौर में सभी को प्रेरित कर शासन की सभी महत्वकांक्षी योजनाओं को धरातल पर उतारा गया।

अनुपस्थित विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने के लिए घर घर जाकर उन्हें विद्यालय से जोड़ा गया। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पालक और शिक्षक दोनों जिम्मेदार होते हैं जिसकी अनूठी पहल लगातार पालक शिक्षक बैठक आयोजित कर पालकों से सामंजस्य स्थापित कर विद्यार्थियों को बेहतर माहौल प्रदान किया गया।

विद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा भी समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाता रहा। पढ़ाई के साथ साथ खेल एवं अन्य गतिविधियां विद्यालय में आयोजित होती रहती हैं जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके। प्राचार्य की दूरदर्शिता विद्यालय के सभी स्टाफ एवं विद्यार्थियों की मेहनत से वर्ष 2022 में वार्षिक पत्रिका स्वयंप्रभा का विमोचन हुआ पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के साहित्य गतिविधियों के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना जिससे उनके अंदर छुपी प्रतिभा को निखारा जा

ईश्वर हमारी परीक्षा लेते हैं और वही हमें उसमें सफल होने का सामर्थ्य भी देते हैं ।

सके बालपन से ही लेखन की ओर बच्चों को आकर्षित करने की दिशा में काम किया जा सके।

वर्ष 2022 में विद्यालय में स्वच्छता के सभी मापदंडों का पूरा करते हुए ओवरऑल 986 : एवं 5 स्टार रैंक प्राप्त कर पूरे प्रदेश में स्वच्छ विद्यालय अवार्ड प्राप्त कर एक नया इतिहास रचा गया। स्थापना काल से लेकर आज तक यह विद्यालय ने अनेक सकारात्मक परिवर्तन के दौर देखे हैं और इन परिवर्तनों के फलस्वरुप आज पूरे जिले में अपनी एक अलग पहचान बनाने में यह विद्यालय कामयाब रहा।

विद्यालय भवन के दोनों ओर किचन गार्डनिंग और मुख्य द्वार से रोड तक बहुत सुंदर गार्डनिंग की गई गई है। विद्यालय के चारों ओर बाउंड्री वाल मुख्य मार्ग से विद्यालय परिसर में प्रवेश तक कंक्रीट पक्की सड़क सड़क के किनारे गमलों में विभिन्न प्रकार के पौधे विद्यालय के आकर्षक केंद्र के बिंदु बने हुए हैं।

विद्यार्थियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए समय-समय पर स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाते हैं। बालिकाओं के लिए अलग से 'आइसोलेशन रुम' विद्यालय में तैयार किया गया है जहां पर एक महिला शिक्षक के संरक्षण में बालिकाओं को किसी प्रकार की असुविधा ना हो उसकी विशेष सुविधा की गई है।

विद्यालय की सबसे अनोखी पहल जब किसी छात्र का जन्म दिवस हो तो स्वच्छता का संदेश देते हुए विद्यालय को एक साबुन दान कराया जाता है। बालिकाएं अपने जन्मदिवस पर एक सैनिटरी पैड पावना बैंक को डोनेट करती है जिससे स्वच्छता के प्रति अच्छा संदेश जाता है। समय-समय पर प्राचार्य द्वारा विद्यार्थियों को मोटिवेटेड एवं भविष्य में क्या बनना है किस प्रकार से पढ़ाई करना है अपने कैरियर को कैसे बनाना है। सामान्य ज्ञान के साथ समाज होने वाली घटनाओं की जानकारी के लिए विद्यालय में प्रतिदिन विद्यार्थियों को न्यूज़पेपर का अध्ययन पुस्तकालय में कराया जाता है। यहां का पुस्तकालय बहुत ही सुसज्जित तरीके से लगभग 1807 बहुमूल्य प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु उपलब्ध है। जिन्हें विद्यार्थी समय निकालकर पुस्तकालय में अध्ययन करते हैं। बालक एवं बालिकाओं के पृथक शौचालय के साथ-साथ फिमेल स्टाफ एवं मेल स्टॉप के शौचालय भी की व्यवस्था की गई है।सूखा कचरा एवं गीला कचरा के लिए दो कूड़ादान विद्यालय में बनवाए गए हैं। विद्यालय का मैदान बहुत बड़ा एवं आकर्षक है जिसमें विद्याथ अपने खेल पीरियड में क्रिकेट व वालीबाल, आदि गेम का आनंद लेते हैं। पढ़ाई के क्षेत्र में गणित, विज्ञान, कला, कॉमर्स सभी संकाय संचालित है। दिव्यांग विद्यार्थियों के विद्यालय में प्रवेश करने हेतु रेलिंग दिव्यांग शौचालय, गर्ल्स कॉमन रुम, विद्यार्थियों की पानी पीने हेतु साफ एवं स्वच्छ जल की संपूर्ण व्यवस्था विद्यालय में आयोजित की गई है। विद्यालय में अध्यापन काल की शुरुआत छत्तीसगढ़ महतारी गीत से होती है तथा विद्यालय का समापन राष्ट्रगान के साथ में होता है ।

वर्तमान में यह विद्यालय शासन की महत्वकांक्षी योजना स्वामी आत्मानंद स्कूल में परिवर्तित हो गया है।

सफलता उन्हीं को नसीब होती है जो कर्म के प्रति समर्पिण का भाव रखते हैं ।

तरकेला का सरकारी स्कूल है असर कारी

छः दशक से है उपलब्धियों की लंबी कतार...

रायगढ़ जिला मुख्यालय से 8 कि.मी. दक्षिण पश्चिम में स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तरकेला जिसकी स्थापना वर्ष 1960 में ग्राम के प्रतिष्ठित गौटिया स्व. चंद्रशेखर चौधरी के प्रयास से जनसहयोग लेकर हुआ था। उन दिनों ग्रामीण अंचल में हायर सेकेण्डरी विद्यालय नहीं होने से ग्रामीणजन उच्च माध्यमिक शिक्षा से वंचित रह जाते थे इसलिए इस विद्यालय की स्थापना एवं संचालन में ग्रामीणजनों ने उत्साह के साथ सहयोग किया ।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तरकेला, रायगढ़ जिले का एक आदर्श विद्यालय है। 'अनुशासन व परिणाम' विद्यालय की पहचान है। सरकारी स्कूल तरकेला की पहचान न केवल रायगढ़ जिले में वरन् छत्तीसगढ़ में एक आदर्श स्थान रखता है। वर्ष 2004 से श्री पी.पी. खलखो प्राचार्य के रुप में पदस्थ हैं। जिनके द्वारा नियमितता, समय की पाबंदी, अनुशासन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के साथ-साथ सभी पाठ्य सहगामी क्रियाएं, खेलकूद स्कूल में संचालित होती है।

विद्यालय के प्रावीण्य सूची में बनता है रिकार्ड - छ.ग. हाई स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 2008 में इस विद्यालय से छात्र वीरेन्द्र कुमार पटेल आत्मज श्री ईश्वर प्रसाद पटेल ने सरकारी स्कूल तरकेला से 93.6 प्रतिशत प्राप्त कर प्रावीण्य सूची में तृतीय स्थान बनाया । वर्तमान में वीरेन्द्र कुमार पटेल रेंजर के पद पर नियुक्त होकर कवर्धा जिले में पदस्थ हैं। इसी तरह हाई स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 2013 में विद्यालय की छात्रा कु. भारती पटेल पिता श्री नरेश पटेल ने 96.4 प्रतिशत प्राप्त कर प्रावीण्य सूची में पंचम स्थान बनाया। वर्तमान में कु. भारती पटेल भारत सरकार के डाक सेवा विभाग में अपनी सेवाएं दे रही हैं।

तरकेला विद्यालय को सबसे अधिक गौरव का स्वर्णिम इतिहास रचा हाईस्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 2014 की प्रावीण्य सूची में सुधांशु तिवारी पिता श्री वेदप्रकाश तिवारी ने 97.5 प्रतिशत प्राप्त कर प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सुधांशु तिवारी छ.ग. हायर सेकेण्डरी स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 2016 में भी प्रावीण्य सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा को प्रमाणित किया। शिक्षकों व विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में सुधांशु तिवारी ने JEE एडवांस्ड एक्जाम क्रेक

कर आईआईटी खड़कपुर में प्रवेश लिया। डबल डिग्री बी.टेक आनर्स एवं बी.आर्किटेक्ट आनर्स इंटिग्रेटेड एम.एस.सी. में सिल्वर मैडल प्राप्त किया। सुधांशु तिवारी वर्तमान में हनीवेल साल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बेंगलुरु में मैकेनिकल डिजाइन इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं।

इसी कड़ी में विद्यालय के मेधावी छात्र योगेश चौधरी ने JEE, NIT परीक्षा निकालकर रायपुर में कम्प्यूटर साइंस में उच्च स्थान प्राप्त किया। ज्ञात हो कि तरकेला हायर सेकेंडरी स्कूल से अब तक शताधिक छात्रों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर अपनी उपलब्धि स्वर्णाक्षरों में अंकित की है । विदित हो कि वर्तमान जिला पंचायत अध्यक्ष श्री निराकार पटेल जी शा.उ.मा.वि. तरकेला के पूर्व छात्र हैं ।

अध्ययन के साथ क्रीड़ा में भी अग्रणी

तरकेला स्कूल न केवल परीक्षा परिणाम में बल्कि राज्यस्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता, रोल बॉल, रग्बी बॉल, फ्लोर बॉल में 100 से अधिक खिलाड़ी प्रतिनिधित्व कर चुके हैं । राष्ट्रीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता में 36 खिलाड़ी प्रतिनिधित्व कर स्वर्ण पदक रजक पदक कांस्य पदक प्राप्त कर सरकारी स्कूल का मान बढ़ाएं हैं । विभिन्न खेलों में उत्कृष्ठ प्रदर्शन के लिए 7 खिलाड़ियों को 21 हजार व 15 हजार के नगद पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है ।

सीसीटीवी कैमरा से लैस है विद्यालय

ग्रामीण अंचल में स्थित होने के बाद भी शा.उ.मा.वि. तरकेला के सभी क्लॉस रुम, शिक्षक कक्ष, प्राचार्य कक्ष ग्राउंड व प्रवेश द्वार पर सी.सी. कैमरा लगा हुआ है। जिससे छात्र-छात्राओं के साथ शिक्षक भी स्व अनुशासित रहते हैं । विद्यालय के शिक्षकों व छात्राओं में विद्यालय समय पर आने जाने में नियमितता रहती है । शिक्षक कक्षा में जाने से पूर्व अपने अध्यापन बिंदु की तैयारी करके आते हैं । छात्र 16 जून से 30 अप्रैल तक पूर्ण शालेय गणवेश में आते हैं । जीव विज्ञान, भौतिक, रसायन व भूगोल की प्रायोगिक कार्य सत्र के प्रारंभ से हो जाती है । स्मार्ट क्लास के माध्यम से भी छात्र अध्यापन करते हैं । प्रतिवर्ष शालेय स्तर पर वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता सांस्कृतिक कार्यक्रम पुरस्कार वितरण आयोजित होता है ।

शा.उ.मा.वि. तरकेला में न केवल क्षेत्र के बल्कि रायगढ़ जिले के अलावा, सारंगढ़-बिलाईगढ़, महासमुंद, सक्ती, जांजगीर चांपा के छात्र भी अपने रिश्तेदारों के घर रहकर 30-40 गांव के विद्यार्थी तरकेला स्कूल में पढ़ाई करते हैं । तरकेला विद्यालय के शिक्षण व परिणाम से प्रभावित होकर निजी विद्यालय के कई छात्र सरकारी स्कूल तरकेला में प्रवेश लेकर अध्यापन कर सफल हो रहे हैं । विद्यालय के अधिकांश के शिक्षकों के पुत्र-पुत्रियां शासकीय विद्यालय तरकेला में हायर सेकेण्डरी तक अध्ययन किये हैं। तरकेला स्कूल में माध्यमिक खंड में 1 प्रधान पाठक एवं 5 शिक्षक पदस्थ हैं । हायर सेकेण्डरी स्कूल में एक प्राचार्य, 11 विषय विशेषज्ञ व्याख्याता तीन सहायक शिक्षक विज्ञान एक शारीरिक शिक्षा शिक्षक कार्यालयीन स्टॉफ पदस्थ हैं । विद्यालय में त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा परिणाम अभिभावकों की उपस्थिति में विषय शिक्षक कक्षा शिक्षक चर्चा कर प्रदान करते हैं । विद्यालयीन कक्षा शिक्षकों द्वारा किसी छात्र से 3 दिवस अनुपस्थित होने पर नोटिस जारी किया जाता है। स्वास्थ्यगत कारणों के अलावा अन्य कारण स्वीकार नहीं किया जाता है । विद्यालय के समस्त गतिविधियों व कार्यक्रमों में शाला विकास एवं प्रबंधन समिति की पूर्ण सहभागिता होती है । ग्राम पंचायत तरकेला के पंच सरपंच, क्षेत्र के जनप्रतिनिधि व शिक्षा विभाग के अधिकारी स्कूल निरीक्षण के लिये सतत् आते रहते हैं । विद्यालय परिवार छात्र अभिभावक ग्रामवासी, जनप्रतिनिधियों के बीच मधुर संबंध व व्यवहार है। वर्तमान में शा.उ.मा.वि. तरकेला के प्राचार्य श्री पी.पी. खलखो के मार्गदर्शन में गुणवत्तापूर्ण अध्यापन एवं शिक्षण व्यवस्था, पाठ्यक्रम की पूर्णता, उत्कर्ष रायगढ़ योजना का क्रियान्वयन इकाई मूल्यांकन, नोट्स बनाना, जाचने का कार्य किया जा रहा है ।

प्रस्तुति
नेतराम साहू
व्याख्याता - रसायन शास्त्र
शा.उ.मा.वि. तरकेला

समय की एक बहुत अच्छी बात है कि जैसा भी है गुजर जाता है।

जहां प्रवेश के लिए लालायित रहते हैं ग्रामीण विद्यार्थी

उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में पहचान है सारंगढ़ के हरदी हायर सेकेंडरी स्कूल की

पूर्ववर्ती रायगढ़ जिला वर्तमान सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिला के ग्रामीण अंचल स्थित शिक्षा संस्थान शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हरदी ग्रामीण अंचल में एक उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल है। यह विद्यालय अपने प्राचार्य श्रीमती व्ही. ठाकुर के कुशल नेतृत्व मार्गदर्शन तथा ऊर्जावान एवं समर्पित शिक्षक शिक्षिकाओं के कर्तव्यनिष्ठा तथा शाला परिवार के सहयोग से सतत रूप से पिछले कई वर्षों से छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य कर रही है । इस संस्था की उपलब्धियों में मुख्य रूप से सत्र 2014-15 एवं 2018-19 में इंस्पायर अवार्ड में नेशनल स्तर पर प्रस्तुति तथा वर्ष 2013 से लगातार राज्य स्तर पर विज्ञान प्रदर्शनी पर प्रस्तुति देते आ रहा है । युवा एवं कला उत्सव में राज्य स्तर पर प्रस्तुति, खेलकूद में जिला संभाग एवं राज्य स्तर पर चयन होना इस विद्यालय की उपलब्धियां में शामिल है ।

विद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की भी इकाई है जो अपने उच्च अधिकारियों के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना के गतिविधि एवं कार्यक्रमों का नियमित रूप से संचालन करती है जिसमें प्राचार्य श्रीमती व्ही. ठाकुर का विशेष सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त होते रहता है। सारंगढ़ विकासखंड के ग्रामीण विद्यालय में सर्वाधिक दर्ज संख्या वाला संस्था होने का गौरव इस स्कूल को प्राप्त है । विद्यालय में पर्याप्त भवन और कुछ मूलभूत सुविधाओं के अभाव के बावजूद भी यहां बोर्ड परीक्षा का परिणाम प्रति वर्ष 85 प्रतिशत से अधिक रहता है संस्था द्वारा प्रत्येक शनिवार को छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए कला संस्कृति सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है । जिसके तहत वाद- विवाद प्रतियोगिता, माक संसद की कार्यवाही, तात्कालिक भाषण, क्विज प्रतियोगिता, कलश सज्जा जुड़ा केश सज्जा रंगोली प्रतियोगिता मेहंदी प्रतियोगिता अल्पना प्रतियोगिता गरबा नृत्य राउत नाचा पंथी नृत्य राखी बनाना इत्यादि गतिविधियों का आयोजन छात्र-छात्राओं के भीतर छुपी प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से किया जाता है। इन गतिविधि और उपलब्धियों के कारण इस स्कूल मेंअन्य विकासखंड के छात्र-छात्राएं तथा ग्राम हरदी के आसपास से भारी संख्या में प्रत्येक वर्ष प्रवेश लेने को उत्सुक रहते हैं ।

श्रीमती व्ही. ठाकुर
प्राचार्य

ज्ञान हमेशा कष्टों के माध्यम से ही आता है।

खण्ड 3

हमारे प्रेरक श्रमवीर शिक्षक

वनांचल के द्रोणाचार्य - परमानंद पटेल

पिछड़े समुदाय के बच्चों को निःशुल्क शिक्षण देकर उत्कृष्ट विद्यालयों में कराते हैं प्रवेश

परमानंद पटेल
व्याख्याता/प्रभारी प्राचार्य
शा.उ.मा.वि. पुसल्दा

रायगढ़ जिला के आदिवासी बाहुल्य धरमजयगढ़ विकासखंड अंतर्गत हायर सेकेंडरी स्कूल पुसल्दा में पदस्थ व्याख्याता परमानंद पटेल पिछले 11 वर्षों से वनांचल क्षेत्र के सुविधा विहीन आर्थिक रूप से कमजोर व पिछड़े तबके के ग्रामीण आदिवासी वनवासी विद्यार्थियों को निःशुल्क कोचिंग एवं शिक्षण देकर विभिन्न प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं के लिए तैयारी कराते हैं। उनके इस परिश्रम का परिणाम यह है कि अब तक जवाहर नवोदय विद्यालय के लिए 99, एकलव्य विद्यालय में 161, जवाहर उत्कर्ष में 03, सैनिक स्कूल के लिए 01, एनएमएमएस में 21, कुल मिलाकर अब तक 291 विद्यार्थियों का चयन शासन की महत्वपूर्ण योजना के तहत संचालित विभिन्न उत्कृष्ठ विद्यालयों में हो चुका है ।

धरमजयगढ़ विकासखंड के हाथी प्रभावित छाल अंचल से 10 किलोमीटर दूर स्थित ग्राम औरानारा निवासी परमानंद पटेल फरवरी 1984 में सहायक शिक्षक पद पर नियुक्त हुए तत्पश्चात् पदोन्नत होकर शिक्षक बने । शिक्षक से पदोन्नत होकर वर्तमान में व्याख्याता इतिहास के पद पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पुसल्दा में आप पदस्थ हैं । अपने स्कूल की ड्यूटी के पश्चात् अतिरिक्त समय अपने निवास में ही विद्यार्थियों को नवोदय विद्यालय, सैनिक स्कूल, एकलव्य स्कूल, जवाहर उत्कर्ष, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज इत्यादि परीक्षाओं के लिए समर्पित भाव से पूर्णतः निःशुल्क शिक्षण देते हुए गरीब तबके के बच्चों को पढ़ाते हैं ।

ग्रामीण अंचल में लोग इन्हें द्रोणाचार्य के रूप में जानते और मानते हैं इन्हें मान-सम्मान देते हैं। परमानंद पटेल लोगों के इसी सद्भावना और विद्यार्थियों के श्रद्धा भाव को अपना वास्तविक पुरस्कार मानते हैं । हालांकि वे शासन स्तर पर भी अनेक पुरस्कारों से नवाजे जा चुके हैं और उनके योगदान को रायगढ़ जिला शिक्षा विभाग द्वारा भी विशेष रूप से सराहना की जा चुकी है आर्थिक रूप से कमजोर व पिछड़े तबके के बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा में जोड़ने के लिए परमानंद जैसे शिक्षकों का योगदान निश्चित रूप से अनुकरणीय एवं प्रसंशनीय है ।

चित्र नहीं चरित्र की पूजा करें और व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व की पूजा करें।

अपनी सेवा और समर्पण से बदली स्कूल की तस्वीर

आशीष रंगारी

शासकीय प्राथमिक शाला जोरापाली, विकास खंड एवं जिला रायगढ़ छत्तीसगढ़ में पदस्थ प्रधान पाठक आशिष रंगारी ने अपने पूर्ववर्ती संस्था शासकीय प्राथमिक शाला हरदीझरिया, रायगढ़ में स्वयं की मेहनत पालकों के सहयोग और छात्रों को प्रेरित करते हुए अपने विद्यालय की तस्वीर इस प्रकार से बनायी कि आज यह विद्यालय एक आकर्षण का केन्द्र बनकर पालकों और विद्यार्थियों के लिए सही अर्थों में सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास का श्रोत केन्द्र बन गया है।

21 जुलाई 1998 से शिक्षा विभाग में नियुक्त होने के पश्चात् अपनी शिक्षकीय सेवा देते हुए आशीष 26 नवंबर 2010 से शासकीय प्राथमिक शाला हरदीझरिया रायगढ़ में पदस्थ हुए। वर्तमान में जोरापाली प्राथमिक शाला में सेवारत प्रधानपाठक आशीष रंगारी अपनी सेवा और समर्पण की कहानी इस रूप में व्यक्त करते हैं -

शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कार की जड़ों में खाद देते हैं और अपने परिश्रम से संस्कारों को सींचकर शक्ति व सामर्थ्य में परिवर्तित करते हैं। किसी भी राष्ट्र के वास्तविक निर्माता उस देश के शिक्षक ही तो होते हैं जिनके मजबूत कंधों पर एक विकसित समृद्ध और हर्षित राष्ट्र के भविष्य गढ़ने की महती जिम्मेदारी होती है। भारतीय समाज में जहां शिक्षा को शरीर मन और आत्मा के विकास का साधन माना गया है वहीं, शिक्षक को समाज के समग्र व्यक्तित्व के विकास का उत्तर दायित्व सौंपा गया है। हम बात कर रहे हैं वर्ष-2022 में राज्य शिक्षक पुरस्कार (राज्यपाल पुरस्कार) से सम्मानित, सतत धैर्य, शालीनता, कड़ी मेहनत और विशुद्ध प्रतिभा के बेजोड़ मेल श्री आशीष रंगारी की। जिन्होंने अपने कभी हार न मानने के जज़्बे से नौनिहालों के उम्मीदों और नाउम्मीदी के बीच बिखरते सपनो को हौसलों व आत्मविश्वास का पंख देकर पक्षियों के मानिंद खुले आकाश में उड़ना सिखाया। समाज मे कुछ एक ऐसी शख्सियत होते हैं जिनकी कला की विभिन्न विधाओं पर मजबूत पकड़ होती है। ऐसे ही बहुआयामी व्यक्तित्व व विशुद्ध प्रतिभा के धनी हैं शिक्षक आशीष रंगारी। वर्तमान में वे शासकीय प्राथमिक शाला जोरापाली रायगढ़ में प्रधान पाठक के पद पर कार्यरत हैं। प्रधान पाठक के रूप में इनकी पहली पदस्थापना वर्ष 2010 में शासकीय प्राथमिक शाला हरदी झरिया रायगढ़ में हुई। जहां भवन विहीन विद्यालय व तमाम जरूरी बुनियादी सुविधाओं की कमी से जूझते नौनिहालों की आंखे नाउम्मीद हो चुकी थी।नौनिहालों की ना उम्मीद हो चुकी आंखों को ही देखकर इन्होंने ठान लिया कि,ष्संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है असंभव के आगे निकल जानाष। यही सोच लिए एक सरकारी विद्यालय को असरकारी बनाने की मुहिम में ये जी जान से जुट गए और एक सरकारी विद्यालय को अपनी कड़ी मेहनत समर्पण और प्रयासों से असरकारी बनाते हुए एक उत्कृष्ट विद्यालय में तब्दील कर दिया।

स्कूल के भौतिक संसाधन की उपलब्धता एवं शैक्षिक वातावरण के निर्माण हेतु इन्होंने अपने वेतन के पैसों से विद्यालय के बच्चों की पेयजल व्यवस्था हेतु गांव से विद्यालय तक नल की पाइप लाइन बिछाया एवं बच्चों को पेयजल उपलब्ध करवाया। प्रदेश का पहला नवाचारी प्रयास करते हुए इन्होंने अपने वेतन के पैसे से विद्यालय के छात्र छात्राओं हेतु मध्यान्ह भोजन के लिए

डाइनिंग टेबल का निर्माण कराया ताकि बच्चे डाइनिंग टेबल पर मध्यान्ह भोजन करते हुए नौनिहालों को एक स्तरीय विद्यालय में पढ़ने व आत्मसम्मान की अनुभूति हो सके।विद्यालय में बरसात के समय बरसात का पानी जमा हो जाता था,इस समस्या के स्थाई समाधान के लिए अपने वेतन के पैसों से ही पूरे शाला प्रांगण की पक्की ढलाई करवाई। छात्र छात्राओं के चारों पहर समय शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध रहे, इस हेतु अपने वेतन के पैसों से महत्वपूर्ण सभी शैक्षिक पाठ क्रम को कक्षा कमरों की दीवारों पर वॉल पेंटिंग कराया।ष्बच्चों में पर्यावरण के प्रति रूझान रहे व बच्चे प्रकृति से जुड़े रहे यह ध्यान में रखते हुए अपने वेतन के पैसों से ही शाला प्रांगण में तीन बड़ी बड़ी पक्की क्यारियां और ब्लॉक बनाकर सभी में कारपेट ग्रास लगाया तथा बृहद सुसज्जित गार्डन विकसित किया। साथ ही विद्यालय में अध्धय्यन रत व शाला से उत्तीर्ण हो चुकी बालिकाओं के हाथ से ही उनके नाम पर शाला प्रांगण के सामने पूरे मैदान में वृक्षारोपण करवाया जो आज जीवित वृक्ष बन चुके हैं। ये प्रतिवर्ष अपने विद्यालय के सभी बच्चे हेतु प्रतिवर्ष कॉपी,पेन,जूते,टाई,एवं बैच,खरीद कर प्रदान करते हैं।अपने निजी प्रयासों से ही सामाजिक संस्था की मदद से स्कूल के सभी बच्चों हेतु बेंच व डेस्क की व्यवस्था कराई, ताकि अध्ययनरत बच्चों को एक स्तरीय विद्यालय में पढ़ने की अनुभूति हो एक उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण निर्मित हो सके। विद्यालय के सभी बच्चे प्राथमिक स्तर पर ही कंप्यूटर का ज्ञान अर्जित कर सकें, इस हेतु निजी प्रयासों से ही सामाजिक संस्था की मदद से बच्चों हेतु कंप्यूटर सेट की व्यवस्था करायी। गांव की 2 बेटियों की पूरे उच्च शिक्षा का आजीवन खर्च वहन कर उन्हें गोद लिया। भारत सरकार के स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत खुले में शौच मुक्त गांव व ओडीएफ ग्राम हेतु स्कूली बच्चों के साथ घर-घर जाकर लोगों को शौचालय बनवाने हेतु प्रेरित कर हरदी झरिया गांव को खुले में शौच मुक्त ग्राम घोषित करवाने में अहम भूमिका निभाई। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ हेतु प्रतिवर्ष रैली के माध्यम से घर-घर जाकर बेटियों के जन्म पर उनके पोषण, स्वास्थ्य व शिक्षा हेतु प्रेरित करते हैं। तथा गांव में बेटियों के जन्म पर उनके घर जाकर शालेय परिवार के साथ बेटियों के जन्म पर पूरे परिवार को सौभाग्य तथा गौरव प्राप्ति की अनुभूति से अवगत करा माताओं को सम्मानित करते हैं। छात्र छात्राओं को समय-समय पर उनकी आवश्यकताओं को पहचान कर उन्हें अध्ययन सामग्री,कापी, पुस्तक,पेन व शैक्षणिक सामग्री प्रदान करते हैं। छात्र छात्राओं की आवश्यकता को पहचानते हुए उन्हें प्रतिवर्ष जूता मोजा गर्म कपड़े इत्यादि सहर्ष प्रदान करते हैं।

कोरोना काल से लेकर अब तक शिक्षा विभाग रायगढ़ छत्तीसगढ़ की की विभिन्न शैक्षणिक योजनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु जिला मीडिया पकोष्ठ में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। सामाजिक क्षेत्र में सतत सक्रिय रहकर अपने सम्बद्ध टीम के साथ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ,राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान,शहीद परिवारों का सम्मान, रक्तदान, करोना में राहगीरों के लिए निशुल्क भोजन की व्यवस्था, अस्पतालों में व्हीलचेयर तथा कूलर प्रदाय आदि में अग्रणी सहभागिता रहती है।विभिन्न सामाजिक,सांस्कृतिक,कार्यक्रम में उत्कृष्ट मंच संचालन करते हैं।

समय-समय पर छात्रों की शैक्षणिक समस्याओं को हल करते हैं,और जरूरतमंद छात्र-छात्राओं के आर्थिक सहायता भी करते हैं। समय-समय पर इनके लिखे सारगर्भित लेख अखबार में प्रकाशित होते हैं। इनके समर्पण लगन कर्तव्यनिष्ठा तथा शैक्षिक एवं सामाजिक गतिविधियों में उत्कृष्ट सहभागिता हेतु समाज, विभिन्न संगठनों तथा प्रशासन व शासन स्तर पर उन्हें पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए हैं। स्वच्छता विद्यालय पुरस्कार में इनका विद्यालय शासकीय ाथमिक शाला हरदी झरिया 5 स्टार रेटिंग अर्जित करते हुए स्वच्छता का जिला स्तरीय पुरस्कार प्राप्त विद्यालय है व्यवहार कुशल,मृदुभाषी होने के कारण अपने सहकर्मियों के साथ इनके घनिष्ठ व मधुर संबंध है। अच्छी अध्यापन शैली व्यवहार कुशल होने के कारण छात्र-छात्राओं एवं पालकों से इन्हें एक विशेष आदर भाव व सम्मान प्राप्त है।अपने उत्कृष्ट प्रयासों हेतु ये अपने जिला शिक्षा विभाग रायगढ़ के जिला शिक्षा अधिकारी आदरणीय श्री आर.पी. आदित्य जी, जिला मिशन समन्वयक समग्र शिक्षा रायगढ़ श्री रमेश देवांगन जी, एपीसी समग्र शिक्षा रायगढ़ द्वय श्री भुनेश्वर पटेल जी श्री भूपेंद्र पटेल जी के सतत मार्गदर्शन प्रेरणा व सहयोग के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, इन सभी के मार्गदर्शन और प्रेरणा के बिना यह बिल्कुल भी संभव नहीं था।

शासकीय विद्यालय को बेहतर बनाने हेतु इनका कहना है कि,ष्शिक्षकीय सेवा एक आदर्श व सर्वश्रेष्ठ सेवा है,आप जहां भी हैं सोचें..आपके होने से वहां क्या बेहतर हो सकता है,..आपका होना, वहां क्या बेहतर व सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। किसी बेहतर व रचनात्मक शुरूआत के लिए किसी और का इंतजार ना करें..। यदि किसी बेहतर मकसद के लिए खड़े हो गए हों तो एक पेड़ की तरह खड़े रहें, व संघर्ष में गिरें भी तो एक बीज की तरह गिरें.. ताकि बीज की तरह दोबारा उगकर व उठकर उसी मकसद के लिए पुनः संघर्ष कर सकें..

हम जितना संघर्ष करेंगे, जीत हमारी उतनी की शानदार होगी।

विद्यालय बने हमारे स्वाभिमान का प्रतीक

अमतृ लाल साहू
व्याख्याता (अर्थशास्त्र)
शा.उ.मा.वि. चोरिया
जिला-जांजगीर चाम्पा

कर्मभूमि पर फल के लिए
श्रम सब को करना पड़ता है।
रब सिर्फ लकीरें देता है
रंग हमको ही भरना पड़ता है।।

एक शिक्षक चाहता है कि वह जिस विद्यालय में कार्य कर रहा है, वह सभी दृष्टिकोण से श्रेष्ठ हो। विद्यालय का नाम हो, परीक्षा परिणाम बेहतर हो, विद्यार्थी अनुशासित हों, स्कूल भवन सुन्दर एवं सर्व सविुविधायुक्त हो। स्कूल परिसर वृक्षों से आच्छादित और फूलों से सुरभित हो। परन्तु ये सारी चीजें केवल इच्छा करने मात्र से ही नहीं मिल जाती बल्कि इसके लिए त्याग, समर्पण और कुछ कर गुजरने की तमन्ना का होना भी आवश्यक है।

मेरे पदस्थ विद्यालय शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चोरिया, जिला-जांजगीर चाम्पा की स्थिति पूर्व में अत्यंत दयनिय थी, जिस भवन में कक्षाएं लगती थी वहां बरसात के दिनों में छप्पर से पानी टपकता था। जिससे कभी-कभी बच्चों को स्कूल से छुट्टी भी देनी पड़ती थी। बरामदे का छत इतना पुराना हो चुका था कि वह टूट-टूट कर गिरते रहता था। हमेशा अनहोनी की आशंका बनी रहती थी। इस समस्या से निजात पाने के लिए हमने स्थानीय विधायक से भेंट एवं चर्चा कर स्कूल भवन के लिए शासन से राशि की मांग की और हमारी भावना का सम्मान करते हुए उन्होंने विद्यालय के वार्षिक उत्सव के अवसर पर शाला भवन निर्माण हेतु शासन से राशि दिलाने की घोषणा की जिससे शिक्षक, शिक्षिकाओं के साथ-साथ विद्यार्थियों में हर्ष व्याप्त हो गयी। विधायक डॉ. खिलावन साहू के प्रयास से विद्यालय के भवन निर्माण हेतु 122.46 लाख रुपये की स्वीकृति प्राप्त हुई एवं नवनिर्मित सर्वसुविधायुक्त भवन तैयार होने के बाद इसका लोकार्पण तात्कालीन मुख्यमंत्री जी के कर कमलों से 26 सितंबर 2018 को सम्पन्न हुआ।

स्कूल भवन तो बना परन्तु बरसात के दिनों में स्कूल परिसर में पानी भरा रहता था। जिससे आने जाने में काफी परेशानी होती थी। इस समस्या से निजात के लिए हमने प्रयास किया तथा ग्राम पंचायत के सरपंच, पालक और शाला विकास समिति से सहयोग लेकर लगभग 300 ट्रैक्टर मिट्टी डालकर स्कूल परिसर को समतल किया गया। आज हमारा विद्यालय सर्वसुविधायकुत भवन में संचालित हो रहा है। विद्यालय परिसर को हरा-भरा करने के उद्देश्य से हमनें विद्यालय में शारदा उद्यान का निर्माण किया। हम जानते हैं कि वृक्ष प्रकृति की एक अनमोल उपहार है एवं इसी से पर्यावरण को स्वच्छ, सुन्दर और हरा-भरा बनाने में सहायता मिलती है। हमारे उद्यान में कदम, अशोक, बटमूल, छातीम और जामुन आदि के वृक्ष जहां हरीतिमा और शीतल छाया प्रदान कर रहे हैं, वहीं तुलसी, गुलाब, मदार, दूध मोगरा और एकजोरा के पौधे अपनी फूलों से वातावरण को पुष्पित और सुरभित कर रहे हैं। हमारे उद्यान की खास विशेषता यह है कि यहां तुलसी की सात प्रजातियों के 350 से अधिक पौधे लगाए गए हैं जो परिवेश को शुद्ध आक्सीजन प्रदान करते हैं। विद्यालय में पर्यावरण संरक्षण और पेड़-पौधों के संवर्धन के लिए इको क्लब का गठन किया गया है। वृक्षों की विशेष देखभाल करने वाले छात्र छात्राओं के लिए वृक्ष मित्र पुरुस्कार प्रदान कर उन्हें प्रेरित एवं सम्मानित किया जाता है।

निर्धन छात्र छात्राओं के लिये हमारे विद्यालय में संवेदना कोष बनाया गया है। इससे गरीब छात्र-छात्राओं की सहायता की जाती है। हमारे द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत प्रतिभावान परंतु आर्थिक रुप से कमजोर विद्यार्थी को गोद लिया गया जिसके कक्षा 9 वीं से लेकर बी.ई. तक की पढ़ाई का सारा खर्च यथा कापी, पुस्तक, फीस, मकान किराया, भोजन आदि का खर्च हम सबने वहन करते हुए उसके अध्ययन में योगदान दिया। आज यह विद्यार्थी इंजीनियर के रुप में सेवा देने के लिए तैयार है। छात्र-छात्राओं को हमारे विद्यालय में रोजगार मूलक शिक्षा के मार्गदशन के हेतु इंजीनियर, डॉक्टर, सैनिक, संगीत शिक्षक आदि को आमंत्रित किया जाता है । तीन वर्ष पूर्व वह हमारे विद्यालय के पूर्व छात्र श्री देवेन्द्र श्रीवास ने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ से तीन गोल्ड मैडल प्राप्त किया और प्रतिष्ठित तबला वादक जाकीर हुसैन एवं माननीया राज्यपाल अनुसुईया उइके के कर कमलों से सम्मानित होकर विद्यालय को गौरवान्वित किया। शासकीय सपंत्ति की सुरक्षा और विद्यालय की हर गतिविधि की जानकारी रखने के लिए हमारे विद्यालय में 18 नग सी. सी.टीव्ही.कैमरा लगाया गया है। विद्यालय के सभी शिक्षक कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार हैं। शिक्षकों और पालकों के बीच मधुर संबंध हैं। हमारे विद्यालय का परीक्षा परिणाम भी उत्साहवर्धक रहता है।

देश को दुनिया के नक्शे में चमकाना है तो हर बच्चे को शिक्षित बनाना है।

अपने कार्य व नवाचार से जीत रही पालकों का विश्वास शिक्षिका लक्ष्मीन पटेल

नारी शक्ति यदि किसी बात को ठान ले तो वह उसे पूरा करके रहती है और वह कर्तव्य सेवा, समर्पण के माध्यम से लोगों के बीच प्रतिष्ठित हो जाती है। ऐसे ही एक उत्साही, सक्रिय एवं सृजनशील शिक्षिका हैं श्रीमती लक्ष्मीन पटेल। रायगढ़ जिला मुख्यालय से संलग्न ग्राम कोसमनारा के प्राथमिक विद्यालय में पदस्थ शिक्षिका लक्ष्मीन पटेल अपने शिक्षा क्षेत्र में नवाचार के माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करते हुए पालकों का विश्वास जीतने में सफल हो रही हैं। सरकारी स्कूलों को प्रभावी बनाने के लिए लक्ष्मीन पटेल अपने विचारों का कुछ इस तरह रखती हैं -

विद्यालय में शिक्षक की भूमिका

शिक्षा व्यवस्था मैं शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक रूपी माली अपने बच्चों में शिक्षा,संस्कार और मूल्यों के बीज बोकर उसको बेहतर से बेहतर ज्ञान रूपी पोषण देकर विकसित करता है । उसे पता है कि किस पौधे पर कौन से खाद का प्रयोग किया जाना हैवह उनके स्तर के अनुसार ज्ञान रूपी खाद परोसता रहता है। जिससे वह एक सुसंस्कृत, स्वस्थ समाज का निर्माण करता है और उसका हिस्सा बन पाता है।

शिक्षा से व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है इसका उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे हिलाना नहीं होता बल्कि बच्चों में उसकी बुद्धि लब्धता को बढाना है।

क्रियात्मक शोध पर हो कार्य

शिक्षण कार्य करते समय शिक्षक को कई सारी समस्याओं और चुनौतियों से गुजारना पड़ता है। और इन्हीं चुनौतियों को लेते हुए मैंने राजीव गांधी शिक्षा मिशन एवं अजीम `मजी फाउंडेशन के संयोजन से आयोजित एक वर्षीय क्रियात्मक शोध पर मुझे कार्य करने का अनुभव मिला ।जिसमें मैंने गणित विषय को चुनकर छोटी कक्षाओं में स्थानीय मान के आधार पर जोड़ की अवधारणा विकसित करने तथा उस पर आने वाली चुनौतियों पर कार्य किया और इस पूरे सत्रीय प्रक्रिया को जिला स्तरीय कार्यक्रम (रिसर्च मड़ई) द्वारा सभी शिक्षकों के साथ अपना अनुभव साझा करने का मौका मुझे मिला।

स्मार्ट क्लास से शिक्षा पद्धति में नया आयाम

हमारा यही प्रयास होता है कि हम बच्चों को अधिक से अधिक गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान कर सके। इसके लिए हमने अपने अध्ययन पद्धति को भी कुछ बदलने का प्रयास किया। आज हमारे शाला में बच्चों को स्मार्ट क्लास से अध्यापन कार्य कराया जा रहा है। स्मार्ट क्लास ने शिक्षा पद्धति को एक नया आयाम पर पहुंचाया है । यह सीखने सिखाने की पद्धति को और मजेदार और आसान बना दिया है।

समय के साथ जरुरी है कंप्यूटर शिक्षा

आज बदलती दुनिया में टेक्नोलॉजी का उपयोग करना बहुत ही आवश्यक हो गया है। इसी ध्येय को ध्यान में रखकर हमने अपने बच्चों को कंप्यूटर की शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया। प्रारंभिक ज्ञान में उन्हें कंप्यूटर के उपकरणों जैसे -सीपीयू, माउस, कीबोर्ड, आदि का परिचय करा कर उन्हे फाइल को सेव करना, खोलना, माउस चलाना आदि हम अपने स्कूल में सिखाते हैं।

शिक्षा के बिना मनुष्य एक जानवर के समान होता है ।

भ्रमण आधारित शिक्षा से बढ़ती है जिज्ञासा

मेरा प्रयास यही रहता है कि मैं बच्चों को अनुभव आधारित शिक्षा प्रदान कर सकूं इसी तारतम्य में मैंने एक प्रयास किया जिसका परिणाम बहुत अच्छा रहा मैंने बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा से अवगत कराने के लिए उन्हें नरवा, गरवा, घुरवा, बाड़ी के अंतर्गत गोठान भ्रमण कराया जहां बच्चे बहुत सारे सवालों का जवाब ढूंढ पाए जैसे कि केंचुआ खाद बनाने की प्रक्रिया क्या है? इस कार्य में कैसे लोगों को रोजगार मिल रहा है? और किस प्रकार किसान रासायनिक खाद के जगह केंचुआ खाद का प्रयोग करके अच्छी पैदावार बढ़ा रहे हैं?

खेल खेल में शिक्षा से बच्चों में उत्साह

बच्चों को अगर हम कुछ व्यवहारिक ज्ञान देना चाहते हैं तो उनको जबरन या दबा पुनसी खाने की जगह हम खेल-खेल में मनोरंजक तरीके से सिखा सकते हैं खेल खेल में सीखना और समझना बच्चों के लिए एक स्वाभाविक प्रक्रिया

है ऐसा करने से उन्हें पढ़ाई आनंदमई लगता है और उन में सहयोग मित्रता दया करूणा अनुशासन के भाव पैदा होते हैं।

शिक्षा क्षेत्र में मेरा अनुभव

एक शिक्षिका के रूप में मैं अपने कुछ स्कूली अध्यापन का अनुभव साझा करना चाहूंगी। बच्चों की पहली पाठशाला उनका घर होता है जहां उन्हें एक अच्छा स्वस्थ वातावरण चाहिए बच्चों को किसी एक चीज पर ध्यान केंद्रित करना बहुत ही बड़ी चुनौती है और यह सभी चुनौतियां मुझे भी अपने कक्षा कक्ष में सामना करना पड़ता है। इसलिए मैं नए-नए शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करती रहती हूं जिससे मुझे पता चल सके कि उनकी पसंदीदा शैली क्या है। शिक्षा में रोचकता लाने के लिए नए नवीन पद्धतियों को भी अपना ती रहती हूं ।

शासकीय स्कूलों के प्रति विश्वास के प्रयास

आज प्राथमिक एवम् माध्यमिक स्तर में निजी स्कूलों की संख्या अधिक होने तथा आधुनिक उपकरण युक्त सुविधा संपन्न, आकर्षक होने के कारण अभिभावक भी निजी स्कूलों की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। मन में यह धारणा बैठ गई है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई अच्छी नहीं होती है हमनें उस भ्रम को मिटाने का प्रयास किया है। उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आकर्षक शाला परिसर का माहौल देने एवम् विद्यार्थियों के बेहतर भविष्य के लिए हम सक्रिय हैं। हमारा विश्वास है कि आने वाले दिनों में हम गांव के पिछड़े तथा सुविधाविहीन बच्चों के भविष्य को लेकर बेहतर परिणाम देने में सफल होंगे । जिसके लिए एकमात्र उपाय है एक शिक्षक के दायित्व को समर्पण भावना के साथ निभाना।

शिक्षा रुपी हथियार का उपयोग आप दुनिया बदलने के लिए कर सकते हैं ।

बहुआयामी व्यक्तित्व से पूर्ण हैं व्याख्याता स्मृति दुबे

एक शिक्षक हमेशा कुछ न कुछ सीखते रहने वाला व्यक्तित्व का धनी होता है और यही उसकी प्रतिभा को उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसित करते रहता है। राजधानी रायपुर से संलग्न जिला दुर्ग के पाटन विकासखंड अंतर्गत स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम विद्यालय अमलेश्वर में सेवारत व्याख्याता जीव विज्ञान श्रीमती स्मृति दुबे उन्हीं शिक्षकों में शामिल हैं जो अपने आपको हर कला व प्रतिभा से अद्यतन करने में सदैव तैयार रहती हैं । यही कारण है कि विज्ञान विषय का अध्यापन हो या कला और सांस्कृतिक प्रस्तुति की बात श्रीमती दुबे अपनी भूमिका बखूबी निभाती हैं । बालिकाओं को स्वयं के सहयोग से शिक्षण सामग्री देने की बात हो या महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में प्रयास साहित्य सृजन से लेकर अनेक प्रयोग व नवाचार में समर्पित श्रीमती स्मृति दुबे अपने भीतर बहुआयामी व्यक्तित्व को सहेजकर रखती हैं ।

अन्य शिक्षकों की प्रेरणा के लिए प्रस्तुत है श्रीमती स्मृति दुबे की शिक्षा सेवा यात्रा....

श्रीमती स्मृति दुबे

परिचय :

व्याख्याता (एल.बी.) जीवविज्ञान, स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम विद्यालय अमलेश्वर पाटन जिला दुर्ग (छ.ग.)। वर्तमान में एम.एड. छात्राध्यापिका, शा. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय - रायपुर योग्यता : एम.एस.सी., बी.एड.

छात्र जीवन उपलब्धि : वि.ख. स्तरीय, जिला स्तरीय स्काऊट गाइड रैली, षष्ठम राज्य स्तरीय इंदौर रैली (गाइड) हेतु चयनित। ग्रेड प्रमाणपत्र स्काउट गाइड में राज्यपाल पुरस्कृत, विद्यालयीन नृत्य, नाटिका, लेखन,भाषण, प्रश्नमंच इत्यादि में पुरस्कृत।

शिक्षकीय जीवन प्रयास एवं उपलब्धि -

1. नवाचारी शिक्षिका के रुप में शिक्षा व कला जगत में विशेष कार्य

2. विज्ञान विषय को सरल व रोचक बनाने हेतु कला से जोड़ने का निरंतर प्रयास। विज्ञान रंगोली, विज्ञान मेहंदी, विज्ञान कविता, विज्ञान नाटिका, विज्ञान पहेली

3. Triple " S " Concept Smart Class] smart student] Smart Teacher को अपनाते हुए ICT का प्रयोग कर Simulations] smart board] smart Comic]games] videos के द्वारा गतिविधि मूलक शिक्षा से सहज व रुचिपूर्ण वातावरण का निर्माण।

4. विज्ञान को सुगम बनाने हेतु विभिन्न TLM EÛample Science Birthday Chart] working] Non&working Model] play card, क्ले आर्ट, मृत्तिका शिल्प आदि से विज्ञान की अवधारणाओं को सरल बनाने में विशेष रुचि।

5. सामुदायिक सहभागिता व छात्रों में पलायन रोकने हेतु निरंतर प्रयास।

6. ग्रीष्मकालीन सृजनात्मक शिविर में सहभागिता।

7. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्रों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करना जिससे छात्रों का व्यक्तित्व विकास हो इन विधाओं में ब्लॉक, जिला, संभाग एवम राज्य स्तर तक चयनित ।

8. बाल अपराध, तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रमों में निरंतर प्रयास तथा काउंसलिंग।

9. छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु प्रतिवर्ष विज्ञान भ्रमण सुनिश्चित करना जिसमे विक्रम साराभाई विज्ञान केंद्र, इंदिरा गांधी कृषि विवि, जवाहर लाल नेहरु Medical Collage , योगाश्रम सहज मार्ग गुलाल उद्योग, अंतराष्ट्रीय विज्ञान संस्थान लखनऊ, पुरखौती मुक्तांगन रायपुर, राम मंदिर आदि का भ्रमण करना ।

10. मातृ-पितृ विहीन छात्र-छात्रा हेतु प्रतिवर्ष स्वयं के व्यय से पुस्तक कापी सहयोग जैसे 2018 में 100 छात्रों व 10 वीं के 45 छात्रों जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर थी उन्हें प्रायोगिक पुस्तिका वितरण, शालेय कार्य (रंग-रोगन हेतु स्वयं के द्वारा 10000 सहयोग विज्ञान विषय को छात्रों से जोड़ने विज्ञान नाटिका, वैज्ञानिकों की जीवनी, वाचन,

गणित-विज्ञान, कला मेले का आयोजन करवाना।

11. आर्थिक सशक्तिकरण हेतु कौशल प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था करवाना ।

12. कैरियर मार्गदर्शक शिक्षिका हेतु छात्रों को मार्गदर्शन जिससे हर छात्र अपना रोजगार का साधन स्वावलम्बी रुप से बना सके ।

अन्य उपलब्धियां :

1. कविता लेखन में विशेष रुचि, कोरोना काल में गीत, वीडियो Documentary Film बनाकर जन जागरुकता।

2. आमचो बस्तर योजना में Background उद्घोषिका ।

3. लोकवाणी में शैक्षणिक प्रसारण में सहभागिता ।

4. 2015 में जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान ।

5. 2016, 2017 में मुख्यमंत्री व तत्कालीन विधायक श्री भूपेश बघेल जी द्वारा वि.खंड स्तरीय शिक्षक सम्मान

6. 2018 में रोटरी क्लब द्वारा अटल शिक्षक पुरस्कार।

7. इंस्पायर अवार्ड में लगातार छात्र / छात्राओं का चयन

8. तृतीय अंतराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव लखनऊ में छात्रों सहित उत्कृष्ट प्रदर्शन सहित सहभागिता ।

9. 2019 में गृहमंत्री श्री ताम्रध्वज साहू जी, अरुण वोरा जी द्वारा उत्कृष्ट शिक्षिका रुप में संभाग स्तरीय शिक्षा श्री अलंकरण से सम्मान।

10. पढ़ई तुहर दुआर में नायक के रुप में चयनित।

11. कोरोना काल में IBC&24 द्वारा गीत के वीडियो का दूरदर्शन से प्रसारण।

12. शिक्षा सचिव मान. डा. आलोक शुक्ला जी के लोकमंच में गीतों का चयन ।

13. समग्र शिक्षा द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय वेबीनार में गायन प्रस्तुति।

14. शालेय कार्यक्रम, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, के अवसर पर सांसद महोदया, मान मुख्यमंत्री जी के कार्यक्रम का सफल संचालन का दायित्व निर्वहन।

15. टाटा इंस्टीट्यूट मुंबई द्वारा ICT विशेष पाठ्यक्रम करवाने हेतु चयनित !

16. आईआईटी जम्मू में आयोजित कार्यशाला में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत।

17. 2022 में 49 वीं जवाहर लाल नेहरु गणित, विज्ञान, पर्यावरण प्रदर्शनी में भी सेमिनार, साइंस क्लब हेतु जिला स्तर तक छात्रों का चयन एवं शिक्षक सेमीनार में वि-खण्ड जिला, संभाग स्तर पर प्रथम स्थान अर्जित कर राज्य स्तर पर प्रथम स्थान पर चयनित शिक्षिका।

18. शिक्षक शिक्षा महा विद्यालय में एम. एड प्रशिक्षार्थी के रुप में सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रथम स्थान अर्जित व उत्कृष्ठ मंच संचालन ।

19. जवाहर लाल नेहरु राज्य स्तरीय शिक्षा समागम में उत्कृष्ट शिक्षिका के रुप में चयनित ।

20. रंगमंच प्रकाशन द्वारा रचनाएं प्रकाशित

21. गीता गुंजन प्रशस्ति पत्र से सम्मानित।

22. कोरोना काल में इनकी गतिविधियों को देखते हुए शिक्षा सचिव श्री आलोक शुक्ला सर जी द्वारा भी कक्षा में आकर उत्साहवर्धन किया गया था।

पढ़ाई तुहार दुवार शासन की महती योजना एवं गोधनिया योजना हेतु स्वरचित गीत तथा अभिनय के द्वारा राज्य के शिक्षकों में अपना विशेष स्थान अर्जित किया।

अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा देता एक शिक्षक

अनुराग तिवारी
व्याख्याता हिंदी - शा.उ.मा.वि.कुटरा
वि.खं. नवागढ़ (जांजगीर चाम्पा)
मो. : 8827258330

हृदय में शेर-सी हुंकार होना भी जरूरी है।
मनोबल का सदा छतनार होना भी जरूरी है।
कदम केवल बढ़ाने से कभी मंजिल नहीं मिलता
इरादों में हमेशा धार होना भी जरूरी है।।

शिक्षा वह माध्यम है जो मानव को उन्नति के मार्ग पर सतत अग्रसर करता है। शिक्षा को लोगों तक सहज रूप से पहुँचाने का कार्य शिक्षक ही करता है। भारत में चाणक्य जैसे शिक्षक ने चंद्रगुप्त जैसे निरीह बालक के हाथों मौर्य साम्राज्य की नींव सौंप दी पर स्वयं आजीवन सामान्य व्यक्ति की तरह अपना जीवन जीते रहे। जांजगीर के छोटे से ग्राम कुटरा जो विकास व शिक्षा से काफी दूर है ऐसे पिछड़े इलाके में उन्होंने 2009 से अध्यापन की शुरुआत करते हुए शिक्षक अनुराग तिवारी ने 44 बच्चों के साथ अपने शैक्षणिक जीवन की यात्रा प्रारंभ की। यहीं दो निजी विद्यालय भी शामिल थे। कक्षा दसवीं तक यहाँ की शिक्षा संचालित होती थी जिसके कारण छात्राएँ आगे की शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती थी। अनुराग जी ने लोकतंत्र के रास्ते बच्चों और ग्राम वासियों को अपने अधिकारों से लड़ने के लिए खूब प्रेरित किया। इन सबका परिणाम यह निकला कि सभी शिक्षक अनुराग जी के नेतृत्व में 2017 में छत्तीसगढ़ के तात्कालीन मुख्यमंत्री रमन सिंह जी के सामने ग्राम के 80 से अधिक बच्चे हायर सेकेंडरी उन्नयन का मांग लेकर पहुँच गए। राज्य स्तर पर ऐसा उदाहरण बहुत ही कम देखने मिलता है जहाँ बच्चों ने एक शिक्षक के नेतृत्व में अपनी लड़ाई स्वयं लड़ी हो। इसका परिणाम भी सकारात्मक आया। 2018 से कुटरा में हायर सेकेंडरी के रूप में विद्यालय का उन्नयन हुआ और आज बच्चे मुक्त वातावरण में शिक्षा की तालीम हासिल करने में जुटे हुए हैं। अनुराग जी को उनके उत्कृष्ट कार्यो के लिए कोरोनाकाल में नायक के रूप में चयन किया गया और स्वयं शिक्षा मंत्री के सामने उन्होंने अपनी ऑनलाइन शिक्षा का जीवंत प्रस्तुतीकरण दिया। अनुराग जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। 2009 में ही राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में वे एक नहीं दो-दो स्वर्ण पदक से गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा तात्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री शेखर दत्त जी के हाथों सम्मानित हो चुके हैं। उनके कार्यो को देखते हुए जिले के जिलाधीश महोदय ने अनेक बार उनको सम्मानित किया है। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें राज्य स्तर पर अक्षय अलंकरण सम्मान भी प्रदान किया जा चुका है। 2020-21 में उन्हें संभाग स्तर पर उनके महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण के तहत शिक्षा श्री सम्मान से सम्मानित भी किया गया। वर्तमान में वे बोर्ड की परीक्षा में हिंदी विषय के सरलीकरण के कार्य में लगे हुए है व सरल भाषा में अभ्यास पुस्तिका निकालनें में प्रयासरत है। अनुराग जी विद्यालय स्तर पर छतीसगढ़ी पत्रिका के प्रकाशन में जुटे हुए है जिससे लोक भाषा के सरंक्षण में सहायता मिलेगी। वास्तव में अनुराग जी शिक्षा के क्षेत्र में एक उभरते हुए नवरत्नों में से एक है जिनके अध्यापन से अनेक बच्चे उन्हें अपना आदर्श मानते हैं। उनके कार्यो को देखते हुए ही 2022 में उन्हें राज्यपाल पुरस्कार के लिए उनका नाम घोषित किया गया हैं।

अनुराग तिवारी भविष्य में अपनी संस्था को बेहतर बनाने के लिए अनेक विषयों को लेकर अपने कर्तव्य निर्वहन में समर्पित हैं।

मेहनत वह सुनहरी चाबी है जो बंद भविष्य के दरवाजे भी खोल देती है।

छत्तीसगढ़ राज्य के उत्कृष्ठ गुरूवृंद

अपने श्रम साधना से राज्य शिक्षक सम्मान पुरस्कार 2022 हेतु चयनित शिक्षक

कृष्ण पाल राणा
शिक्षक एल.बी.
जिला कांकेर

श्रीमती रूकमणी साहू
शिक्षक एल.बी.
जिला कांकेर

देवेन्द्र कुमार देवांगन
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला नारायणपुर

श्रीमती बृजेश्वरी रावटे
प्रधान पाठक
जिला नारायणपुर

महेश कुमार सेठिया
शिक्षक
जिला जगदलपुर

रमेश कुमार उपाध्याय
व्याख्याता
जिला जगदलपुर

खेमलाल सिन्हा
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला दन्तेवाड़ा

श्रीमती उषा भूआर्य
उ.श्रे. शिक्षक
जिला दन्तेवाड़ा

श्रवण कुमार यादव
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला बालोद

श्रीमती पुष्पलता साहू
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला बालोद

तुलेश्वर कुमार सेन
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला राजनांदगांव

पारूल चतुर्वेदी
शिक्षक एल.बी.
जिला राजनांदगांव

यशवंत कुमार पटेल
प्रधान पाठक
जिला दुर्ग

सुश्री के. शारदा
शिक्षक एल.बी.
जिला दुर्ग

श्रीमती यक्ष चन्द्राकर
शिक्षक
जिला कबीरधाम

शिव कुमार बंजारे
प्रधान पाठक
जिला कबीरधाम

श्रीमती ज्योति बनाफर
शिक्षक एल.बी.
जिला बेमेतरा

श्रीमती सुष्मा शुक्ला शर्मा
व्याख्याता एल.बी.
जिला बेमेतरा

अनिल कुमार प्रधान
व्याख्याता एल.बी.
जिला महासमुंद

डोलामणी साहू
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला महासमुंद

संतोष कुमार तारक
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला गरियाबंद

श्रीमती लता बेला मोंगेरे
सहा.शिक्षक एल.बी.
जिला गरियाबंद

उत्तम कुमार देवांगन
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला रायपुर

डॉ. श्रीमती गोपा शर्मा
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला रायपुर

सफलता का महल कर्म की नींव पर खड़ा होता है।

छत्तीसगढ़ राज्य के उत्कृष्ठ गुरूवृंद

अपने श्रम साधना से राज्य शिक्षक सम्मान पुरस्कार 2022 हेतु चयनित शिक्षक

राजूराम साहू
व्याख्याता एल.बी.
जिला धमतरी

दीनबंधु सिन्हा
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला धमतरी

विनोद कुमार डनसेना
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला-बलौ.-भाटा.

श्रीमती आशा साहू
प्रधान पाठक
जिला-बलौ.-भाटा.

राजेश कुमार सूर्यवंशी
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला जांजगीर चाम्पा

अनुराग तिवारी
व्याख्याता एल.बी.
जिला जांजगीर चाम्पा

भोजराम पटेल
व्याख्याता एल.बी.
जिला रायगढ़

संतोष कुमार पटेल
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला रायगढ़

सुशील कुमार पटेल
व्याख्याता एल.बी.
जिला बिलासपुर

रामधन पटेल
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला बिलासपुर

श्रीमती अदिति शर्मा
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला गौ.-पे.-मरवाही

भीष्म प्रसाद त्रिपाठी
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला गौ.-पे.-मरवाही

गोकुल प्रसाद मार्बल
सहा.शिक्षक एल.बी.
जिला कोरबा

मुकुंद केशव उपाध्याय
सहा.शिक्षक एल.बी.
जिला कोरबा

पुष्पेन्द्र कुमार कौशिक
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला सक्ती

श्रीमती मीरा देवांगन
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला सक्ती

रूद्र प्रताप सिंह राणा
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला कोरिया

डॉ. विनोद कुमार पाण्डेय
प्रभारी प्राचार्य
जिला कोरिया

श्रीमती निशा सिंह
व्याख्याता
जिला सूरजपुर

दिनेश कुमार साहू
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला सूरजपुर

श्रीमती अनामिका चक्रवर्ती
व्याख्याता
जिला सरगुजा

अंचल कुमार सिन्हा
व्याख्याता एल.बी.
जिला सरगुजा

बाबूलाल लहरे
व्याख्याता/प्र. प्राचार्य
जिला बलरामपुर

रमेश कुमार साकेत
सहा. शिक्षक एल.बी.
जिला बलरामपुर

भाग्य तभी साथ देती है जब मेहनत और लगन का सहारा हो।

स्कूल शिक्षा छायाचित्रों एवं अखबारों में

सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं विविध गतिविधियां

सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं विविध गतिविधियां

अखबारों के आईने में स्कूलों की विशेष गतिविधियां

दैनिक सारंगढ़ टाईम्स
सारंगढ़
सोमवार, 19 दिसंबर 2022
3

प्रधान पाठक होते हैं स्कूल के आधार स्तंभ: जिला शिक्षा अधिकारी बाघवा

अतिथि में परोसता प्रधान पाठकों द्वारा अपना प्रदर्शन कार्यक्रम

छात्रा नन्दिनी चौहान ने खिचरी का नाम प्रदेश में रौशन किया

रायगढ़ पत्रिका
सारंगढ़ . बरमकेला . पुसौर . खरसिया . घरघोड़ा . तमनार . लैलूंगा . धरमजयगढ़

आपके गांव गली की खबरें

इस गांव में बच्चों को पुस्तक पढ़ने बुलाया जाता है घर-घर

जारी है स्कूलों में सघन वैक्सीनेशन अभियान
तारापुर में 200 विद्यार्थियों को लगा वैक्सीन

कला उत्सव में जिले के छात्र-छात्राओं ने बिखेरे अपनी कला के जलवे

जिला स्तरीय कला उत्सव का भव्य व सफल आयोजन

अपनी शानदार प्रस्तुति से छात्र-छात्राओं ने मोह लिया मन

सारंगढ़- बिलाईगढ़ जिला
SARANGH - BILAIGARH
15 पत्रिका
रायगढ़, शनिवार, 08 जुलाई, 2023
patrika.com/raigarh-news

किया गौरवान्वित : जीतते वही हैं जो अपने हौसले बुलंद रखते हैं

कोई चैंपियन तभी बनता है जब वह मेहनत की आग में तपता है

पत्रिका स्पोर्ट्स कॉर्नर

बरमकेला विकासखंड अंतर्गत ग्राम खिचरी बरमकेला सारंगढ़ बिलाईगढ़ सहित पूरे छत्तीसगढ़ का नाम रोशन किया शासकीय प्राथमिक शाला की छात्रा नंदिनी चौहान ने जिन्होंने 7871 बच्चों के साथ वर्ड पावर चैंपियनशिप में भाग लेकर पूरे छत्तीसगढ़ में प्रथम विजेता बनी। यह प्रतियोगिता राज्य शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान द्वारा किया जाता रहा है।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

विधायक ने दी बधाई

विजेता नंदिनी को बधाई देने पहुंची विधायक।

कला उत्सव में जिले के छात्र-छात्राओं ने बिखेरे अपनी कला के जलवे

जिला स्तरीय कला उत्सव का भव्य व सफल आयोजन

अपनी शानदार प्रस्तुति से छात्र-छात्राओं ने मोह लिया मन

स्कूलों में बेहतर परिणाम के लिए पहल परीक्षा अभियान

नियमित रूप से मासिक परीक्षा लिए जाने का निर्देश

अखबारों के आईने में स्कूलों की विशेष गतिविधियां

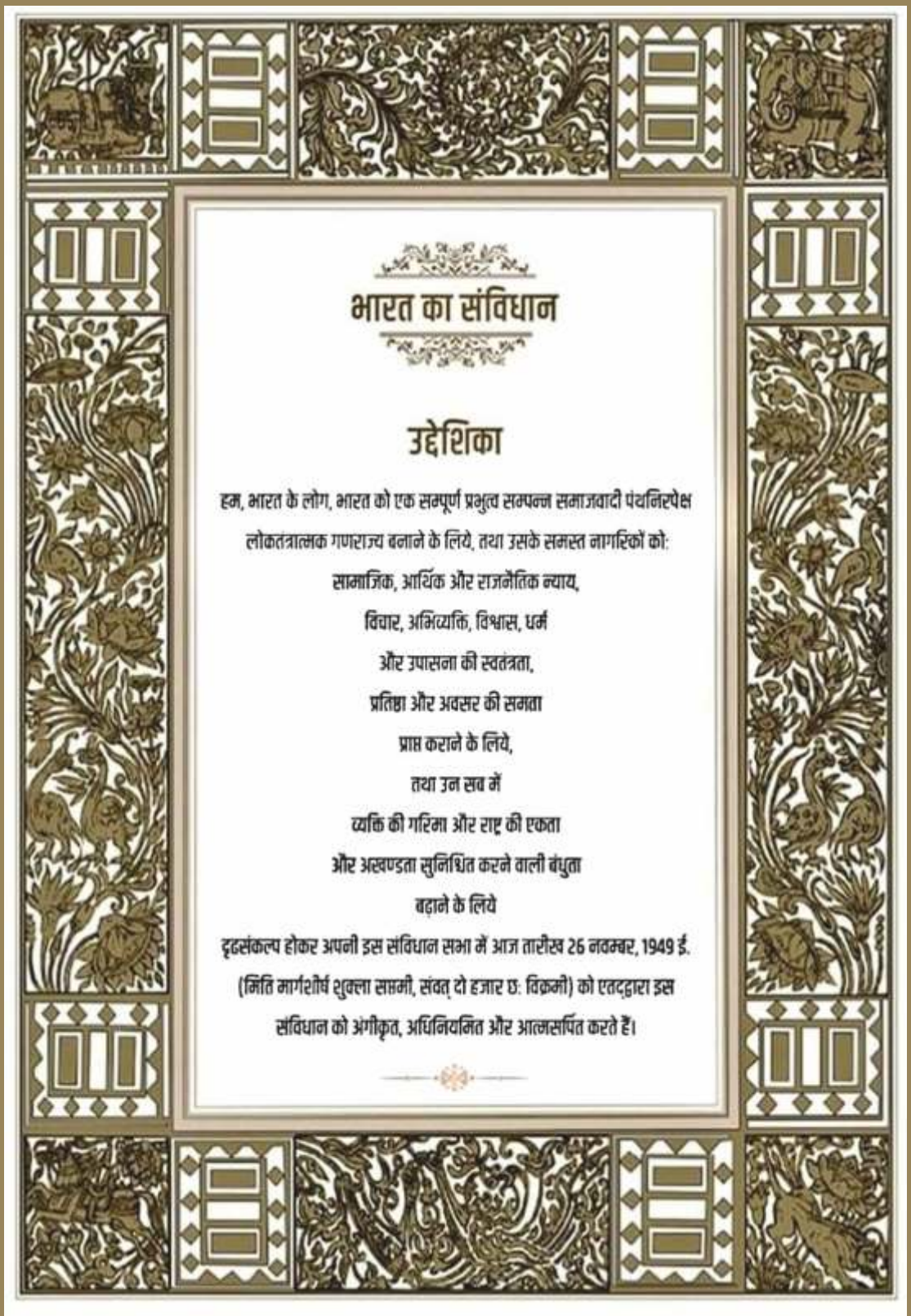

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष
लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये, तथा उसके समस्त नागरिकों को:
सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिये,
तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बंधुता
बढ़ाने के लिये
दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई.
(मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छः विक्रमी) को एतद्द्वारा इस
संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मसर्पित करते हैं।

संपादक परिचय

नाम	:	भोजराम पटेल
पदनाम	:	व्याख्याता (एल.बी). 'अर्थशास्त्र'
पिता	:	स्व. श्री हीरालाल पटेल
माता	:	स्व. श्रीमती सत्यभामा पटेल
पदस्थ संस्था	:	शा.उ.मा.वि. तारापुर, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)
संपर्क	:	94241 81019, 7000121613
योग्यता	:	एम.ए. (अर्थशास्त्र, हिन्दी), एम.कॉम., एल.एल.बी., बी.एड., राष्ट्रभाषा रत्न (वर्धा), बी.जे.एम.सी. (गु.घा.वि.वि. बिलासपुर), डिप्लोमा इन भाव संगीत (प्रयाग)
अभिरुचि	:	लेखन, चित्रकला, अध्ययन-अध्यापन, मानस गायन, कथा वाचन
उपलब्धि		■ अध्ययनकाल में राज्य स्तरीय युवा उत्सव (जबलपुर) चित्रकला विधा में मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान ■ एनएसएस राष्ट्रीय एकता शिविर आगरा (उ.प्र.) में गुरुघासीदास विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुए निबंध लेखन में द्वितीय स्थान ■ डाक विभाग द्वारा आयोजित पत्र लेखन प्रतियोगिता में रायपुर मंडल अंतर्गत क्रमशः दो वर्षो तक द्वितीय एवं प्रथम स्थान प्राप्त कर 25000 रुपये नगद पुरस्कार से सम्मानित ■ वर्ष 2019 में राज्यस्तर पर उत्कृष्ट कार्यक्रम अधिकारी (रासेयो) के रुप में सम्मानित ■ वर्ष 2021 में राज्यस्तर पर उत्कृष्ट एनएसएस इकाई (विद्यालय) का पुरस्कार एवं सम्मान ■ जिला स्तर पर स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस आयोजन में सम्मान ■ शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षा विभाग एवं विभिन्न संगठनों द्वारा सम्मान ■ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आलेख एवं रचनाएं प्रकाशित ■ आकाशवाणी अंबिकापुर से 'माटी के आखर' एवं आकाशवाणी रायगढ़ से 'साहित्य पत्रिका' कार्यक्रम में स्वरचित कविताओं का प्रसारण ■ शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय रायगढ़ द्वारा प्रकाशित स्मृति ग्रंथ एवं विविध प्रकाशनों का संपादन कार्य ■ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत बेटियों के शिक्षा एवं प्रोत्साहन हेतु 'उड़ान' पत्रिका का प्रकाशन

स्कूल और छत्तीसगढ़ के लिए लक्ष्य

- सरकारी स्कूलों के प्रति पालक व जनसमुदाय में प्रतिष्ठा के साथ विश्वास स्थापित करना।
- छत्तीसगढ़ को उत्कृष्ठ शिक्षा संस्थानों के लिए राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना।